

श्रेष्ठे तरीकत अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी हुज़ूरत अल्लामा मौलाना अब्दु बिलाल
मुहम्मद इल्यास अतार कादिरि र-जवी



Gharelu Ilaj (Hindi)

घरेलू इलाज

गैरे तबीब को इलाज में हाथ डालना हराम है
तवील अरसा जवान रहने का नुस्खा
मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज
सर में खुश्की के 3 इलाज
दाइमी नज़ले के 5 इलाज
गुर्दे की पथरी
शूगर के 8 इलाज
हैज़ की ख़राबी के नुक्सानात



مکتبۃ الدینہ

मक-त-वतुल मदीना

मिलेस्ट्रेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा अहमदआबाद-1, गुजरात, इंडिया

Ph:91-79-25391168 E-mail:maktabahind@gmail.com,

www.dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये

ان شاء الله عز وجل जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ऐ अल्लाह ! हम पर इल्म व हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ-ज़मत और बुजुर्गी वाले । (المستطرف ج ١ ص ٤٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे गुमे मदीना

व बकीअ

व मग़फ़रत



13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

(घरेलू इलाज)

येह किताब (घरेलू इलाज)

शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रत अल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ने उर्दू ज़बान में तहरीर फ़रमाई है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस किताब को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा,

अहमदआबाद-1, गुजरात • MO. 9374031409

E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुता-लआ ज़रूरतन अन्दर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़हा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इल्म में तरक्की होगी ।

[illegible]

इलाज के घरेलू नुस्खों पर मुश्तमिल म-दनी गुलदस्ता

घरेलू इलाज

मुअल्लिफ़ :

शैख़े तरीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी
हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

नाशिर :

मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

नाम किताब : घरेलू इलाज

मुअल्लिफ : शैखे त्रीकत, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी
 हजरते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास
 अत्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

सिने तबाअत : जुल हिज्जतिल हराम 1433 सि.हि.

नाशिर : मक-त-बतुल मदीना अहमदआबाद

मक-त-बतुल मदीना की मुख्तलिफ शाखें

मुम्बई : 19,20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफिस
 के सामने, मुम्बई फोन : 022-23454429

देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाजार, जामेअ मस्जिद,
 देहली फोन : 011-23284560

नागपुर : मस्जिद गरीब नवाज के सामने, सैफी नगर रोड,
 मोमिन पुरा, नाग पूर - फोन : 09373110621

अजमेर शरीफ : 19/216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाजार,
 स्टेशन रोड, अजमेर

हैदरआबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदरआबाद फोन :
 040-24572786

हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड
 हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक फोन :
 08363244860

www.dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं है।

फेहरिस

उन्वान	सफ़हा	उन्वान	सफ़हा
दुरुदे पाक की फज़ीलत	3	सुब्ब व शाम की ता'रीफ़	33
हर बीमारी की दवा है	3	जिल्दी अमराज़ के 16 इलाज	34
शिफ़ा मिलने न मिलने का राज़	4	फोड़े और जख़्म का रूहानी इलाज	34
तिब यक़ीनी नहीं ज़न्नी है	5	खाक़े मदीना और खाक़े बतन	35
सुना सुनाया इलाज ख़तरनाक साबित हो सकता है	5	ख़ारिश की बेहतरीन हिक़ायत	35
कोन सी दवा किस के लिये नुक़सान देह है	6	उम्मे अज़ार की ख़ारिश कैसे ठीक हुई !	36
क्या हर मरीज़ के लिये शहद मुफ़ीद है ?	7	महंदी से इलाज के बारे में आ'ला हज़रत का इश़ाद	37
क्या हद्दीस में बताया हुआ इलाज हर एक कर सकता है ?	8	ख़ारिश का खुश ज़ाएक़ा हल्का	37
ग़ैर तबीब को इलाज में हाथ डालना ह़राम है	9	गुस्ल के ज़रीए ख़ारिश का इलाज	38
माहिर तबीब की ता'रीफ़	10	सर्दी में हाथ पाउं फटने का इलाज	39
इल्मे तिब की दिलचस्प हिक़ायत	11	बदन के दाग़ धब्बों का इलाज	39
बीमारियों से बचने का ला जवाब नुस्खा	12	ख़ुरक ख़ारिश	40
तबील अर्सा जवान रहने का नुस्खा	12	तर ख़ारिश	41
खून टेस्ट और इस की एहतियातें	13	गर्मी दांनों का इलाज	41
अस्पताल में दाख़िल होना पड़े तो	14	सर में ख़ुरक़ी के 3 इलाज	42
सगे मदीना ने जब ओपरेशन करवाया	14	दर्द का रूहानी इलाज	42
हवा से इलाज	15	दिल की बीमारियों के 7 इलाज	43
धूप की अहमिय्यत	16	दिल की घवराहट के लिये	43
एज़ोस्ट फ़िन	16	दिल की बन्द शिरयानें खुलने की हिक़ायत	44
सूरज की किरनों का कमाल	18	दिल की शिरयानें खोलने वाला नुस्खा येह है	44
शोशे से छन कर आने वाली धूप	18	दर्द सर का इलाज	45
बच्चों की बीमारी	19	आधे सर के दर्द के 6 इलाज	47
घरों में धूप न आने का नुक़सान	19	दर्द सर के 8 इलाज	48
बच्चे में रिक़ेटस की अ़लामात	20	दाइमी नज़्ले के 5 इलाज	50
रिक़ेटस के 14 दर्दनाक नुक़सानात	20	नज़्ले का देसी इलाज	51
ओपरेशन से बच्चे आने की एक वजह	21	नज़्ला खोलने के लिये	51
बच्चों को अन्डों की ज़र्दी ख़िलाइये	21	बवासीर और इस के बा'ज़ अस्वाब	51
धूप हासिल करने का तरीक़ा	21	जैतून से बवासीर का इलाज	52
मोटापे का इलाज	22	अन्जीर से ख़ुरक बवासीर का इलाज	52
मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज	24	खुन्नी बवासीर के 4 इलाज	53
सफ़र के ज़रीए इलाज	25	गुर्दे की पथरी	53
नींद के 5 इलाज	26	गुर्दे के दर्द के दो इलाज	54
जिस को नींद न आती हो उस के लिये 8 इलाज	26	दमा और सांस फूलना	54
नींद लाने वाला मजेदार शरबत	28	मे'दे में ज़ख़्म	54
नींद लाने का सांस के ज़रीए इलाज	29	जिगर या मे'दे के तमाम अमराज़ के लिये	54
नींद ज़ियादा होती हो तो....	29	हाई ब्लड प्रेशर	55
नींद से जाग कर पढ़िये और मददे इलाही हासिल कीजिये	30	चावल ब्लड प्रेशर में मुफ़ीद है	56
क्रिक्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है	30	खांसी के 18 इलाज	56
आंखों का लजीज़ चूरन	31	हिचकी के छ इलाज	58
आंखों का मरीज़ और मछली	31	हाथ पैर सुन हो जाने के 3 इलाज	59
ऐनक के नम्बर कम करने के लिये	32	आवाज़ बैठ जाए तो तीन इलाज	59
ज़हरीले जानवरों के काटे के 10 इलाज	32	गला बैठ गया हो तो.....	60
सांप बिच्छू वग़ैरा से पनाह का आसान वज़ीफ़ा	32	मुँह के छाले के 7 इलाज	60
		केन्सर	61

उन्वान	सफ़ह	उन्वान	सफ़ह
मुंह के केन्सर का एक सबब	61	हड्डियों से इलाज के म-दनी फूल	90
बुरे खाब के 5 म-दनी इलाज	62	पेट के दर्द के 4 इलाज	91
पीलिया (यरक़ान) के दो इलाज	62	बच्चों के पेट के दर्द के 4 इलाज	92
बद ज़बानी का इलाज	63	पेट की जलन के दो इलाज	92
शुगर के 8 इलाज	63	पेचिश	92
दांतों की मजबूती का राज । हिकायत	65	पेट में कीड़े	93
दांतों और कानों की हिफ़ाज़त का आसान अमल	65	कै के फ्वाइद व नुस्खानात	93
दांत कमज़ोर होने की एक वजह	66	कै बन्द करने के 8 इलाज	94
दांतों के दर्द के दो इलाज	66	पागल पन	94
दांतों का खून बन्द करने के लिये पांच इलाज	67	पागल पन का इलाज	95
दांतों का पीलापन दूर करने के 3 इलाज	67	गन्ज के चार इलाज	95
दांतों से पीप आने के 4 इलाज	68	कमज़ोरी के 2 इलाज	96
दांतों के तमाम अमराज का इलाज	68	रात का खाना खाने का फ़ायदा	97
मिस्वाक के 14 म-दनी फूल	69	मसाने की पथरी का इलाज	97
दांतों की हिफ़ाज़त के 3 म-दनी फूल	70	तेज़ाबियत (सीने की जलन) के 7 इलाज	98
मुंह की बदबू के 4 इलाज	71	दमा के 3 इलाज	99
दांतों को बीमारी से बचाने का बेहतरीन नुस्खा	72	दमा के हम्ला करने के वक्त के 3 इलाज	99
पेशाब में जलन के 4 इलाज	72	अंगली कट जाए तो	100
पेशाब का इलाज	73	कांटा निकालने का तरीका	100
बार बार पेशाब आने के 5 इलाज	73	जल जाने के 4 इलाज	100
पेशाब रुक कर आने के 4 इलाज	74	थकन दूर करने के 4 इलाज	101
पेशाब में खून	75	बीमारियों से हिफ़ाज़त के लिये....	101
पेशाब में धात	75	हैज़ की ख़राबी के नुस्खानात	102
नींद में पेशाब निकल जाना, जिरयान, एहतिलाम	76	हैज़ की ख़राबी और डरावने खाब	102
औरत के बार बार पेशाब आने का इलाज	76	कस्रते हैज़ के दो इलाज	102
अगर मर्द को शहवत तंग करती हो तो....	76	माहवारी की ख़राबियों के तीन इलाज	103
मे'दा बीमार होने की पहचान	76	हैज़ बन्द होने के 6 इलाज	103
हाज़िमा कैसे दुरुस्त हो ?	77	हैज़ के दर्द का इलाज	104
"भूक न लगती हो तो" दो इलाज	77	बांझपन के 5 इलाज	104
बद हज़्मी के दो म-दनी इलाज	78	हामिला की तकलीफ़ के 6 इलाज	105
गैस और बद हज़्मी का देसी इलाज	79	हसीन व अक़ल मन्द ओलाद के लिये	106
हाज़िमे का मनभाता इलाज	79	अय्यामे हम्ल के लिये बेहतरीन अमल	106
हाज़िमा दार चटनी बनाने का तरीका	80	हम्ल में ताखीर	107
कुब्ज़ के तीन अस्बाब	80	अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो....	107
कुब्ज़ के 17 इलाज	81	सफ़ेद पानी	107
बेहोशी के 3 इलाज	83	हम्ल की हिफ़ाज़त के 7 इलाज	108
जोड़ों के दर्द के 6 इलाज	83	लीकोरिया का इलाज	110
हड्डी जोड़ने के लिये	85	इर्कुनिसा के दो इलाज	110
नक्सीर फूटने का इलाज	85	देसी मुर्गी के फ्वाइद	110
नाक की हड्डी बड़ी हुई हो तो....	85	घरेलू झगड़ों का इलाज	111
कान के दर्द के दो इलाज	85	कलौन्जी के 19 म-दनी फूल	111
कान में कीड़ा घुस जाए तो....	86	अन्जीर के 33 म-दनी फूल	113
बुखार के इलाज की हिकायत	86	मआखिजी व मराजअ	115
बुखार के 7 म-दनी इलाज	87	एक चुप सो ¹⁰⁰ सुख	

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



घरेलू इलाज

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

मदीने के सुल्तान, रहमते आ-लमिय्यान, सरवरे जीशान,
महबूबे रहमान صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने जन्नत निशान है : जो
मुझ पर एक दिन में एक हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक
नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले ।

(التَّزْغِيْبُ وَالتَّرْهِيْبُ ج ٢ ص ٣٢٨ حديث ٢٢)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

हर बीमारी की दवा है

اَللّٰهُ तबा-र-क व तआला ही हकीकत में शाफ़िउल
अमराज़ या'नी बीमारियों से शिफ़ा देने वाला है । सभी जानते हैं कि
बा'ज अवकात बड़े बड़े माहिर तबीब बेहतर से बेहतरीन दवाएं देते
हैं मगर “मरज़ बढ़ता गया जूं जूं दवा की” के मिस्दाक़ मरज़ में
मुसल्सल इज़ाफ़ा होता और बिल आख़िर मरीज़ दम तोड़ देता है ।
मुस्लिम शरीफ़ में है : اَللّٰهُ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हबीब عَزَّ وَجَلَّ
का फ़रमाने सिद्दहत निशान है : “हर बीमारी की दवा है, जब दवा
बीमारी तक पहुंचा दी जाती है तो اَللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ के हुक्म से मरीज़
अच्छ हो जाता है ।”

(مُسْلِم ص ١٢١٠ حديث ٢٢٠٤)

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! यकीनन बुढ़ापे और मौत के सिवा हर बीमारी का इलाज है हां येह बात अलग है कि कई अमराज का इलाज **अतिब्बा** (या'नी डोकटर्ज) अब तक दरयाफ्त नहीं कर पाए । लिहाजा येह कहने के बजाए कि “फुलां मरज का इलाज नहीं है” मुनासिब येह है कि यूं कहा जाए कि हमारे पास इस बिमारी का इलाज नहीं या डोकटर्ज अभी तक इस मरज का इलाज दरयाफ्त नहीं कर सके । बहर हाल **रब्बे जुल जलाल** جَلَّ جَلَالُهُ चाहे तो दवा शिफा का जरीआ बने वरना ऐन मुम्किन है कि वोही दवा मौत का सबब बन जाए ! और येह भी अक्सर देखा जाता है कि **माहिर डोक्टर** की तरफ से मिलने वाली दुरुस्त दवा के बा वुजूद किसी किसी मरीज को मन्फ़ी असर (REACTION) हो जाता और वोह मज़ीद शदीद बीमार, मा'जूर या फ़ौत हो जाता और फिर बा'ज लोगों की जहालत के बाइस बेचारे डोक्टर की शामत आ जाती है ।

शिफा मिलने न मिलने का राज़

मुफ़्फ़िस्सरे कुरआन, हकीमुल उम्मत, हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ मज़कूर हदीसे पाक के तहत मिरआत शर्हे मिश्कात जिल्द 6 सफ़्हा 214 पर साहिबे मिरकात رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के हवाले से नक़ल फ़रमाते हैं : “जब **अब्लूह** عَزَّ وَجَلَّ किसी बीमार की शिफ़ा नहीं चाहता तो दवा और मरज़ के दरमियान एक **फ़िरिश्ते** के ज़रीए आड़ कर देता है जिस की वजह से दवा मरज़ पर वाक़ेअ नहीं होती, जब शिफ़ा का इरादा होता है तो वोह पर्दा हटा दिया जाता है जिस से दवा मरज़ पर वाक़ेअ होती है और शिफ़ा हो जाती है।” (مرقاة المفاتيح، ج ۸ ص ۲۸۹ تحت الحديث ۴۰۱۰)

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख्त हो गया । (ابن کثیر)

तिब यक्वीनी नहीं ज़न्नी है

इस किताब में जो भी तिब्बी इलाज तज्वीज़ किये गए हैं वोह यक्वीनी नहीं हैं बल्कि सारे का सारा तिब ही ज़न्नी या'नी इस में ग़-लती का इम्कान रहता है, हर दवा इरादए इलाही عَزَّوَجَلَّ के ताबेअ है। अगर शिफ़ा मिल जाए तो दवा का कमाल नहीं, रब्बे मु-तआल عَزَّوَجَلَّ का रहमो करम और जूदो नवाल है। अगर शिफ़ा न हो या खुदा न ख़्वास्ता मज़ीद नुक़सान हो जाए तब भी اَللّٰهُ की रिज़ा पर राज़ी रहिये। अक्सर नुस्खा जात मुख़लिफ़ किताबों से और बा'ज अपने तजरिबात की रोशनी में तहरीर किये हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ग़-रज़ो ग़ायत ख़िदमते उम्मत और इस के ज़रीए हुसूले रिज़ाए रब्बुल इज़ज़त جَلَّ جَلَالُهُ है। उम्मत की ख़ैर ख़्वाही बड़े सवाब का काम है कि خَيْرُ النَّاسِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ या'नी बेहतरीन शख़्स वोह है जो लोगों को फ़ाएदा पहुंचाए। (اَلْحَامِیُّ الصّغِیْرُ ص ۲۴۶ حدیث ۴۰۴۴) اَللّٰهُ के प्यारे हबीब, हबीबे लबीब, (1) हम गुनाहों के मरीजों के तबीब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मन्फ़अत निशान है : जो कोई तुम में से अपने भाई को नफ़अ पहुंचा सकता हो तो उसे नफ़अ पहुंचाना चाहिये। (مُسْلِمُ ص ۱۲۰۷ حدیث ۲۱۹۹)

सुना सुनाया इलाज ख़तः नाक़ साबित हो सकता है

इलाज के लिये किसी एक तबीब को मुस्तक़िलन मख़सूस कर

لاینبہ _____

(1) लबीब या'नी अक़्ल मन्द, दाना

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے मुझ पर दस مرتबा सुब्द और दस مرتबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (بخاری)

लेना चाहिये, वोह आप के तब्द मिज़ाज से वाकिफ़ रहेगा तो इलाज जल्द हो सकेगा और मन्फ़ी अ-सरात के ख़तरात भी कम रहेंगे, वरना ख़्वाह म ख़्वाह जुदा जुदा तबीबों के पास जाएंगे तो वोह नए नए नुस्खे आजमाएंगे, इस तरह आप का पैसा और वक्त दोनों बरबाद होते रहेंगे । इसी तरह किताबों या लोगों के बताए हुए नुस्खों के मुताबिक़ इलाज करना भी ख़तरनाक साबित हो सकता है, कि मसल मशहूर है “नीम हकीम ख़तराए जान ।” साथों साथ येह भी ख़ास ताकीद है कि इस किताब में दिया हुवा कोई भी नुस्खा अपने तबीब से मशवरा किये बिगैर इस्ति‘माल न किया जाए अगर्चे येह नुस्खा उसी बीमारी के लिये हो जिस से आप दो चार हों । इस की बुन्यादी वजह येह है कि लोगों की तब्द कैफ़िय्यात जुदा जुदा होती हैं, एक ही दवा किसी के लिये आबे ह्यात का काम दिखाती है तो किसी के लिये मौत का पयाम लाती है । लिहाज़ा आप की जिस्मानी कैफ़िय्यात से वाकिफ़ आप का मख़्सूस तबीब ही बेहतर तै कर सकता है कि आप को कौन सा नुस्खा मुवाफ़िक़ हो सकता है और कौन सा नहीं । क्यूं कि किताब में इलाज के तरीके बयान करना और है जब कि किसी ख़ास मरीज़ का इलाज करना और ।

कौन सी दवा किस के लिये नुक्शान देह है

मैं ने एलोपेथिक अदविय्या के शो‘बे से वाबस्ता अपने मर्हूम बड़े भाईजान से सुना था कि जब पेनिसिलीन (PENICILLIN) का

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِسْلَامُ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़े
उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

इन्जेक्शन नया नया ईजाद हुवा था तो लोगों को इस से काफ़ी शिफ़ाएं मिल रही थीं, मगर बा'ज मरीज़ इसी के मन्फ़ी असर (REACTION) के सबब फ़ौत भी हो जाते थे। शूगर के मरीज़ों के लिये शकर और मीठी चीज़ों वाले, फ़िशारुद्दम (हाई ब्लड प्रेशर) वालों के लिये नमक और चिकनाहट वाले और दिल के मरीज़ों के लिये घी तेल वाली दवाओं के नुस्खे नुक्सान देह साबित हो सकते हैं। इसी तरह बाजों को खजूरों, छूहारों से मुंह में छाले पड़ जाते हैं और किसी को दूध हज़्म नहीं होता।

क्या हर मरीज़ के लिये शहद मुफ़ीद है ?

शहद ही को ले लीजिये हालां कि इस में शिफ़ा है : ताहम बा'जों के वुजूद इस को बरदाश्त नहीं कर पाते चुनान्चे मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 25 सफ़हा 88 पर रहूल मुह्तार के हवाले से नक़ल फ़रमाते हैं : “जिन मिजाजों (या'नी तबीअतों) पर सफ़ा⁽¹⁾ ग़ालिब होता है शहद उन्हें नुक्सान करता है बल्कि बारहा बीमार कर देता है ! बा आंकि (या'नी बा वुजूद इस के कि) वोह (या'नी शहद) ब नस्से कुरआनी (दलीले कुरआनी से) शिफ़ा है।” (رُدَّ الْمُحْتَار ج ١٠ ص ٥) आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ सफ़ा की वज़ाहत करते لَدِينِهِ

(1) अख़्लाते अर-बआ या'नी चार ख़िल्लें (1) सफ़ा (या'नी पित) (2) खून (3) बल्ग़म और (4) सौदा (जला हुवा सियाह बल्ग़म) इन चारों में से जिन लोगों के वुजूद में सफ़ा (पित) या'नी पीले रंग का कड़वा पानी जाइद हो उस के लिये शहद का इस्ति'माल मुज़िर् सिहहत है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोने जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (त्रउमाल)

हुए फ़रमाते हैं : “वोह ज़र्द पानी कि पित्ते में होता है जिस को सफ़रा कहते हैं।” (फ़तावा र-जविय्या, जि. 20, स. 237) मिरआत जिल्द 6, सफ़हा 218 पर दिये हुए मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ के फ़रमान का खुलासा है : “तिब में शहद को दस्त आवर (या’नी दस्त लाने वाला) माना गया है लिहाज़ा दस्तों (या’नी डाएरिया, लूज़ मोशन) में शहद इस्ति’माल न किया जाए।”

क्या हदीस में बताया हुआ इलाज हर एक कर सकता है ?

अहादीसे मुबा-रका में बयान कर्दा इलाज भी अपनी मरज़ी से नहीं करने चाहिए। बेशक सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़रामीने वाला शान हक़, हक़ और हक़ ही हैं। मगर जो इलाज नबियों के सरताज, साहिबे मे’राज صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने तज्वीज़ फ़रमाए हैं हो सकता है वोह ख़ास ख़ास मौक़ाओं मौसिमों की मुनासि-बतों और मख़्सूस लोगों के मिज़ाजों और तबीअतों के मुवाफ़िक़ हों जैसा कि हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَیْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ इस हदीसे पाक “فِي الْحَبَّةِ السَّوْدَاءِ شِفَاءٌ مِّنْ كُلِّ دَاءٍ إِلَّا السَّامَ” या’नी काला दाना (कलौंजी) में मौत के सिवा हर बीमारी से शिफ़ा है” (بخاری ج ٤ ص ١٩ حدیث ٥٦٨٧) के तहत फ़रमाते हैं : हर मरज़ (में शिफ़ा) से मुराद हर बल्ग़मी और रतूबत के अमराज़ में (शिफ़ा है) क्यूं कि कलौंजी गर्म और खुश्क होती है लिहाज़ा मरतूब (या’नी तरी वाली) और सर्दी की बीमारियों में मुफ़ीद होगी। आगे चल कर मज़ीद फ़रमाते हैं : यहां मुराद अरब

فرمانے مستفاد ﷺ: حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَعَلَيْهِ وَسَلَّمَ: मुझ पर दुरुदे पाक को कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहार्क है। (अबुल)

की आम बीमारियां हैं (مرات) या'नी कलोंजी अरब की आम बीमारियों में मुफ़ीद है। खयाल रहे कि अहादीसे शरीफ़ की दवाएं किसी हाज़िक् तबीब (या'नी माहिर तबीब) की राय से इस्ति'माल करनी चाहिए (अहले अरब को तज्वीज़ कर्दा दवाएं) सिर्फ़ (अपनी) राय से इस्ति'माल न करें कि हमारे (तर्ब्द) मिजाज अहले अरब के (तर्ब्द) मिजाज से जुदागाना हैं। (मिरआत, जि. 6, स. 216, 217)

गैरे तबीब को इलाज में हाथ डालना हराम है

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बा'ज लोग हकीकी मा'नों में बा काइदा डॉक्टर या हकीम न होने के बा वुजूद क्लीनिक या मतब खोल कर मरीजों का इलाज शुरू कर देते हैं। ऐसा करना क़ानूनन जुर्म होने के साथ साथ शरअन भी मम्मूअ है। नीज़ एक फ़न का माहिर दूसरे फ़न के तरीके इलाज के मुताबिक़ मरीजों पर तजरिबात न करे। म-सलन एलोपेथी या होमियोपेथी या बाइयोकेमी वाले डॉक्टर्ज़ बा काइदा सीखे बिगैर एक दूसरे के शो'बे की दवाओं से और यूनानी तिब (हिक्मत) के मुताबिक़ इलाज न फ़रमाएं। इसी तरह जो जो हकीम साहिबान बा काइदा डॉक्टर नहीं हैं वोह भी जड़ी बूटियों के साथ साथ डॉक्टरी दवाएं मरीजों पर न आज़माएं। मेडीकल स्टोर वाले भी अपनी अपनी समझ के मुताबिक़ मरीजों को दवाएं न दिया करें। और यूं भी बिगैर डॉक्टर की चिठ्ठी के दवा बेचना क़ानूनन जुर्म है। बा'ज लोगों की आदत होती है कि

फरमाने मुस्फा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (भरान)

जहां किसी मरीज़ से मुलाक़ात हुई झट कोई न कोई दवा या नुस्खा इर्शाद फ़रमा देते हैं ! याद रखिये ! जो माहिरे तबीब न हो उस को मरीज़ के इलाज में हाथ डालना कारे सवाब नहीं बल्कि हराम और जहन्म में ले जाने वाला काम है। अगर कोई ऐसा ग़ैरे माहिरे तबीब क्लीनिक या दवाख़ाना खोल कर मरीज़ों का इलाज करने बैठ गया हो तो फ़ौरन येह ना जाइज़ काम बन्द करना फ़र्ज़ है और तौबा के तकाज़े भी पूरे करने होंगे। हां ग़ैरे तबीब ने मतब या दवाख़ाना खोल रखा है मगर खुद इलाज नहीं करता बल्कि माहिरे तबीब बिठा रखे हैं तो कोई मुज़ा-यका नहीं।

माहिरे तबीब की ता'रीफ़

मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ ने फ़तावा र-जविय्या जिल्द 24 सफ़्हा 206 पर एक सुवाल के जवाब में जो कुछ इर्शाद फ़रमाया उस का बा'ज़ हिस्सा आसान लफ़्ज़ों में पेश करने की कोशिश करता हूं : चुनान्वे फ़रमाते हैं : ना अहल या'नी जो पूरा तबीब न हो उस को इलाज में हाथ डालना हराम है और इस का तर्क फ़र्ज़। जिस ने फ़न्ने तिब के बा काइदा उसूल और तौर तरीक़े सीखे और काफ़ी मुद्दत किसी तबीबे हाज़िक् या'नी माहिरे तबीब के मतब (दवाख़ाना) में रह कर काम किया और तजरिबा हासिल हुवा। अक्सर मरीज़ उस के हाथ पर शिफ़ा पाते हों अगर्चे मरीज़ों का कम हिस्सा शिफ़ा पाने में नाकाम भी रहता हो। बे इल्म ना तजरिबा कार या'नी नीम हकीम जो कि

तश्खीस या'नी मरज़ की शनाख़्त और इलाज में जिस तरह की फ़ाहिश ग़-लतियां या'नी बड़ी बड़ी ख़ताएं किया करते हैं इस तरह की भूलें न करता हो वोह **लाइक़ तबीब** है। ऐसे **माहिरे तबीब** से बा'ज़ अवकात तश्खीस (या'नी मरज़ की शनाख़्त) या इलाज में ग़-लती वाक़ेअ हो जाए तो उस को ना अहल नहीं कहा जाएगा कि ग़-लती से अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** मा'सूम हैं व बस। **وَاللّٰهُ تَعَالٰی اَعْلَم**।

हज़रते अली बिन हुसैन वाकिद عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَاحِد से एक नसरानी (क्रिस्चन) डॉक्टर ने कहा : तुम्हारे दीन में “इल्मे तिब” बिल्कुल नहीं लिहाज़ा तुम्हारा दीन नाकिस् है। उन्होंने जवाब दिया : हमारे प्यारे प्यारे **اللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ ने सारे का सारा इल्मे तिब कुरआने पाक की इस आधी आयत **كُتِبَ عَلَيْكُمُ الدِّينُ إِذَا قَاتَيْتُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أَنْ تَقْتُلُوا أَوْلَادَكُمْ** (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : खाओ और पियो और हृद से न बढ़ो। پاره ۸ سورة الاعراف ۳۱) में बयान फ़रमा दिया है। वोह डॉक्टर बोला : तुम्हारे नबी ने भी क्या कहीं इल्मे तिब का तज़्किरा किया है ? फ़रमाया : तबीबों के तबीब **اللّٰهُ** عَزَّ وَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने चन्द लफ़्जों में सारा तिब जम्अ फ़रमा दिया है, इर्शाद फ़रमाया है : “मे’दा सारी बीमारियों का घर और परहेज़ सारे इलाजों का सर है, बदन के हर हिस्से को उस का हक़ दो।” येह सुन कर नसरानी (क्रिस्चन) डॉक्टर हैरान हो कर कहने लगा : वाकई तुम्हारे **कुरआन** और तुम्हारे **रसूल** ने जालीनूस (जो कि दुन्या का बहुत बड़ा तबीब गुज़रा है) के लिये तिब का कोई मस्अला छोड़ा ही नहीं, सब कुछ बयान कर दिया !

(زادالمسیر لابن الجوزی ج ۳ ص ۱۵۱، 393، س. 8، پارہ : 8، تفسیر نرہمی)

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (रज़ब रज़िब)

बीमारियों से बचने का ला जवाब नुश्खा

सुन्नत के मुताबिक़ खाएं पियें और अगर नफ़्स के मुता-लबे पर जो हाथ में आया वोह खाया म-सलन पिज़्ज़े पराठे और कबाब समोसे वगैरा देर से हज़्म होने वाली गिज़ाएं मे'दे में न ठोंसते रहें और फ़्रीज़ का एक दम ठन्डा पानी और ठन्डी ठन्डी कोला बोटलें पेट में न उंडेलते रहें तो **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** आप का मे'दा दुरुस्त रहेगा और जब हाज़िमा सहीह होगा तो न कब्ज़ हो न पेट में गन्द जम्भ हो न बदन का बे जा **वज़्न** बढ़े न पेट की ख़राबियों के सबब बीमारियां जनम लें कि बकौले अतिब्बा तक़रीबन 80 फ़ीसद बीमारियां पेट की ख़राबी के बाइस पैदा होती हैं। यकीनन मे'दा बीमारियों का घर और परहेज़ दवाओं का सर है।

सो दवा की इक दवा परहेज़ है

तवील अर्से जवान रहने का नुश्खा

जो खाने पीने में एहतियात नहीं अपनाते और ख़ूब डट कर खाते हैं वोह गोया पैसे खर्च कर के बीमारियां ख़रीद फ़रमाते और उमूमन सख़्त तकालीफ़ उठाते और आखिरे कार पछताते हैं। कम खाने की हिक्मतें तो साइन्स दान भी तस्लीम करते हैं चुनान्चे एक ख़बर मुला-हज़ा हो : “जदीद तहक्कीक के मुताबिक़ अमरीका में कम खाने वाले चूहे और कुत्ते तीन गुना ज़ियादा अर्सा ज़िन्दा रहे, ज़ियादा न खाने से इन्सान जल्द बूढ़ा नहीं होता, बल्कि तवील अर्से तक जवान नज़र आता है।” (रोज़नामा आगाज़, 5 दिसम्बर 2007 ई.)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक न पड़े । (हाम)

खून टेस्ट और उस की पहचान

कोशिश कर के शूगर, लिपिड प्रोफाइल वगैरा हर तीन माह के बा'द टेस्ट करवाइये बल्कि कभी कभी मुकम्मल चेकअप भी करवा लेना चाहिये । मर्द, मर्द से और औरत, औरत ही से टेस्ट के लिये खून निकलवाए । जिस लेबोरेट्री में येह सहूलत न हो वहां से हरगिज टेस्ट मत करवाइये । इसी तरह हाथ रख कर नब्ज दिखाने, मरज की जगह पर चेक करवाने के लिये हाथ लगवाने, ब्लड प्रेशर चेक करवाने, जख्म पर पट्टी बंधवाने, इन्जेक्शन लगवाने वगैरा मुआ-मलात के लिये बिना इजाजते शर-ई मर्द व औरत का एक दूसरे के जिस्म के किसी हिस्से को छूना छुवाना जाइज नहीं । अगर येह ग़-लतियां हो चुकी हैं तो सच्ची तौबा कर के आयन्दा बचने का अह्द कीजिये । मर्द डॉक्टर से मरीजा सिर्फ इसी सूरत में रुजूअ करे कि उस की बीमारी के लिये लेडी डॉक्टर न मिल सके । इन वस्वसों पर तवज्जोह मत दीजिये कि टेस्ट में “कुछ” निकला तो टेन्शन हो जाएगा । येह टेन्शन आसान है वरना अचानक अस्पताल में जा पड़े तो आप का टेन्शन भी “टेन्शन” में आ जाएगा ! अस्पताल में दाखिल हो कर डॉक्टर के खौफ़जदा करने पर परहेज करने से बेहतर है कि आदमी घर में ही परहेज कर ले । कि सो दवा की इक दवा परहेज है । टेस्ट वगैरा के बारे में मजीद मा'लूमात के लिये फ़ैजाने सुन्नत जिल्द अब्बल सफ़हा 619 ता 628 का मुता-लआ कर लीजिये ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَاسِعُ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (त्राहमाल)

अस्पताल में दाखिल होना पड़े तो

अगर अस्पताल में दाखिल होने की नौबत आए तो घबरा न जाइये। जेहन को हाजिर रख कर पलंग की तरकीब इस तरह करवाइये कि किल्ले की तरफ पाउं न हों। तहारत, वुजू व नमाज की सहूलतें देख लीजिये, येह भी देख लीजिये कि इस्तिन्जा खाने का रुख तो ग़लत नहीं। (इस्तिन्जा करते वक़्त का'बा शरीफ़ को मुंह या पीठ करना ना जाइज व गुनाह है। येह एहतिyयात ज़रूरी है कि मुंह या पीठ 45 डिग्री के ज़ाविये के बाहर रहे) **बहारे शरीअत** (मत्बूआ मक-त-बतुल मदीना) का चौथा हिस्सा साथ ले लीजिये और उस में **मरीज की नमाज** का तरीका देख लीजिये। कोरी मिट्टी की प्लेट (इस पर कांच का ज़िर्म या'नी तह न हो) या पाक साफ़ ईंट ले लीजिये ताकि ज़रूरतन तयम्मुम किया जा सके। “मरीज” ताकीद कर दे कि औरत (नर्स या लेडी डॉक्टर) और “मरीज़ा” कह दे कि मर्द (डॉक्टर या वॉर्ड बॉय) मेरा बदन न छूए।

सगे मदीना ने जब ओपरेशन करवाया

21-12-2002 में मेरे मसाने का ओपरेशन हुवा था। इस ज़िम्न में की जाने वाली बा'ज एहतिyयातें तरगीबन अर्ज हैं। الْحَمْدُ لِلَّهِ ओपरेशन से क़ब्ल व बा'द कोई नमाज क़ज़ा न हुई, डॉक्टर ने दोपहर या शाम का वक़्त देना चाहा तो मैं ने अर्ज की, कि इशा के बा'द ओपरेशन किया जाए ताकि कोई नमाज बेहोशी की वजह से न रह जाए चुनान्चे इशा के बा'द ओपरेशन का तै हुवा, येह भी तै कर लिया कि

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा
(अबुनूर) ।

कोई नर्स ओपरेशन में हिस्सा नहीं लेगी। चूंकि बे पर्दगी होनी थी लिहाजा येह भी दर-ख्वास्त कर दी कि ओपरेशन के लिये ज़रूरी अमले के इलावा कोई मर्द भी बिला ज़रूरत क़रीब न हो। अल्ट्रा साउन्ड और चेकअप के वक़्त भी येही एह्तियातें करने की कोशिश की, कि ग़ैर ज़रूरी फ़र्द के सामने सित्र खुलने न पाए। ज़ाइद मुआविनीन को बाहर भिजवाने की दर-ख्वास्त कर दिया करता था।

हवा से इलाज

खुली फ़जा में (बेहतर फ़ज्र का वक़्त) आहिस्ता से सांस लेना शुरू कीजिये और जितना गहरा ले सकते ले लीजिये फिर जितनी देर तक अन्दर रोक सकते हैं रोक रखिये। रोज़ाना कम अज़ कम 40 बार इस तरह कीजिये। (कामकाज करते हुए या मरीज़ बिस्तर पर लैटे लैटे भी येह अमल कर सकते हैं) येह अमल मुख़लिफ़ अमराज़ बिल खुसूस ज़ीकुन्नफ़स (या'नी दमा) और फेफ़ड़ों की बीमारियों के लिये मुफ़ीद है, मरीज़ अगर सांस की येह वर्जिश करे तो **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** रू ब सिद्दहत हो और सिद्दहत मन्द करे तो अमराज़ से **ह़िफ़ाज़त हो** **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**। **सगे मदीना** **عَفَى عَنْہُ** (राक़िमुल हुरूफ़) को एक बूढ़े हकीम साहिब ने बताया था कि वोह सांस लेने के बा'द एक या दो घन्टे तक अन्दर ही रोक लेते हैं और इस दौरान अवरादो वज़ाइफ़ वग़ैरा भी पढ़ लेते हैं मगर **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ** सांस नहीं टूटता ! (येह सब मश्क़ करने से आ सकता है)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : मुझ पर कसरत से दुरूद पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूद पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़रत है। (भा. १०)

धूप की अहमियत

अल्लाह عزوجل की एक बहुत बड़ी ने'मत सूरज भी है और इस की धूप में बहुत सारे फ़वाइद रखे गए हैं। जिस्मे इन्सान की सिद्दहत के लिये धूप का अहम किरदार है। एक कहावत है : “जिस घर में सूरज दाख़िल नहीं होता उस में डॉक्टर दाख़िल होता है।” बे शुमार जरासीम ऐसे होते हैं जो धूप और ताज़ा हवा से मर जाते हैं। चुनान्चे जिन घरों की खिड़कियां महज़ गर्दों गुबार के ख़ौफ़ से हर वक़्त बन्द रखी जाती हैं, और उन में धूप और ताज़ा हवा नहीं पहुँच पाती, वहां तरह़ तरह़ के जरासीम परवरिश पाते और ख़ूब बीमारियां फैलाते हैं, लिहाज़ा रोज़ाना दिन का अक्सर वक़्त खिड़कियां खुली रखनी चाहिए। हर कमरे में आमने सामने दो खिड़कियां इस तरह़ बनवाई जाएं कि एक से ताज़ा हवा दाख़िल हो और दूसरी से बाहर निकलती रहे। सिर्फ़ एक खिड़की खुली रखना काफ़ी नहीं होता, अगर आमने सामने दो खिड़कियां न हो तो फिर खिड़की और दरवाज़े की ऐसी तरकीब हो कि एक तरफ़ से हवा दाख़िल हो और दूसरी तरफ़ से ख़ारिज।

एग्जोस्ट फ़ेन

बैतुल ख़ला और बावर्ची ख़ाना बल्कि ज़रूरतन कमरे में भी “एग्जोस्ट फ़ेन” लगवाया जाए मगर प्लास्टिक का सिर्फ़ चार इंच वाला मुन्ना सा नहीं बल्कि मुनासिब साइज़ वाला लोहे का हो, म-सलन घरेलू बावर्ची ख़ाने में 12 इंच का लोहे का एग्जोस्ट फ़ेन मुनासिब

फरमाने मुस्तफा عَلَيَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عز وجل उस के लिये एक क़ोरात अन्न लिखता और क़ोरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

है, प्लास्टिक वाला देर पा नहीं होता और हवा भी निस्वतन कम उठाता है। **एग्जोस्ट फ़ेन** वाली पूरी दीवार में बल्कि चारों तरफ़ कहीं एक मा'मूली सी दराड़ भी खुली न हो, अगर सिर्फ़ दरवाज़े से हवा खिंचने की तरकीब रही तो कमरे की हवा भी साफ़ होती रहेगी, ऐसी सूरत में ज़रूरतन दरवाज़ा पूरा या थोड़ा सा खुला रखना होगा ताकि कमरे वगैरा की हवा बाहर निकले और दरवाज़े से ताज़ा हवा दाख़िल हो सके वरना एग्जोस्ट फ़ेन ही सुस्त चलेगा ! कमरा बड़ा हो तो 18 इंच और हस्बे ज़रूरत 24 इंच का **एग्जोस्ट फ़ेन** भी लगवाया जा सकता है। अगर बड़ा होल हो तो येह सूरत भी हो सकती है कि आमने सामने दो बड़े बड़े एग्जोस्ट फ़ेन लगवाए जाएं एक हवा के रुख़ म-सलन पाकिस्तान में मगरिब (WEST) या'नी किब्ले की जानिब वाली दीवार में इस तरह भी लगाया जा सकता है कि बाहर की हवा अन्दर लाए और सामने वाला अन्दर की हवा बाहर ख़ारिज करे। इन्दज़ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) दो से जाइद **एग्जोस्ट फ़ेन** भी लगाए जा सकते हैं। जब येह फ़ेन चल रहे हों उस वक़्त अगर चारों तरफ़ खिड़कियां वगैरा बन्द रखी जाएं तो इस सूरत में **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हब्स (या'नी घुटन) भी नहीं होगा और बड़े कमरे या होल की फ़ज़ा साफ़ हवा की फ़राहमी के सबब ठन्ठी रहेगी। अगर **एग्जोस्ट फ़ेन** की गोलाई के अतराफ़ में जगह खुली रही या दराड़ और खिड़कियां बन्द न की गईं तो **एग्जोस्ट फ़ेन** चलने की सूरत में ख़ातिर ख़्वाह नतीजा हासिल नहीं होगा।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

सूरज की किरणों का कमाल

इन्सानी जिस्म की खाल में **विटामिन D** (सोई हुई हालत)

या'नी Inactive form में होता है। उस का नाम 7 डी हाइड्रो कोलेस्ट्रॉल (7-DEHYDRO.CHOLESTROL) है। जब सूरज की अल्ट्रा वॉयलेट शुआएं **ULTRA VOILET RAYS** इन्सानी जिस्म पर पड़ती हैं तो खाल में सोया हुआ **विटामिन D** बेदार हो कर मु-तहर्रिक होता और **विटामिन डी 3 (VITAMIN D3)** में तब्दील हो कर खून में शामिल हो जाता है। वहां से येह जिगर में जाता है जहां इस को मज़ीद कारआमद बनाया जाता है फिर येह गुर्दों में पहुंच कर मुकम्मल तौर पर सरगमें अमल हो जाता है। अब येह **विटामिन डी 3** आंतों से केलिसयम और फ़ोस्फ़रस (PHOSPHORUS) को खून के अन्दर ज़ब्ब करने में मदद देता बल्कि इस अमल को तेज़ तर कर देता है। और उन की जो मिक्दार हमारी ख़ूराक में शामिल हो कर हमारी आंतों में पहुंच रही है उस को ज़ाएअ नहीं होने देता बल्कि तेज़ी से उसे खून में ज़ब्ब कर लेता है। केलिसयम और फ़ोस्फ़रस हमारी हड्डियों की सहीह नश्वो नुमा के लिये बेहद ज़रूरी हैं।

शीशे से छन कर आने वाली धूप

सूरज की वोह शुआएं जो बन्द खिड़कियों के शीशे से पार हो कर इन्सानी जिस्म तक पहुंचती हैं उन में अल्ट्रा वॉयलेट शुआएं नहीं

फरमाने मुस्तफा ﷺ : على الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह عز وجل उस पर दस रहमते भेजता है। (स्म)

होती लिहाजा उन में येह खासियत भी नहीं होती कि सोए हुए विटामिन डी को बेदार कर के कार आमद बना सकें।

बच्चों की बीमारी

जिस तरह उमूमन पौदों की नश्वो नूमा के लिये धूप का अहम किरदार है इसी तरह बच्चा हो या जवान, उधेड़ उम्र का हो या बूढ़ा हर ब-दने इन्सानी के लिये ताजा हवा और धूप मुफ़ीद है। 6 माह से 2 साल की उम्र के दरमियान बच्चों की हड्डियां तेजी से बढ़ती हैं। अगर हड्डियों की सहीह नश्वो नूमा न हो तो उन में “रिकेट्स” नामी बीमारी पैदा होती है। हड्डियों की सहीह नश्वो नूमा के लिये विटामिन डी 3 बहुत ज़रूरी होता है अगर इस में कमी वाक़ेअ हो जाए तो हड्डियों में मुख़्तलिफ़ नक़ाइस (ख़ामियां) रह जाते हैं जो आगे चल कर परेशानी का बाइस बनते हैं।

घरों में धूप न आने का नुक़शान

आज कल “रिकेट्स” नामी बीमारी बच्चों में आम होती जा रही है, इस की वुजूहात में से ख़ूराक में विटामिन डी 3 (VITAMIN D 3) की कमी भी शामिल है, मगर सब से बड़ी वजह तंग महल्लों और छोटी छोटी गलियों के अन्दर बड़ी बड़ी इमारतों के बन्द घरों में रिहाइश है। क्यूं कि ऐसी जगहों पर सूरज की अल्ट्रा वॉयलेट शुआएं ULTRA VOILET RAYS सहीह तौर पर इन्सानी

فرمانے مستفاد ﷺ : جی شخص مریض پر دُرُودِ پاک پढ़نا بھूल गया وہ جَنَنَت کا راسِتا
بھूल गया ! (طریق)

जिस्म तक नहीं पहुंच पाती और नती-जतन बच्चा RICKETS (रिकेट्स) का शिकार हो सकता है, अगर ऐसा हुवा तो उस की हड्डियों में एक या एक से ज़ियादा मुख़लिफ़ नौइय्यत के नक्स (ऐब) पैदा हो जाएंगे ।

बच्चे में रिकेट्स की अलामात

﴿1﴾ बार बार नुमूनिया हो जाना ﴿2﴾ आए दिन दस्त लग जाना ﴿3﴾ चिड़चिड़ा पन और ﴿4﴾ खून की कमी ।

रिकेट्स के 14 दर्दनाक नुक्सानात

﴿1﴾ सामने से पेशानी की हड्डी बढ़ जाती है ﴿2﴾ सर की हड्डी अन्दर से खोखली हो जाती है कि अगर हाथ से दबाएं तो गेंद की तरह दबती है ﴿3﴾ सर बड़ा और चौकोर सा हो जाता है ﴿4﴾ दांत देर से निकलते हैं ﴿5﴾ मसूड़े खराब हो जाते हैं ﴿6﴾ पस्त्रियों और सीने की हड्डी के जोड़ गोल गोल उभर कर नुमायां हो जाते हैं ﴿7﴾ कबूतर के सीने की तरह सामने से सीना उभर जाता है ﴿8﴾ कुब निकल आता या'नी पीठ टेढ़ी हो जाती है ﴿9﴾ रीढ़ की हड्डी बल खाती हुई निकलती है जिस से पूरा बदन टेढ़ा हो जाता है ﴿10﴾ सीने की हड्डी बीच में से मुड़ कर सीने को सामने की तरफ़ उभार देती है ﴿11﴾ कलाई की हड्डी चौड़ी हो जाती है ﴿12﴾ टख़नों की हड्डी अन्दर की तरफ़ मुड़ जाती है ﴿13﴾ टांग की बड़ी हड्डी गोलाई में मुड़ जाती है ﴿14﴾ घुटने अन्दर की तरफ़ बढ़ने लगते हैं ।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख़्त हो गया । (ابن کثیر)

ओपरेशन से बच्चे आने की एक वजह

कूल्हे की हड्डी उमूमन फैली हुई और चौड़ी होती है। मर्दों के मुकाबले में औरतों में कुदरती तौर पर ये चीज़ ज़ियादा होती है ताकि आगे चल कर बच्चे की विलादत में सहूलत हो। **विटामिन D3** की कमी की वजह से कूल्हे की हड्डी की सहीह नश्वो नुमा नहीं होती और येह बजाए फैलने के सुकड़ जाती है जिस से पैदाइश का रास्ता तंग हो जाता है और ख़वातीन को बच्चों की विलादत के वक़्त तरह तरह की परेशानियों का सामना होता है और आख़िरे कार ओपरेशन करना पड़ता है। आज कल बच्चे की विलादत के वक़्त जो ब कसरत ओपरेशन हो रहे हैं उन की एक बड़ी वजह इन के कूल्हे की हड्डी का सुकड़ा हुवा होना है।

बच्चों को अण्डों की ज़र्दी ख़िलाइये

बच्चों को आयन्दा की मुसीबतों से बचाने के लिये ज़रूरी है कि एक या दो माह की उम्र ही से मुनासिब धूप मुहय्या की जाए नीज़ 4 माह की उम्र से ग़िज़ा में अण्डे की ज़र्दी भी इस्ति'माल करवाई जाए।

धूप हासिल करने का तरीक़ा

तुलूए आफ़ताब के फ़ौरन बा'द और गुरुबे आफ़ताब के आख़िरी लम्हात में कम अज़ कम बारह बारह मिनट के लिये (मौसिम के लिहाज़ से वक़्त में कमी बेशी कर के) बच्चे को ऐसी जगह लिटाइये या बिठाइये जहां मुकम्मल धूप आती हो, हर उम्र में धूप खाना ज़रूरी है लिहाज़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्द और दस मरतबा शाम दुरुद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (रिवायत)

इन्हीं अवक़ात में हर एक को इतनी देर तक मुकम्मल धूप में रहना चाहिये कि खाल गर्म हो जाए। बयान कर्दा अवक़ात बेहतरीन हैं, अगर न बन पड़े तो दिन भर में किसी भी वक़्त में कुछ न कुछ धूप हासिल कर लेनी चाहिये। अगर छाउं में हों और धूप आनी शुरू हो जाए तो कुछ धूप और कुछ छाउं में मत बैठिये बल्कि वहां से हट जाइये या मुकम्मल धूप में आ जाइये या मुकम्मल छाउं में। हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, सरकारे मदीनाए मुनव्वरह, सरदार मक्काए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने शफ़क़त निशान है : तुम में अगर कोई साए में बैठा हो और उस पर से साया हट जाए उस का कुछ हिस्सा धूप में और कुछ साए में हो जाए तो उस को चाहिये कि वहां से उठ खड़ा हो। (सुनू अबी दावूद, ज ४, व ३३८, हदीथ ४८२१)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنّान फ़रमाते हैं : या तो साए में ही चला जावे या बिल्कुल धूप में हो जावे क्यूं कि साया ठन्डा है और धूप गर्म और बयक वक़्त एक जिस्म पर ठन्डक व गरमी लेना सिह्हत के लिये मुज़िर (नुक़सान देह) है इस लिये ऐसा न करे नीज़ येह शैतानी निशस्त है जिस से शैतान खुश होता है लिहाज़ा इस तश्बीह से बचना ज़रूरी है।

(मिरआत, जि. 6, स. 387)

मोटापे का इलाज

वज़न कम करने के लिये सब्ज़ियां (आलू, वगैरा बादी अश्या के इलावा) बेहतरीन ने'मत हैं। मगर सिर्फ़ पानी में उबली हुई हों या

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهَيْسَةُ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (مُعْذَرَاتُ)

एक फर्द के लिये सिर्फ चाय की एक चम्मच कोर्न ओइल डाल कर पकाई गई हों। मिर्च मसा-लहा और हल्दी डालने में हरज नहीं। रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) हल्दी सभी के पेट में जानी चाहिये। **कैन्सर** से हिफ़ाज़त होगी। हर बार के खाने में मज़कूरा तरीक़े पर बनी हुई सब्ज़ी की कम अज़ कम एक पूरी रिकाबी खा लीजिये। अगर रोटी और चावल वगैरा खाना ज़रूरी हो तो सिर्फ़ आधी चपाती, पानी में उबले हुए चावल सिर्फ़ आधा कप, छोटी सी एक बोटी, आम खाना ज़रूरी हो तो दिन भर में सिर्फ़ आधा आम, चाय पीना चाहें तो "स्कीमड मिल्क" की फीकी ही पी लीजिये अगर बिगैर मिठास के न पी सकें तो डॉक्टर के मश्वरे से चाय के कप में **Sweetener** की एक गोली डाल लीजिये (कहा जाता है कि बा'ज **Sweetener** मुज़िर्रे सिहहत होती हैं)। अगर शूगर का मरज़ न हो तो मुम्किना सूरत में चीनी की जगह चाय में शहद या गुड़ डाल लीजिये। (दिन रात में सिर्फ़ दो बार दरमियाना कप वोह भी आधा आधा पियें) सलाद, ककड़ी, खीरा वगैरा (बिगैर छिल्का उतारे) भी ब कसरत इस्ति'माल कीजिये। हर तरह के खाने और सालन वगैरा में कोर्न ओइल **CORN OIL** वोह भी कम से कम मिक्दार में इस्ति'माल कीजिये। खाने से क़ब्ल सालन के पियाले के ऊपर से चम्मच के ज़रीए घी या तेल इस तरह से निकाल दीजिये कि एक क़तरा भी नज़र न आए। अगर मसा-लहा गाढ़ा हो तो बरतन को किसी चीज़ की मदद से तिरछा खड़ा कर दीजिये और सालन ऊपरी हिस्से की जानिब कर लीजिये इस तरह ज़ा़द तेल नीचे की तरफ़ इकट्ठा

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोने जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुरआन)

हो जाएगा। उस को निकाल दीजिये। मगर बे इजाज़ते शर-ई येह तेल या घी फेंक देना मम्नूअ है। दोबारा पकाने में इस्ति'माल फ़रमा लीजिये। चावल, ऊंट, गाय और बकरे के गोश्त, घी, मखखन, दूध की मलाई, अन्डे की ज़र्दी, केक पेस्ट्रियों, मीठे कोको चोकलेट और टोफ़ियों निम्को वालों की तली हुई चीज़ों, **CREAM** लगी हुई या मीठी गिज़ाओं, मिठाइयों, आइस्क्रीम, ठन्डे मशरूबात, पकोड़े, कबाब, समोसे, पिज़्जे पराठे वगैरा हर वोह चीज़ जिस में मेदा, चिकनाहट या मिठास शामिल हो उन से बचिये। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ वज़्न में कमी आएगी। और आप اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ खुश अन्दाम (**SMART**) हो जाएंगे। डॉक्टरों के पास खाने का “चार्ट” मिलता है उन के ज़रीए भी वज़्न का तनासुब बर क़रार रखा जा सकता है। अपने डॉक्टर से मशवरा कर के वज़्न कम करना ज़ियादा मुनासिब है। हत्तल इम्कान एक ही डॉक्टर से इलाज का सिल्लिसला रखना चाहिये। इस से फ़ाएदा येह होगा कि वोह डॉक्टर आप की जिस्मानी कौफ़िय्यत से वाकिफ़ हो जाएगा लिहाज़ा इलाज बेहतर तरीक़े पर हो सकेगा। वरना डॉक्टर बदलते रहेंगे तो हर नया डॉक्टर “एक इकाई” से इलाज शुरूअ करेगा और आप हर एक का तख़्तए मश्क़ बनते रहेंगे।

मोटापे का सब से बेहतरीन इलाज

सब से बेहतरीन इलाज **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब, तबीबों के तबीब صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का तज्वीज़ फ़रमूदा है और वोह येह कि “भूक के तीन हिस्से कर लिये जाएं एक हिस्सा

फ़रमाने मुस्तफ़ा : صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत (अबुसल्लि)

गिज़ा, एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा और सांस ।”
(مَجْمَعُ الرِّوَا ئِد ج ٥ ص ١٥٩ حدیث ٨٣٤٦)
लिया जाए तो إِنَّ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ न कभी बदन मोटा होगा न कभी गेस,
बादी, पेट में गड़बड़, कब्ज़ वगैरा का अरिज़ा । मगर हाए ! लज़्ज़त
खोर नफ़्स की हीला बाज़ियां :

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

सफ़र के ज़रीए इलाज

اَبْلَاحُ के महबूब, दानाए गुयूब, मुनज़्ज़हुन अनिल

उयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने सिह्हत निशान है : سَافِرُوا تَصِحُّوْا

सफ़र करो, तन्दुरुस्त हो जाओगे । (مسند امام احمد ج ٣ ص ٣٢٢ حدیث ٨٩٥٤)

सफ़र के ज़रीए आबो हवा तब्दील होती है और तजरिबात बढ़ते हैं ।

दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबियत के म-दनी क़ाफ़िलों में

सवाब की नियत से सफ़र करते रहा कीजिये, إِنَّ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ सवाब

भी मिलेगा और ज़िम्नन सिह्हत में भी ब-र-कत हासिल होगी अगर

फ़क़त हुसूले सिह्हत की नियत की तो सवाबे आख़िरत नहीं मिलेगा ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी क़ाफ़िलों में सफ़र करने वालों

की बीमारियों से सिह्हत याबियों की म-दनी बहारें सुनने को मिलती

रहती हैं । मकूला है सफ़र वसीलए ज़फ़र (या'नी सफ़र काम्याबी का

ज़रीआ है)

फरमाने मुस्फा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुंचता है। (भरान)

“अजमेर” के पांच हुरूफ की निश्चत से नींद के 5 इलाज

﴿1﴾ नींद से जेहन पुर सुकून, मे'दा दुरुस्त और खाना हज्म होता है
 है ﴿2﴾ रात का सोना सिहहत के लिये मुफ़ीद और रात भर जागना मुज़िर है। रात जागते रहने से बदन में खुश्की, बद हज्मी, दिमाग की कमजोरी और अक्ल में कमी आती और बा'ज अवकात आदमी पागल हो जाता है
 है ﴿3﴾ बेशक बा'ज औलियाउल्लाह رَحِمَهُمُ اللَّهُ تَعَالَى का रात भर इबादत करना साबित है। लेकिन उन्हें रूहानी कुव्वत हासिल हो जाती है, जैसा कि सरकारे गौसे पाक (بَهجة الاسرار ص ۱۱۸) से 40 दिन तक के फ़क़े भी मन्कूल है।
 हालां कि आम आदमी के लिये येह ना मुम्किन है
 है ﴿4﴾ बू अली सीना का कौल है : दिन को ज़ियादा सोना सोए हुए अमराज को जगाता, तिल्ली को सख़्त करता, और रंग को ख़राब करता है
 है ﴿5﴾ रात इबादत करने वालों के लिये दोपहर के खाने के बा'द कैलूला या'नी कुछ देर आराम करना सुन्नत और मुफ़ीदे सिहहत है। इस से दिमाग़ क़वी और अक्ल तेज़ होती है।

“आठ ग़लबतें” के आठ हुरूफ की निश्चत से जिश् के नींद न आती हो उस के लिये 8 इलाज

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नींद आवर गोलियों से हत्तल इम्कान दूर रहिये और इस की आदत तो हरगिज़ मत बनाइये क्यूं कि शुरूअ में अगर्चे इन से नींद आ जाती है मगर फिर रफ़ता रफ़ता इन

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

गोलियों की मिक्दार बढ़ानी पड़ती है और बिल आख़िर नौबत यहां तक पहुंचती है कि चाहे कितनी ही गोलियां खा ली जाएं नींद नहीं आती ! और येह गोलियां मुज़िरे सिद्दहत भी होती हैं लिहाज़ा नीचे दिये हुए इलाज फ़रमाइये। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ करम फ़रमाएगा।

नींद न आती हो तो सोने से कब्ल

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا ⑤ (प १२२ अ ५)
पढ़ कर दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिए إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ नींद आ जाएगी।

اللّٰهُمَّ بِأَسْبِكَ أَمُوتُ وَأَحْيَا : रात को सोने से पहले येह दुआ पढ़िये :
तरजमा : या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मैं तेरे नाम से मरता और जीता हूं।

﴿2﴾ नींद न आती हो तो पारह 30 (صَحِيحُ الْبُخَارِيِّ ج ४ ص १९२ - حَدِيثُ ६३१४)

सू-रतुन्नबा की आयत नम्बर 9 وَجَعَلْنَا لَكُمْ سُبَاتًا (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारी नींद को आराम किया) बार बार पढ़े

﴿3﴾ नींद न आती हो तो सोने से जल्दी नींद आ जाएगी إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ कब्ल अव्वल आख़िर दुरूदे पाक के साथ कम अज़ कम तीन बार येह पढ़िये : “يَا'नी कोई मा'बूद नहीं मगर वोह (إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَقُّ الْمُبِينُ : (عَزَّوَجَلَّ **अल्लाह**) सब से सच्चा और ज़ाहिर”

﴿4﴾ नींद न आती हो तो सोते वक़्त येह दुआ पढ़िये :

اللّٰهُمَّ غَارَتِ النُّجُومُ وَهَدَّاتِ الْعُيُونُ وَأَنْتَ حَيٌّ قَيُّومٌ لَا تَأْخُذُكَ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ يَا حَيُّ يَا قَيُّومُ اهْدِنِي لَيْلِي وَإِمَامِي عَيْنِي - (عمل اليوم والليلة لابن السنّي ص २२२ رقم ७६९)

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس کے پاس میرا جिकر ہو اور وہ ہر روز دُروہ شریف نہ پکھے تو وہ لوگوں میں سے کمزور ترین شخص ہے۔ (ترمذی)

तरजमा : “या **अल्लाह** عزوجل तारे छुप गए और आंखें सोने लगीं और तू हमेशा ज़िन्दा और दूसरों को काइम रखने वाला है तुझ को न ऊंध आए न नींद ऐ हमेशा ज़िन्दा और दूसरों को काइम करने वाले ! मेरी रात को सुकून बख़्श और मेरी आंखों को नींद अता फ़रमा ।”

ان شاء الله इस की ब-र-कत से नींद आ जाएगी ﴿5﴾ बे ख़्वाबी (या'नी नींद न आना) बहुत पुराना मरज़ है ज़मानए क़दीम में इस का इलाज आम तौर पर प्याज़ से किया जाता था । जिस को नींद न आती हो वोह या तो कच्ची प्याज़ चबा कर खा ले या उबली हुई प्याज़ गर्म दूध में डाल कर इस्ति'माल करे ان شاء الله عزوجل ख़ूब नींद आएगी (मुंह में बदबू होने की सूरत में मस्जिद का दाख़िला हराम है लिहाज़ा नमाज़े फ़ज़्र के लिये जाने से क़ब्ल ख़ूब अच्छी तरह मुंह साफ़ करे यहां तक कि बदबू ख़त्म हो जाए)

नींद लाने वाला मजेदार शरबत

﴿6﴾ आध किलो पानी में छ माशा (या'नी तक्रीबन 6 ग्राम) सोंफ़ डाल कर पानी को चूल्हे पर जोश दीजिये जब दो छटांक (या'नी तक्रीबन 125 ग्राम) पानी रह जाए तो उस में गाय का दूध 250 ग्राम और एक तोला (या'नी तक्रीबन 12 ग्राम) गाय का घी और हस्बे ज़रूरत चीनी मिला कर इस्ति'माल कीजिये ان شاء الله عزوجل नींद आने लगेगी ﴿7﴾ एक दरमियाना प्याज़ काट कर दही (मुनासिब मिक्दार) में मिला कर सोने से पहले खा लें । ان شاء الله عزوجل नींद आ जाएगी ।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स को नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े । (८५)

नींद लाने का सांस के जरीए इलाज

﴿8﴾ चटाई, बिछौने या पलंग पर चित लैट जाइये, दोनों हाथ सीधे कर के पहलूओं के बराबर कर लीजिये, अब 6 सेकन्ड तक आहिस्ता आहिस्ता गहरा सांस लीजिये, तीन सेकन्ड तक हवा को अन्दर रोक लीजिये और फिर 6 सेकन्ड में आहिस्ता आहिस्ता मुंह से खारिज कीजिये, इस के बा'द उल्टी करवट लैट कर चन्द बार येह अमल दोहराइये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** नींद आ जाएगी ।

नींद ज़ियादा होती हो तो.....

﴿1﴾ **إِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى اللَّيْلُ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ۝۵۰** اُدْعُوا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَخُفْيَةً ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ۝۵۱ وَلَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوهُ خَوْفًا وَطَمَعًا ۚ إِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِينَ ۝۵۲ (पार 8 سورة الاعراف آیت 54 تا 56)

पढ़ कर येह दुआ मांगिये, या **اَللّٰهُمَّ** मीठे मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का वासिता मेरी ग़ैर ज़रूरी नींद दूर फ़रमा दे ।
(अव्वल आखिर एक बार दुरूद शरीफ़) **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा हासिल होगा ।

﴿2﴾ रोज़ाना सुबह नहार मुंह नीम गर्म पानी के गिलास में एक चम्मच

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरूदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (ترمذی)

शहद घोल कर उस में आधा लीमूँ निचोड़ कर पी लीजिये। येह लजीज़ शरबत पीने की मुस्तफ़िल आदत बनाएं तब भी हरज नहीं बल्कि फ़ाएदा होगा। जब दौराने मुता-लआ वगैरा नींद चढ़े तो हो सके तो वुजू कर लीजिये वरना मुंह धो लीजिये, कोई चीज़ चबाइये, कुछ देर चहल कदमी कर लीजिए या कुछ देर खड़े हो जाइये इस तरह की तराकीब से **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** वक्ती तौर पर काम चल जाएगा।

नींद से जाग कर पढ़िये और मददे इलाही हाशिल कीजिये

20 बार जो नींद से बेदार हो कर पढ़ लिया करेगा

उस के हर काम में मददे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** शामिल रहेगी।

किब्ला रुख़ बैठने से बीनाई तेज़ होती है

हज़रते सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْفَرِی** फ़रमाते हैं :

चार चीज़ें आंखों की (बीनाई की) तक्विyyत का बाइस हैं : ﴿1﴾

किब्ला रुख़ बैठना ﴿2﴾ सोते वक़्त सुरमा लगाना ﴿3﴾ सब्जे की तरफ़

नज़र करना और ﴿4﴾ लिबास को पाक व साफ़ रखना।

سُبْحَنَ اللّٰهِ عَزَّوَجَلَّ ! सय्यिदुना इमाम शाफ़ेई (احیاء العلوم، ج ۲، ص ۲۷)

के इर्शाद के मुताबिक़ सब्जे का नज़़ारा भी निगाहों की

तेज़ी का बाइस है। सब्ज रंग की तो क्या ही बात है! एक रिवायत के

मुताबिक़ सब्ज सब्ज गुम्बद वाले आका मक्की म-दनी मुस्तफ़ा

صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को तमाम रंगों में सब्ज रंग सब से प्यारा था।

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा (अबु दौद)

आंखों का लजीज़ चूरन

सोंफ़, मिस्री और ईरानी बादाम तीनों हम वज़न ले कर अच्छी तरह बारीक पीस कर यकजान (MIX) कर के बड़े मुंह की बोतल में महफूज़ कर लीजिये और बिला नागा रोज़ाना नहार मुंह एक चाय की चम्मच बिगैर पानी के खा लीजिये (एक चम्मच से कुछ ज़ियादा खाने में भी हरज नहीं) तवील अर्सा इस्ति'माल करने से **आंखों की बीनाई को फ़ाएदा होगा। तजरिबा :** एक म-दनी मुन्नी की आंखों में पानी आता था, बिल आखिर आंखों के डॉक्टर से वक़्त ले लिया था, मैं ने येही **लजीज़ चूरन** पेश किया, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** एक आध बार खाने ही से उस की बीमारी जाती रही और डॉक्टर के पास जाने की नौबत ही न आई। जिन को तकलीफ़ न हो वोह भी मुस्तक़िल इस्ति'माल कर सकते हैं।

आंखों का मरीज़ औऱ मछली

आंखों के मरीज़ों, ज़रूरी मिक्दार से ज़ाइद कोलेस्ट्रॉल वालों के लिये भी **मछली** खाना मुफ़ीद है। मगर तेल में तली हुई दीगर ग़िज़ाओं की तरह मछली भी मुज़िरे सिहहत है। कोएले पर सेंकी हुई मछली बहुत मुफ़ीद है कहते हैं कि मे'दे में ऐसी मछली की मौजू-दगी में अगर ब्लड कोलेस्ट्रॉल का मरीज़ खून टेस्ट करवाएगा तो खून में कोलेस्ट्रॉल की मिक्दार में कमी ज़ाहिर होगी।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझे पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझे पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (बुख़ारी)

ऐनक के नम्बर कम करने के लिये

गाजर के मौसिम में रोज़ाना एक गाजर खा लिया करें। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हाफ़िज़ा क़वी और बीनाई तेज़ होगी हत्ता कि चश्मा है तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** नम्बर कम होना शुरू हो जाएंगे। (गाजर धो लीजिये और छीले बिगैर खा लीजिये कि छिलने से ऊपरी तह के ऐन नीचे मौजूद विटामिन C जाएँ हो सकता है, वोह सब्ज़ियां और फल और जिन के छिल्के खाए जा सकते हों वोह छिल्कों समेत ही खाने ज़ियादा मुफ़ीद हैं। म-सलन कद्दू शरीफ़, आलू, टमाटर, खीरा, तूरी, टिन्डे, पेठा, शकर क़न्दी, सेब, चीकू, आडू, वगैरा के छिल्के और अनार व मौसम्बी की अन्दरूनी झल्लियां वगैरा खा लीजिये)

“या इमाम हुसैन” के दस हुस्न की निश्चत से

जहरीले जानवरों के काटे के 10 इलाज

सांप बिच्छू वगैरा से पनाह का आशान वजीफ़ा

﴿1﴾ बारगाहे रिसालत में एक शख्स ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की : या रसूलल्लाह ﷺ कल शाम मुझे एक बिच्छू ने डंक मार दिया। फ़रमाया : काश ! अगर तुम ने शाम को **أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللَّهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ** (या'नी मैं अल्लाह के कामिल कलिमात के साथ मख़्लूक के शर से पनाह लेता हूँ) कह लिया होता तो तुम्हें कोई चीज़ तकलीफ़ न पहुंचाती। (मुसलिम ص १६०३ حديث २७०९) “श-ज-रए कादिरिय्या र-जविय्या अत्तारिय्या” सफ़हा 11 पर है : रोज़ाना सुब्ह

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عزّ وجلّ उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبارة راق)

व शाम तीन तीन बार मज़कूरा दुआ पढ़ लेने से सांप बिच्छू वगैरा मूज़िय्यात (या'नी ईजा देने वाले जानवरों) से पनाह मिलती है।

सुब्ह व शाम की ता'रीफ़ : आधी रात के बा'द से ले कर सूरज की पहली किरन चमकने तक सुब्ह है और इब्तिदाए वक्ते ज़ोहर से गुरुबे आफ़ताब तक शाम कहलाती है। (अल वज़ी-फ़तुल करीमा, स. 12)

﴿2﴾ सांप, बिच्छू, शहद की मख़बी या कोई सा भी ज़हरीला जानवर काट ले, पानी में नमक मिला कर डंक की जगह पर लगाइये बल्कि मुम्किन हो तो वोह जगह उस नमक वाले पानी में डबो दीजिये और मुअव्व-ज़तैन या'नी सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास पढ़ कर दम कीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़हर का असर ज़ाइल हो जाएगा।

﴿3﴾ अगर शहद की मख़बी वगैरा काट ले तो फ़ौरन उस जगह अपना या किसी मुसलमान का थूक लगा लीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** राहत मिलेगी।

﴿4﴾ अगर आप ऐसी जगह रहते हैं जहां शहद की मख़बियां या बिच्छू होते हैं तो प्याज़ का रस 3 तोला (तक़रीबन 35 ग्राम), अनबुझा चूना 4 ग्राम, नौशादर एक तोला (तक़रीबन 12 ग्राम) बाहम मिला कर निथार लीजिये। और महफूज़ कर लीजिये और ब वक्ते ज़रूरत बिच्छू और शहद की मख़बी के काटने के मक़ाम पर लगाइये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा होगा।

﴿5﴾ अगर किसी को सांप डस ले तो प्याज़ का रस और सरसों का तेल हम वज़न मिला कर मरज़ की शिद्दत के मुताबिक़ आध आध घन्टा

फरमाने मुस्तफा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिगफार करते रहेंगे। (طبرانی)

या एक एक घन्टा बा'द 4 तोला (तक्रीबन 50 ग्राम) की मिक्दार में पिलाइये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आराम आ जाएगा।

﴿6﴾ अगर **शहद की मखखी** काट ले तो उस पर **प्याज़** का टुकड़ा बांध लीजिये। गर्म पानी या आग से जल जाने की सूरत में भी येही तरीका इख्तियार कीजिये।

﴿7﴾ अगर **बिच्छू** या **शहद की मखखी** वगैरा काट ले तो उस पर **प्याज़** काट कर या मसल कर लगाइये और नमक लगा कर प्याज़ खिलाइये।

﴿8﴾ जब किसी को **सांप** डस जाए तो उस को **प्याज़** कसरत से खिलाइये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़हर का असर दूर हो जाएगा।

﴿9﴾ कन-खजूरा काट ले तो **प्याज़** और **लहसन** को पीस कर ज़ख़्म पर लेप कर दीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ज़हर का असर ख़त्म हो जाएगा।

﴿10﴾ अगर **प्याज़** को पानी में घोट कर घर में छिड़कें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सांप बिच्छू वगैरा भाग जाएंगे।

“या रब! शिफा इनायत फ़रमा” के सोलह हुरूफ़ की निश्चत से जिल्दी अमराज के 16 इलाज

﴿1﴾ **फोड़े और ज़ख़्म का सहानी इलाज**

जब किसी शख्स का कुछ दुखता या उसे फोड़ा फुन्सी और ज़ख़्म होता तो नबिय्ये करीम रऊफुरहीम, महबूबे रब्बे अज़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपनी उंगली के साथ यूं फ़रमाते :

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ على الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह عزّ وجلّ उस पर दस रहमतें भेजता है। (स्ल.)

بِسْمِ اللَّهِ تَرْبِيَةُ أَرْضَنَا بَرِيْقَةً بَعْضُنَا لِيُشْفَى بِهِ سَقِيمُنَا بِإِذْنِ رَبِّنَا

तरजमा : **अल्लाह** के नाम से, हमारी ज़मीन की मिट्टी, हमारे बा'ज के लुआब (थूक) से हमारा बीमार, **रब** के हुक्म से शिफ़ा पाएगा।

(मुसल्लिम व १२०६ हदीथ २१९६)

खाक़े मदीना और खाक़े वतन

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عليه رَحْمَةُ الْحَنَانِ** दी हुई हदीसे पाक के तहूत फ़रमाते हैं : या'नी अव्वलन आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَ آلهِ وَسَلَّمَ** मरज़ की जगह उंगली रखते फिर उंगली पर कुछ लुआब शरीफ़ लगा कर मिट्टी लगाते, फिर उस का लेप मरज़ की जगह कर देते और येह फ़रमाते जाते कि **بِقَضَائِهِ تَعَالَى** हमारा लुआब और **मदीने की मिट्टी** शिफ़ा है। इस से चन्द मस्अले मा'लूम हुए, एक येह कि बीमारी पर टोटके और मन्तर जाइज़ हैं बशर्ते कि उस के अल्फ़ाज़ कुफ़्रिय्या न हों और कोई काम हराम न हो। आगे चल कर मज़ीद तहरीर करते हैं (हज़रते अल्लामा अली क़ारी **عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِ** ने) “मिरक़ात” में फ़रमाया : **वतन की खाक़** भी शिफ़ा होती है अगर कोई मुसाफ़िर अपने वतन की मिट्टी परदेस ले जाए जिस में से थोड़ी पीने के घड़े में डाल दिया करे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** वहां का पानी नुक्सान न देगा।

(मिरआत, जि. 2, स. 407, 408)

② ख़ारिश की बेहतरीन हिक्कयत

किसी शख्स के ख़ारिश हो गई थी और किसी तदबीर से

❖ 2 ❖ उम्मे अत्तार की ख़ारिश कैसे ठीक हुई !

अम्मीजान رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهَا को बरसों तक हथेलियों में परेशान

कुन “मीठी खुजली” ने दिक् (परेशान) किया, किसी इलाज से न जाती थी। किसी के बताने के मुताबिक उन्होंने ने मेहंदी पानी के ज़रिए जरा पतली कर के उस में मुनासिब मिक्दर में **लीमू** निचोड़ कर थोड़ा

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِسْلَامُ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद्वे पाक न पढ़ा तहकीक़ वाह बद बख़्त हो गया । (अबु नूर)

सा नीला थोथा⁽¹⁾ शामिल कर के ख़ारिश पर लगाना शुरू किया । اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ उन को फ़ाएदा हो गया । येह इलाज ता हुसूले शिफ़ा जारी रखना चाहिये । अगर फिर ख़ारिश हो जाए तो दोबारा भी येही इलाज कर लेना चाहिये ।

﴿4﴾ मेहंदी से इलाज के बारे में आ'ला हज़रत क़ इश्दीद

मेहंदी ख़ारिश के लिये मुफ़ीद है मगर हाथ पाउं में ख़ारिश होने की सूरत में मर्द उसी वक़्त लगाए जब कि दूसरा इलाज मुम्किन न हो, बदन की ऐसी जगह जहां औरतें नहीं लगाया करती वहां मर्द मेहंदी लगा सकता है म-सलन रान, कन्धा, वगैरा । इस ज़िम्न में हुक्मे शर-ई बयान करते हुए मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَقَّان फ़तावा र-ज़विय्या जिल्द 24 सफ़हा 542 पर फ़रमाते हैं : मर्द को हथेली या (पाउं के) तल्वे बल्कि सिर्फ़ नाख़ुनों ही में मेहंदी लगानी हराम है कि औरतों की तशब्बोह (या'नी मुशा-बहत, मुवा-फ़क़त) है । मज़ीद सफ़हा 543 पर मौजूद तहरीर का खुलासा है : इस से मर्द इलाज उसी सूरत में कर सकता है जब कि मेहंदी के काइम मक़ाम कोई दूसरी चीज़ न हो नीज़ मेहंदी किसी ऐसी दूसरी चीज़ के साथ मज़्लूत (MIX) न हो सके जो उस के रंग को जाइल (या'नी ख़त्म) कर दे, ज़ैबो ज़ीनत और आराइश मक्सूद न हो ।

﴿5﴾ ख़ारिश का ख़ुश जाउका हलवा

सोंफ़ 250 ग्राम, धन्या 250 ग्राम दोनों को बारीक पीस कर

(1) येह ज़हर है, पन्सारी के यहां मिल सकता है ।

फरमाने मुस्तफा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी। (مُعْتَرِذَات)

इस में अस्ली घी 750 ग्राम और एक किलो चीनी डाल कर मिला कर (मिक्स कर के) महफूज़ कर लीजिये। रोज़ाना सुब्ह व शाम दो दो तोला (तक़ीबन 25, 25 ग्राम) खा लीजिये। **खून की ख़राबी, ख़ारिश, जिरयान और जो 'फ़े बसर** (या'नी नज़र की कमज़ोरी) के लिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुफ़ीद पाएंगे।

﴿7﴾ रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह या रोज़ा हो तो ब वक्ते इफ़्तार (फ़्रिज के ठन्डे नहीं बल्कि) सादा पानी में दो तोले ख़ालिस **शहद** मिला कर पीने से **जिल्द की बीमारियां** म-सलन ख़ारिश, जलन और फोड़ों वगैरा से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** छुटकारा हासिल होगा।

﴿7﴾ ख़ारिश वाली जगह को गर्म या सादा पानी से धोना भी मुफ़ीद रहता है।

﴿8﴾ गुस्ल के ज़रीए ख़ारिश का इलाज

रोज़ाना नहाना यूं भी सिद्दहत के लिये मुफ़ीद है और अगर आप को **ख़ारिश** है तो रोज़ाना कोई सा साबून अच्छी तरह लगा कर नहाइये और अगर **सूखी ख़ारिश** हो तो ख़ूब मल कर बल्कि बाज़ार से नहाने के इस्ति'माल का लम्बे हेन्डल वाला प्लास्टिक का ब्रश ख़रीद कर उस से अच्छी तरह रगड़ कर गुस्ल कीजिये। जो कपड़े उतारे हैं वोह धूप में डाल दीजिये ताकि जरासीम मर जाएं। दूसरे दिन नहा कर पहले दिन जो उतारे थे वोह पहन लीजिये और आज जो उतारे हैं वोह धूप में डाल दीजिये। येह अमल रोज़ाना जारी रखिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** **ख़ारिश** में काफ़ी राहत महसूस करेंगे। अगर धूप में

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَإِلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

डालना मुम्किन न हो तो किसी भी मुनासिब जगह पर रस्सी वगैरा पर डाल दीजिये मगर धूप ज़ियादा मुफ़ीद है। (मेडीकल स्टोर से ख़ारिश में इस्ति'माल के खुसूसी साबून भी मिल सकते हैं)

﴿9﴾ **प्याज़ का रस, ख़ालिस शहद और नमक मिला कर खरल कर लीजिये और ख़ूब अच्छी तरह मिला लीजिये रोज़ाना बरस (कोढ़) के दाग़ों पर लेप कीजिये। कुछ ही अ़र्से में** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** **दाग़ दूर हो जाएंगे।**

﴿10﴾ जो फोड़ा फूटता न हो उस पर प्याज़ को कूट कर गर्म कर के बांध दीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** चन्द बार के बांधने से फूट जाएगा।

﴿11﴾ सर्दी में हाथ पाउं फटने का इलाज

सर्दी की शिहत से बा'ज अवकात हाथ पाउं और होंट फट जाते हैं और उन में चीरे से पड़ जाते हैं जो सख़्त तक्लीफ़ देते हैं। इस का आसान इलाज येह है कि रात को आग के सामने बैठ कर मु-तअस्सिरा मक़ाम पर प्याज़ का टुकड़ा मलिये।

﴿12﴾ बदन के दाग़ धब्बों का इलाज

बा'ज अवकात जिस्म पर सियाह धब्बे निकल आते हैं जो देखने वाले को बहुत बदनुमा मा'लूम होते हैं। इस का इलाज येह है कि रोज़ाना पानी में नमक पिघला कर उस में प्याज़ के एक टुकड़े को डबो कर धब्बों पर आहिस्ता आहिस्ता रगड़िये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** थोड़े ही दिनों में शिफ़ा नसीब हो जाएगी।

फरमाने मुस्तफा : على الله تعالى عليه و آله وسلم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उसकी शफ़ाअत करूंगा। (کنز العمال)

﴿13﴾ ट्रावो कोर्ट क्रीम (TRAVO CORT CREAM) को सूखी ख़ारिश पर लगा कर उंगली वगैरा से रगड़िये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुफ़ीद तरीन पाएंगे। येह मरहम हर तरह की ख़ारिश फोड़े फुन्सियों और ज़ख़म वगैरा के लिये कारआमद है।

﴿14﴾ खुश्क ख़ारिश

ख़ुश्क ख़ारिश अगर लम्बा अर्सा रहे तो “एग्ज़ीमा” में तब्दील हो जाती है और आगे चल कर इस से पानी भी बहने लगता है और ज़ख़म भी हो जाते हैं। इस को Infected eczema कहते हैं। इस के इलाज के लिये येह नुस्खा **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुफ़ीद पाएंगे।

- (1) सालीसीलिक एसिड 2 फ़ीसद Salicylic acid 2%
- (2) लिक्वीड पाइसिज़ कार्ब 2 फ़ीसद Liquid pices carb 2%
- (3) क्लोबेटोसिल 30 फ़ीसद Clobbetasyl 30%
- (4) रेसोर्सोनाल 1 फ़ीसद Resorcinal 1%
- (5) वाइट पेट्रोलियम जेली 100 फ़ीसद White petroleum jelly 100%

तरीक़ए इस्ति 'माल : जिस्म के मु-तअस्सिरा हिस्सों पर सुब्ह व शाम येह मरहम लगाइये। ज़ियादा तकलीफ़ न हो तो हस्बे ज़रूरत कभी कभी लगा लेना भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुफ़ीद होगा। न मा'लूम हो तो किसी भी मेडीकल स्टोर से पूछ लीजिये।

فرمانے مستفاد : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये तहार है। (ال-य-न)

﴿15﴾ तर खारिश

स्केबीज scabies : यह खारिश की वोह किस्म है कि जिस में इब्तिदाअन खुश्क खारिश होती है बा'द में फुन्सियां और ज़ख्म हो जाते हैं, इस खारिश में ज़ियादा तर हाथ, पाउं की उंगलियों के दरमियान की जगह, बगल और पेशाब की जगह मु-तअस्सिर होती और तक़ीबन पूरे जिस्म में रात को खारिश होती है। इस का नुस्खा येह है :

- (1) सल्फ्यूरिक पावडर दस ग्राम Sulphuric powder 10 gram
 - (2) वाइट पेट्रोलियम जेली सो ग्राम White petroleum jelly 100 gram
- इस का नाम “10 फ़ीसद सल्फ्यूरिक ओइन्टमेन्ट” है। Sulphuric ointment रात को सोने से पहले अच्छी तरह से गुस्ल कर लीजिये और बा'द में पूरे जिस्म पर गरदन से ले कर पाउं के तल्वों तक मरहम लगा लीजिये। और सुब्द गर्म पानी से नहा लीजिये। जो कपड़े या बिस्तर तब्दील करेंगे तो उन को अच्छी तरह धो कर ख़ूब धूप में रखिये। येह अमल मुसल्लसल तीन दिन तक कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** खारिश का मुकम्मल खातिमा हो जाएगा। (इस मरहम का ज़ियादा इस्ति'माल नुक्सान देह भी हो सकता है। बेहतर येह है कि इस्ति'माल से पहले किसी जिल्दी अमराज़ के डॉक्टर से मश्वरा कर लीजिये। Dispenser या chemist से येह मरहम बनवाया जा सकता है)

﴿16﴾ गर्मी दानों का इलाज

गर्मी दाने सताते हों तो नीम की 11 कूपलें (नई निकली हुई

फरमाने मुस्फा ﷺ : تُمْرَ جَاهَا هُوَ مُرْزَقٌ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (طبرانی)

छोटी छोटी पत्तियां) सात दिन और तकलीफ़ ज़ियादा हो तो 40 दिन तक नहार मुंह (या'नी नाश्ते से क़ब्ल ख़ाली पेट) पानी के साथ ख़ालीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** गर्मी दाने और फोड़े फुन्सियां ख़त्म। अगर गर्मियां शुरू होने से क़ब्ल ही 30 दिन तक येह कोर्स कर लें तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** गर्मी दाने वगैरा निकलेंगे ही नहीं।

“हश्म” के तीन ह्शफ़ की निश्बत से सर में खुश्की के 3 इलाज

﴿1﴾ सर में जैत या'नी जैतून शरीफ़ का तेल डाल कर रोज़ाना कम अज़ कम सात मिनट बालों की जड़ों में अच्छी तरह मालिश कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सात दिन में सर की खुश्की, पपड़ियां उतरना, सर में खुजली आना वगैरा सब ख़त्म हो जाएगा ﴿2﴾ रोज़ाना थोड़े से नीम के पत्ते पीस कर पानी में डाल कर सर धोइये ﴿3﴾ अंगूर, तरबूज, नाशपाती, सेब और मौसम्बी वगैरा ज़ियादा इस्ति'माल फ़रमाइये।

दर्द का शहानी इलाज

बदन में दर्द या किसी चीज़ की शिकायत हो तो तकलीफ़ की जगह पर सीधा हाथ रख कर **बिस्मिल्लाह** तीन बार और फिर सात मरतबा येह दुआ पढ़िये : **عَزَّوَجَلَّ اَللّٰهُ اَعَزُّ بِاللّٰهِ وَقُدْرَتِهِ مِنْ شَرِّ مَا جَدُّوْاْ اَحَدِرُ** या'नी अल्लाह और उस की कुदरत के साथ उस चीज़ के शर से पनाह चाहता हूँ जिसे मैं पाता हूँ और जिस से आयन्दा ख़ौफ़ करता हूँ (مسلم ص १२०९ حديث २२०२، حصن حصين ص १०९) पढ़ कर दम करना ज़रूरी नहीं।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझे पर दस मरतबा दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (طبرانی)

“अल मदीना” के सात हुरफ़ की निश्चत से दिल की बीमारियों के 7 इलाज दिल की घबराहट

﴿1﴾ وَلَيَزِيْطَ عَلَى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتْ بِهِ الْاَقْدَامَ ۝ (پ ۹ الانفال ۱۱)

اَلَا يَذْكُرُ اللّٰهُ تَظْمِيْنَ الْقُلُوْبِ ۝ (پ ۱۳ الرعد ۲۸)

ऊपर दी हुई दो आयतें मरीज़ खुद पढ़ कर दम किया हुआ पानी पिये या कोई पढ़ कर पिला दे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عُزَّوَجَلَّ** दिल की घबराहट ख़त्म हो जाएगी ﴿2﴾ हर नमाज़ के बा'द दिल पर हाथ रख कर कम अज़ कम सात बार (ज़ियादा बार की कोई क़ैद नहीं) **يَا اللَّهُ قَوِّنِيْ وَ قَلْبِيْ** (तरजमा :

या **अब्बाह** **عُزَّوَجَلَّ** मुझे और मेरे दिल को कुव्वत अता फ़रमा) पढ़िये । जब कभी दिल में तकलीफ़ उठे उस वक़्त भी येह अमल कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عُزَّوَجَلَّ** इफ़ाका (कमी) हो जाएगा । ग़ैरे मरीज़ भी हर नमाज़ के बा'द येह अमल करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عُزَّوَجَلَّ** दिल के अमराज़ से महफूज़ रहेगा

﴿3﴾ रोज़ाना किसी भी वक़्त एक बार **यासीन शरीफ़** पढ़ कर एक सेब पर दम कर लीजिये फिर नहार मुंह (या'नी नाशते से क़ब्ल ख़ाली पेट) खा लीजिये । **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عُزَّوَجَلَّ** कभी भी दिल की बीमारी नहीं होगी

﴿4﴾ रोज़ाना **लाल अंगूरों** का रस (juice) आधा गिलास पियें ﴿5﴾ रोज़ाना दो या तीन गिलास **गाजर** का रस पियें ﴿6﴾ दिल के मरीज़ के लिये **मौसम्बी** और **कीनू** बहुत मुफ़ीद हैं ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (तर्जुमह)

7) दिल की बन्द शिरयानें खुलने की हिक्कयत

एक साहिब का बयान है : दिल की तकलीफ़ की वजह से मैं ने “एन्जियोग्राफी” करवाई तो दिल की तीन शिरयानें या’नी खून की छोटी छोटी रगें (VEINS) बन्द थीं, डॉक्टरों ने एक माह बा’द ऑपरेशन की तारीख़ दी। इस दौरान मैं ने एक हकीम साहिब से रुजूअ किया, उन्होंने ने मुझे एक नुस्खा तज्वीज़ किया। मैं ने एक माह तक उस को इस्ति’माल किया। मुक़र्रर तारीख़ पर कार्डियो लोजी सेन्टर में सवा दो लाख रूपै जम्अ करवा दिये। डॉक्टरों ने मुख़लिफ़ टेस्ट करवाए। दूसरे रोज़ “बायपास सर्जरी” होने वाली थी, तीन डॉक्टरों का बोर्ड मेरी एक माह पहले की और इस बार की नई रिपोर्टों को ले कर बैठा। उन्होंने ने मुझ से पूछा : एन्जियोग्राफी (ANGIOGRAPHY) करवाने के बा’द आप ने कौन सी दवा इस्ति’माल की थी ? मैं ने हकीम साहिब के दिये हुए नुस्खे की तफ़्सील बयान कर दी। डॉक्टरों ने बताया : आप की तीन बन्द शिरयानों में से दो खुल चुकी हैं येही नुस्खा जारी रखिये हो सकता है बक़िय्या (VEINS) भी खुल जाए। फ़िलहाल आप को “बायपास सर्जरी” की ज़रूरत नहीं। चुनान्वे मैं ने अपनी जम्अ करवाई हुई रक़म वापस ली और खुशी खुशी लौट आया।

दिल की शिरयानें खोलने वाला नुस्खा येह है :

- (1) लीमूं का रस एक पियाली
- (2) अदरक का रस एक

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरुदे पाक न पड़े। (हाम)

पियाली (3) लहसन का रस एक पियाली (4) सेब का सिका एक पियाली। इन चारों को यकजान (MIX) कर के हल्की आग पर आधे घन्टे तक उबालिये, जब एक पियाली के बराबर रस कम हो जाए या'नी तीन पियाली जितना रस रह जाए तो चूल्हे पर से उतार लीजिये। जब ठन्डा हो जाए तो तीन पियाली शहद उस में हल कर लीजिये दवा तय्यार है, इस को बोतल में भर लीजिये रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह तीन चम्मच येह दवा पी लीजिये। إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ दिल की जानिब जाने वाली तमाम बन्द शिरयानें खुल जाएंगी।

दर्दे सर का इलाज

कैसरे रूम ने अमीरुल मुअमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को ख़त लिखा कि मुझे दाइमी दर्दे सर की शिकायत है अगर आप के पास इस की दवा हो तो भेज दीजिये ! हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस को एक टोपी भेज दी। कैसरे रूम उस टोपी को पहनता तो उस का दर्दे सर काफूर हो जाता और जब सर से उतारता तो दर्दे सर फिर लौट आता। उसे बड़ा तअज़्जुब हुवा। आखिरे कार उस ने उस टोपी को उधेड़ा तो उस में से एक कागज़ बर आमद हुवा जिस पर بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ लिखा था। (تفسير كبير ج ۱ ص ۱۰۰)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से येह भी मा'लूम

हुवा कि जिस को दर्दे सर हो वोह एक कागज़ पर بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ लिख कर या लिखवा कर उस का ता'वीज़ सर पर बांध ले। लिखने

का तरीका यह है कि अनमिट सियाही म-सलन बोल पोइन्ट से लिखिये और بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के ० और तीनों “म” के दाएरे खुले रखिये, ता’वीज़ लिखने का उसूल यह है कि आयत या इबारत लिखने में हर दाएरे वाले हर्फ का दाएरा खुला हो या’नी इस तरह म-सलन ق،ف،م،ص،ه،ط،ظ वगैरा। ए’राब लगाना ज़रूरी नहीं, लिख कर मोम जामा (या’नी मोम में तर किये हुए कपड़े का टुकड़ा लपेट लीजिये) या प्लास्टिक कोटिंग कर लीजिये फिर कपड़े, रेगज़ीन या चमड़े में ता’वीज़ बना लीजिये, और सर पर बांध लीजिये जिन को इमामा शरीफ़ का ताज सजाने की सआदत हासिल है वोह चाहें तो इमामा शरीफ़ की टोपी में सी लें। इसी तरह इस्लामी बहनें दुपट्टे या बुरक़अ के उस हिस्से में सी लें जो सर पर रहता है। अगर ए’तिकाद कामिल होगा तो إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ **दर्दे सर** जाता रहेगा। सोने या चांदी या किसी भी धात की डिबिया में ता’वीज़ पहनना मर्द को जाइज़ नहीं। इसी तरह किसी भी धात की ज़न्जीर ख़्वाह उस में ता’वीज़ हो या न हो मर्द को पहनना **ना जाइज़** व गुनाह है। इसी तरह सोने, चांदी और स्टील वगैरा किसी भी धात की तख़्ती या कड़ा जिस पर कुछ लिखा हुआ हो या न लिखा हुआ हो अगरचें **ALLAH** का मुबारक नाम या **कलिमए तय्यिबा** वगैरा खुदाई किया हुआ हो उस का पहनना मर्द के लिये ना जाइज़ है। औरत सोने चांदी की डिबिया में ता’वीज़ पहन सकती है।

फरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عُزَّ وَجَلَّ तुम पर रहमत भेजगा
(अबु मदन) ।

“या अल्लाह” के छ हुरूफ़ की निश्चत से आधे सर के दर्द के 6 इलाज

- ❶ अगर किसी को आधे सर का दर्द हो तो एक बार सू-रतुल इख़लास (अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये, हस्बे ज़रूरत तीन बार, सात बार या ग्यारह बार इसी तरह दम कीजिये । ग्यारह का अ़दद पूरा होने से क़ब्ल ही **إِنْ شَاءَ اللهُ عُزَّ وَجَلَّ** आधे सर का दर्द ठीक हो जाएगा ।
- ❷ जब दर्द हो रहा हो उस वक़्त सूँठ (या'नी सूखी हुई अदरक जो कि पन्सारी या'नी देसी दवा वालों से मिल सकती है) को थोड़े से पानी में घिस कर सूँठ का घिसा हुआ हिस्सा पेशानी पर मलने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عُزَّ وَجَلَّ** आधे सर का दर्द जाता रहेगा ।
- ❸ खुश्क धन्या के थोड़े दाने और थोड़ी सी किश्मिश (या'नी खुश्क छोटे अंगूर जिस को पंजाबी में “सोगी” कहते हैं) मटके के ठन्डे या सादा पानी में चन्द घन्टे भिगो कर पीने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عُزَّ وَजَلَّ** फ़ाएदा होगा ।
- ❹ गर्म दूध में देसी घी मिला कर पीने से भी फ़ाएदा होता है ।
- ❺ नारियल का पानी पीने से आधा सीसी (या'नी आधे सर का दर्द) और पूरे सर के दर्द में कमी आती है ।
- ❻ नीम गर्म पानी के बड़े बरतन में नमक डाल कर दोनों पाउं

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर कसरत से दुरुद पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (باب ۱۱)

12 मिनट के लिये उस में डाले रहिये **اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा हो जाएगा। (ज़रूरतन वक़्त में कमी बेशी कर लीजिये)

(फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 70, 71)

“**يَا رُبِّیْ کَرِیْم**” के आठ हुरूफ़ की निश्बत से दर्दे सर के 8 इलाज

﴿1﴾ **لَا یَصْدَعُونَ عَنْهَا وَلَا یُنْزِفُونَ** (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : इस से न उन्हें दर्दे सर हो न होश में फ़र्क़ आए। ۲۷ الواقعة ۱۹) येह आयते करीमा तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़) पढ़ कर दर्दे सर वाले पर दम कर दीजिये। **اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा हो जाएगा। (तरजमा पढ़ने की ज़रूरत नहीं)

﴿2﴾ **सू-रतुन्नास** सात बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़) पढ़ कर सर पर दम कीजिये, और पूछिये, अगर अभी दर्द बाक़ी हो तो दूसरी बार भी इसी तरह दम कीजिये। अगर अब भी दर्द हो तो तीसरी बार भी इसी तरह दम कीजिये। **पूरे सर** का दर्द हो या **आधे सर** का कैसा ही शदीद दर्द हो तीन बार में **اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ** जाता रहेगा।

﴿3﴾ **पूरे सर** का दर्द हो या शक़ीक़ा (या'नी आधे सर का दर्द) बा'द नमाजे अस्स **सू-रतुत्तकासुर** एक बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये **اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ** दर्द में इफ़ाक़ा होगा।

﴿4﴾ **ज़बान** पर एक चुटकी नमक रख कर 12 मिनट के बा'द एक

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہ تعالیٰ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक कौरात् अन्न लिखता और कौरात् उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

गिलास पानी पी लीजिये सर में कैसा ही दर्द हो **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इफ़ाका हो जाएगा। (हाई ब्लड प्रेशर के मरीज़ के लिये नमक का इस्ति'माल नुक़सान देह होता है)

﴿5﴾ एक कप पानी में एक चम्मच हल्दी डाल कर जोश दे कर पीने या भाप लेने से **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** सर का दर्द दूर हो जाएगा। (सालन वगैरा में हल्दी ज़रूर इस्ति'माल कीजिये, रोज़ाना एक ग्राम (या'नी चुटकी भर) हल्दी खाने वाला **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** केन्सर से महफूज़ रहेगा)

﴿6﴾ रोज़ाना रात को सात दाने बादाम और 21 दाने किशिमिश या'नी सूखे हुए अंगूर (छोटे बड़े कोई से भी हों) पानी में भिगो दीजिये और येह दोनों चीज़ें सुब्ह दूध के साथ खा लीजिये। बिल खुसूस बादाम अच्छी तरह चबा कर या पीस कर खाइये। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दर्दे सर दूर हो जाएगा। कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये भी येह नुस्खा मुफ़ीद है।

﴿7﴾ देसी घी में तली हुई, गर्मा गर्म ताज़ा जलेबियां तुलूए आप़ताब से क़ब्ल खाने से **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दर्दे सर में आराम आ जाएगा।

﴿8﴾ कभी इत्तिफ़ाक़िय्या दर्दे सर हो जाए तो खाना खाने के बा'द डिस्प्रीन (DISPIRIN) की दो टिक्या पानी में घोल कर पी लीजिये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ठीक हो जाएगा। (हर तरह के दर्द की टिक्या खाना खाने के बा'द ही इस्ति'माल की जाए वरना नुक़सान का अन्देशा है)

फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے کتاب میں मुझ پر دुरुद पाک लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरشته उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे। (طبرانی)

म-दनी मश्वरा : अगर दवाओं से दर्दे सर ठीक न होता हो तो आंखें टेस्ट करवा लीजिये अगर नज़र कमज़ोर हो तो ऐनक पहनने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दर्दे सर ठीक हो जाएगा। फिर भी ठीक न हो तो दिमाग के खुसूसी डॉक्टर से रुजूअ करना ज़रूरी है। इस में कोताही बा'ज अवकात सख़्त नुक़सान देह साबित होती है।

“मदनी” के पांच हुरूफ़ की निश्चत से दाइमी नज़ले के 5 इलाज

﴿1﴾ 30 दिन तक रोज़ाना नाश्ते के दो घन्टे बा'द मछली का तेल (CODLIVER OIL) आधी चम्मच पियें। सर्दियों में रात को भी मज़ीद आधी चम्मच इस्ति'माल कर सकते हैं **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**।
दाइमी नज़ले से आराम हो जाएगा ﴿2﴾ बच्चों को अगर बार बार नज़ला होता हो तो मछली का तेल तीन तीन क़तरे दिन में एक या दो बार 30 दिन तक पिलाइये। बच्चों के लिये खुशबूदार मछली का तेल मेडीकल स्टोर से त़लब कीजिये ﴿3﴾ रोज़ाना रात मुठ्ठी भर भुने हुए चने छिल्ले समेत खाना फिर एक घन्टे तक पानी या चाय वगैरा कोई सा मशरूब न पीना दाइमी नज़ले के लिये मुफ़ीद है ﴿4﴾ नाक से गहरे गहरे सांस लीजिये। नमाज़े फ़ज़्र के बा'द ज़ियादा बेहतर है ﴿5﴾ हर वुजू में (रोज़ा न हो तो) नाक में तीनों बार पानी क़दरे (या'नी थोड़ा सा) जोर से चढ़ाइये।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : على الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस ने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عز و جل उस पर दस रहमतें भेजता है। (مسلم)

नज़ले का देशी इलाज

एक तोला (या'नी तक़रीबन 12 ग्राम) सोंफ़ और सात अदद लोंग दो किलो पानी में डाल कर चूल्हे पर ख़ूब जोश दीजिये। जब 250 ग्राम पानी रह जाए तो एक तोला (या'नी तक़रीबन 12 ग्राम) मिस्सी डाल कर चाय की तरह नोश फ़रमाइये। दो तीन बार के इस्ति'माल से **إن شاء الله عز و جل** नज़ला व जुकाम दूर हो जाएगा।

नज़ला ख़ोलने के लिये

दहकते हुए कोएलों पर पिसी हुई हल्दी डाल कर धूनी लेने से नाक खुल जाती और नज़ले की रुतूबत बहने लगती है।

बवासीर और इस के बा'ज अस्बाब

बासूर या'नी मक्अद में होने वाला मस्सा, बासूर की जम्अ बवासीर है। बवासीर के तीन अहम अस्बाब हैं : (1) पुरानी कब्ज़ (2) तब्ख़ीरे मे'दा (या'नी वोह बुख़ारात (भाप) जो खाना खाने के बा'द मे'दे से दिमाग़ को चढ़ते और बदन को भी थोड़ा सा गर्मा देते हैं) (3) अक्सर कुर्सी पर बैठना, इन चीज़ों से मक्अद (दुबुर) के आसपास की अन्दरूनी रगों में ख़ून का ठहराव हो जाता है जिस के सबब वोह रगें फूल कर मस्सों (PILES) की सूरत में बाहर निकल आती हैं या अन्दर की तरफ़ रहती हैं। इस को बवासीर कहते हैं। बा'ज लोगों की बवासीर बयक वक़्त अन्दरूनी और बैरूनी दोनों तरफ़ होती है।

फरमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जो शख्स मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया । (طبرانی)

जैतून से बवासीर का इलाज

हदीस शरीफ में है कि : जैतून का तेल खाओ उसे लगाओ कि येह मुबारक दरख़्त से है और इस में सत्तर बीमारियों की शिफ़ा है जिन में जुज़ाम भी है इस में बवासीर को भी शिफ़ा है । (मिरआत, जि. 6, स. 226, ٤٠٣٥ تحت الحديث ٣٠٨ ص ٨٦ مرقة الفالح) जैतून का तेल बिगैर पकाए खाना फ़ाएदा मन्द होता है और येह कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता है । लिहाज़ा कच्चा इस्ति'माल किया जाए । कच्चा खाने में किसी किस्म की बद मज़गी नहीं होती, खाना खाते वक़्त अपनी रिकाबी में चावल, सालन वगैरा निकाल कर चम्मच से जैतून शरीफ़ का तेल डाल कर शौक़ से तनावुल फ़रमाइये ।

अन्जीर से ख़ुश्क बवासीर का इलाज

अगर तकलीफ़ ज़ियादा हो तो शहद के शरबत (या'नी शहद मिले पानी) के साथ रोज़ाना नहार मुंह पांच अ़दद ख़ुश्क अन्जीर खालीजिये । मुसल्सल इस तरीक़े पर अ़मल करने से ان شاء الله عزوجل चार माह से ले कर दस माह के अ़र्से में बवासीर के मस्से ख़ुश्क हो जाएंगे (येह तरीक़े इलाज ख़ूनी बवासीर के लिये भी मुफ़ीद है) अगर बवासीर में तकलीफ़ कम और बद हज़्मी ज़ियादा हो तो हर बार खाना खाने से आधा घन्टा क़ब्ल ख़ुश्क अन्जीर तीन अ़दद खालीजिये । अगर्चे बवासीर न भी हो यूं ही पेट में बोझ होता हो तब भी हर बार खाना खाने के बा'द तीन अ़दद अन्जीर तनावुल फ़रमाइये ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा ओर उस ने मुझ पर दुरुद पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (ابن)

खूनी बवासीर के 4 इलाज

﴿1﴾ 6 माह तक रोज़ाना तीन अन्जीर और इतने ही वज़न का

अदरक का मुरब्बा नहार मुंह खाइये **बवासीर** में फ़ाएदा हो जाएगा ﴿2﴾ 5 अन्जीर के टुकड़े कर के मुनासिब मिक्दार में दूध के अन्दर पका लीजिये और ठन्डा कर के सोते वक्त खा लीजिये । येह खूनी बवासीर का मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा) इलाज है **खून** बन्द हो जाएगा । ता हुसूले शिफ़ा जारी रखिये अगर मुस्तक़िल इस्ति'माल करें तब भी **खूनी बवासीर** दुरुस्त हो जाएगा है । अन्जीर की ता'दाद कम ज़ियादा भी कर सकते हैं ।

﴿3﴾ अनार का छिलका सुखा कर बारीक पीस कर बोतल में महफूज़ कर लीजिये और सुबह व शाम छ माशा (या'नी तक़ीबन 6 ग्राम) ताज़ा पानी से निगल लीजिये, **खूनी बवासीर** दुरुस्त हो जाएगी ﴿4﴾ नीम के दरख़्त से जो पकी हुई "निबोलियां" गिर पड़ती हैं वोह रोज़ाना 12 अ़दद छिलका उतार कर खा लिया करें, मुसल्सल खाते रहने से **बवासीर** में फ़ाएदा होगा और खून भी साफ़ होगा ।

गुर्दे की पथरी

हम वज़न मूली और आलू भून कर हस्बे ज़रूरत सोंफ़, नमक और काली मिर्च शामिल कर के इस्ति'माल करना गुर्दे के दर्द और पथरी के लिये मुफ़ीद है ।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُحَمَّد رَوَاهُ)

गुर्दे के दर्द के दो इलाज

«1» ख़रबूजे के थोड़े से बीज छील कर रोज़ाना खा लीजिये और ऊपर

पानी पी लीजिये । **«2» गुर्दे के दर्द में राहत मिलेगी** **«2»** **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ**

मूली और उस के पत्ते, ककड़ी, खीरा, तरबूज, ख़रबूजा कसरत से खाना भी **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** गुर्दे के दर्द से नजात का बाइस होगा ।

दमा और सांस फूलना

5 अदद काली मिर्च, दस अदद मज़ बादाम, दस ग्राम मुनक्का सोते वक़्त खाइये, उस के बा'द पानी न पियें **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** राहत महसूस करेंगे ।

मे'दे में ज़ख़्म

दो हफ़्ते तक दिन में तीन मरतबा बन्द गोभी का रस एक एक गिलास पी लीजिये, बन्द गोभी का सालन भी खाइये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** सब बेहतर हो जाएगा ।

जिगर या मे'दे के तमाम अमराज के लिये

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مَدَادًا لَّكُنْتُ رَافِئًا (1)

बा'द नमाज़े फ़ज़्र तीन अदद सादी चीनी की प्लेटों पर या मोमी काग़ज़ों पर ज़र्दे के रंग से ऊपर दी हुई आयते मुबा-रका लीखिये (ए'राब लगाने की हाज़त नहीं अलबत्ता दाएरे वाले हुरूफ़ के दाएरे खुले

(1) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अगर समुन्दर मेरे रब की बातों के लिये सियाही हो ।

(प १६ केहफ १०९)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهَيْسَمُ : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

रखिये) और सुब्ह, दो पहर और रात एक एक प्लेट पानी से धो कर पी लीजिये। (मुद्दते इलाज 40 दिन) इस के इलावा इसी रंग से लिख कर रेगज़ीन या चमड़े में ता'वीज़ बना लीजिये। इस्लामी बहनें अपने गले में और इस्लामी भाई अपने सीधे बाजू पर बांध लें। येह इलाज जिगर और मे'दे के इलावा गुर्दों के दर्द के लिये भी मुफ़ीद है। जब भी ता'वीज़ पहनना हो उस को प्लास्टिक कोटिंग या मोमजामा कर लेना चाहिये।

हाई ब्लड प्रेशर

﴿1﴾ सात अदद काली मिर्च और सात अदद नीम की कूंपलें (या'नी नीम के दरख़्त की इब्तिदाई छोटी छोटी पत्तियां) रोज़ाना खाइये या नीम की पत्तियों का एक चम्मच रस रोज़ाना सुब्ह पी लीजिये। हाई ब्लड प्रेशर के साथ साथ शूगर, जिल्द, जिगर और जिन्सी बीमारियों से भी **﴿2﴾** हर खाने के साथ लहसन का एक (या तीन) जवा (या'नी लहसन की पोथी की रेक, फांक) छील कर कच्ची निगल लिया करें। टुकड़े कर के या कूट कर भी इस्ति'माल कर सकते हैं **﴿3﴾** बहुत सारी बीमारियों से तहफ़फ़ुज़ हासिल होगा। (कच्चा लहसन, कच्ची मूली, और कच्ची प्याज़ वगैरा कोई भी ऐसी चीज़ खाई जिस से मुंह में बदबू हो जाती है तो जब तक मुंह में बदबू हो मस्जिद का दाख़िला हराम है। इस मस्अले की तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत्बूअ़ा मुख़्तसर रिसाला “मस्जिदें खुशबूदार रखिये” हदिय्यतन हासिल कर के पढ़ लीजिये)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِلَهُ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (तुर्मुआल)

चावल ब्लड प्रेशर में मुफीद हैं

फ़िशारुद्दम या'नी हाई ब्लड प्रेशर, दिल के मरज़ और मे'दे की ख़राबी के दो हज़ार मरीज़ों पर डॉक्टरों ने दस साल तक तज़रिबात करने के बा'द येह राय क़ाइम की है कि इन अमराज़ में "चावल की ग़िज़ा" बेहतरीन इलाज है। बिल खुसूस ब्लड प्रेशर के मरज़ के आगाज़ में चावल ज़ियादा मुफीद हैं।

“परहेज़ में आधा इलाज है” के अठारह हुरूप की निश्बत से खांसी के 18 इलाज

﴿1﴾ हर तरह की खांसी के मरीज़ दिन में कई बार ख़ालिस शहद चाटें खांसी बल्कि गले के हर तरह के दर्द में भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** फ़ाएदा होगा ﴿2﴾ अगर काली खांसी हो तो मुनासिब मिक्दार में पिसी हुई सूंठ (या'नी खुशक अदरक) ख़ालिस शहद पर छिड़क दीजिये और सात दिन रोज़ाना सुबह व शाम थोड़ा थोड़ा चाट लीजिये। काली खांसी बल्कि हर तरह की खांसी के लिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** मुफीद पाएंगे ﴿3﴾ हर घन्टे के बा'द एक लॉग मुंह में रख कर चबाते और चूसते रहिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَजَلَّ** खांसी का ज़ोर टूटेगा ﴿4﴾ पोदीना का रस पीने से भी खांसी ठीक हो जाएगी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** ﴿5﴾ चन्द खजूरें खा कर एक कप नीम गर्म पानी पी लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** बलग़म पतला हो कर ख़ारिज हो जाएगा। खांसी और दमा दोनों के लिये येह इलाज फ़ाएदा मन्द है (जिन को खजूरें मुवाफ़िक नहीं आती वोह येह इलाज न करें और आंखों के मरीज़ के लिये भी खजूरें खाना नुक्सान देह हो

﴿6﴾ **फरमाने मुस्तफा** : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (ابن) ۱

सकता है) ﴿6﴾ तक़ीबन 25 ग्राम अदरक के रस में शहद मिला कर दिन में तीन बार चाटने से भी बल्ग़म ख़ारिज होगा **﴿7﴾** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** केले के दरख़्त का पत्ता सुखाने के बा'द तवे पर जला कर उस की राख शहद में मिला कर **खांसी** के मरीज़ को थोड़ी थोड़ी चटाते रहिये । **﴿8﴾** शहद में प्याज़ का रस मिला कर **आराम** आ जाएगा **﴿9﴾** शोड़ी पीने से **आराम** आता है **﴿10﴾** दो **पिसी हुई काली मिर्च** दूध में जोश दे कर पी लीजिये **﴿11﴾** चम्मच अदरक का रस और एक चम्मच शहद मिला कर पी लीजिये **खांसी** से नजात मिलेगी **﴿12﴾** प्याज़ उबाल कर पीने से बल्ग़म निकलता और **खांसी** में आराम आता है **﴿13﴾** किश्मिश (या'नी खुश्क अंगूर) और शकर या अनार का छिल्का चूसना **खांसी** के लिये मुफ़ीद है **﴿14﴾** गर्म दूध में थोड़ी सी हल्दी और देसी घी मिला कर पीने से **खांसी** में फ़ाएदा होता है **﴿15﴾** पानी में थोड़ा सा नमक घोल कर पीने से **खांसी** को आराम मिलेगा **﴿16﴾** रात को नमक की डली मुंह में रख लीजिये **खांसी** में कमी हो जाएगी **﴿17﴾** दवाओं की दुकान पर मिलने वाला जोशांदा भी इस्ति'माल किया जा सकता है **﴿18﴾** पान के दो चार पत्ते तवे वगैरा पर गर्म कर के उन पर हल्का गर्म तेल लगा कर गले पर बांधना **पुरानी खांसी** के लिये मुफ़ीद है । (पान के पत्ते गर्म करते वक़्त येह ख़याल रखिये कि जल न जाएं और गले पर बांधते वक़्त गर्म हों मगर न इतने कि तक्लीफ़ पहुंचे) **﴿19﴾** **रोज़ाना** किश्मिश (खुश्क छोटे अंगूर जिस को

फरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुँचता है। (बर्रान)

पंजाबी में “सोगी” कहते हैं) के 40 दाने (अगर मुवाफ़िक़ आते हों तो दुगने करने में भी हरज नहीं) और तीन अ़दद बादाम ले कर इस पर 11 बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दम कर के खा लीजिये इस के ऊपर दो घन्टे तक पानी न पियें। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** खांसी में बहुत फ़ाएदा होगा। **बल्ग़म** निकलेगा और मज़ीद नहीं बनेगा। (ज़रूरतन किश्मिश की ता'दाद बढ़ा दीजिये) बहुत छोटे बच्चों के लिये हस्बे ज़रूरत मिक्दार कुछ कम कर दीजिये। ता हुसूले शिफ़ा इलाज जारी रखिये।

“**يَا अल्लाह**” के छ हुस्फ़ की निश्बत से हिचकी के छ इलाज

(वोह हवा जो कि गले से रुक रुक कर आवाज़ के साथ निकलती है उस को हिचकी बोलते हैं)

﴿1﴾ दो लोंग मुंह में डाल कर उन का रस चूसिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

हिचकी फ़ौरन बन्द हो जाएगी ﴿2﴾ थोड़ी सी हल्दी या थोड़ा सा जीरा पानी के साथ फांक लीजिये ﴿3﴾ मूली या गन्ने का रस पी लीजिये ﴿4﴾ गाजर को पीस कर सूँघ लीजिये ﴿5﴾ आम के दरख़्त के पत्ते जला कर धूनी ले लीजिये ﴿6﴾ अगर बच्चे को बार बार हिचकी आ रही हो और खुद ब खुद बन्द न हो तो थोड़ा सा शहद चटा दीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हिचकी बन्द हो जाएगी।

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह عُزَّ وَجَل उस पर सो रहमतें नाज़िल फरमाता है। (طبرانی)

“क़श्म” के तीन हुरूफ़ की निश्बत से हाथ पैर शुन हो जाने के 3 इलाज

- ﴿1﴾ रोज़ाना नहार मुंह (नाश्ते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त ख़ाली पेट) चुटकी भर कलौंजी पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये
 ﴿2﴾ ग्यारह अ़दद ख़ुश्क ख़ूबानी रात को पानी में भिगो लीजिये और सुब्ह खा लीजिये (कम अज़ कम 40 दिन तक) ﴿3﴾ पानी के गिलास में एक चम्मच शहद मिला कर उस में आधा लीमूं निचोड़ कर रोज़ाना नहार मुंह (नाश्ते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त ख़ाली पेट) पी लीजिये (मुद्दते इलाज कम अज़ कम 40 दिन)

“ख़ुद्दा” के तीन हुरूफ़ की निश्बत से आवाज़ बैठ जाए तो तीन इलाज

- ﴿1﴾ नमक का छोटा सा टुकड़ा आग में ख़ूब गर्म कर के किसी चीज़ से पकड़ कर फ़ौरन ठण्डे पानी के गिलास में बुझा दीजिये, फिर वोह नमक की डली पानी से निकाल कर उस पानी को पी जाइये। दो तीन बार येह इलाज करने से اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عُزَّ وَجَل फ़ाएदा हो जाएगा ﴿2﴾ एक चम्मच जव शरीफ़ के दाने चबाइये और चूसिये फिर आख़िर में निगल जाइये ﴿3﴾ ख़श्खाश के छिल्के और अज्वाइन हम वज़्न लीजिये और पानी में उबाल कर बरदाश्त के क़ाबिल हो जाने के बा'द इस पानी से ग़रारे कीजिये।

गला बैठ गया हो तो....

“गौसे आ' नम” के सात हुरफ़ की निश्चत से
मुंह के छाले के 7 इलाज

﴿1﴾ अतिबिबा (या'नी तबीबों) का कहना है : “बा'ज अवकात मे'दे की गरमी और तेजाबिय्यत से मुंह में छाले पड़ जाते हैं और इस मरज से खास किस्म के जरासीम मुंह में फैल जाते हैं। इस के लिये मुंह में **ताजा मिस्वाक** मलिये और इस के लुआब को कुछ देर तक मुंह के अन्दर फिराते रहिये। इस तरह कई मरीज ठीक हो चुके हैं।” ﴿2﴾ मुठ्ठी भर बर्गे हिना (या'नी मेहंदी के पत्ते) पानी में उबाल कर (दिन में दो बार) इस के **गरारे** कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा हो जाएगा ﴿3﴾ पाव भर गर्म पानी के अन्दर एक **लीमूं** निचोड़ कर उस से कुल्लियां कीजिये। (दिन में तीन बार) ﴿4﴾ अन्डे की सफ़ेदी फेंट कर रूई की फुरेरी से छालों पर लगाइये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आराम आ जाएगा ﴿5﴾ दिन में दो तीन बार ग्लीसिरीन लगाना भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मुफ़ीद होगा ﴿6﴾ मेडीकल स्टोर से DAKTARIN (MICONAZOLE) नामी ट्यूब ले कर दिन में चन्द बार थोड़ी थोड़ी दवा डाल कर मुंह में चन्द मिनट फिराइये फिर

फरमाने मुस्तफा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़े । (८७)

थूक दीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** छाले ठीक हो जाएंगे। छोटे बच्चों को भी इस्ति'माल करवा सकते हैं। अगर येह दवा मा'मूली सी पेट में चली जाए तब भी हरज नहीं (रोजे की हालत में दिन के वक़्त मुंह में दवा नहीं लगा सकते) ﴿7﴾ मुंह के छालों और तक़रीबन 80 फ़ीसद बीमारियों का इलाज कम खाने में है अगर यक़ीन न आता हो तो पेट भर कर खाना छोड़ दीजिये और रहमते इलाही **عَزَّوَجَلَّ** के करिश्मे देखिये। **फ़ैज़ाने सुन्नत** जिल्द अव्वल के बाब “पेट का कुफ़्ले मदीना” में दी हुई हिदायात के मुताबिक़ अमल कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप इस की ब-र-कतें देख कर हैरान रह जाएंगे। यक़ीन मानिये ! ज़ियादा खाने से जान “बनती” नहीं “बिगड़ती” है।

केन्सर

﴿1﴾ पिसा हुआ **काला ज़ीरा** तीन तीन ग्राम दिन में तीन मरतबा पानी से इस्ति'माल कीजिये ﴿2﴾ रोज़ाना चुटकी भर पिसी हुई ख़ालिस हल्दी खाने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कभी केन्सर नहीं होगा।

मुंह के केन्सर का एक सबब

सिगरेट नोशी, तम्बाकू, खुशबूदार मीठी छालिया, इलाएची के खुशबूदार बीज, मेन पूड़ी, पान गुटका, सिटी और पान के मुख़लिफ़ खुशबूदार मसा-लहे का कसरत से इस्ति'माल सांस की नाली में ज़ख़्म, फेफ़ड़ों में पीप पड़ जाना और तरह तरह की ख़ौफ़नाक बीमारियों का

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुद पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे । (क़ुरआन)

सबब बन सकता है और इस से मुंह का केन्सर भी हो सकता है ।

(तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ मुख़्तसर

रिसाला “पान गुटके की तबाह कारियां” का मुता-लआ फ़रमा लीजिये)

“या बबी” के पांच हुरूफ़ की निश्बत से

बुरे ख़्वाब के 5 म-दनी इलाज

﴿1﴾ बा वुजू सोने की आदत बनाइये ﴿2﴾ सोने से क़ब्ल

ط اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ सात बार पढ़ कर दुआ कीजिये, “या

अल्लाह ! मीठे मीठे मुस्तफ़ा ﷺ का सदक़ा मुझे

बुरे ख़्वाबों से बचा ।” (अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़)

ط اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ बुरा ख़्वाब नहीं आएगा । ﴿3﴾ बुरा ख़्वाब देख कर

आंख खुलने पर ط اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ और لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ तीन

तीन बार पढ़ लीजिये ﴿4﴾ बुरा ख़्वाब देखने के बा'द बाएं कन्धे की

तरफ़ थुत्कार कर करवट बदल लीजिये और तीन बार पढ़िये :

ط اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ 21 बार (सोने से क़ब्ल) पढ़

लीजिये ط اَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ 21 बार (सोने से क़ब्ल) पढ़ लीजिये ।

ख़्वाब में नहीं डरेंगे । (मज़कूरा तमाम म-दनी

इलाज अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ उम्र भर जारी रखिये और शिफ़ा के साथ साथ सवाब भी कमाइये)

पीलिया (यश्क़ान) के दो इलाज

﴿1﴾ भुने हुए चनों पर अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़ के साथ

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तुम पर रहमत भेजेगा (अबु दौद) ।

सू-रतुल फ़लक़ और सू-रतुन्नास एक एक बार या तीन तीन बार पढ़ कर दम कर दीजिये और थोड़े थोड़े खाते रहिये ﴿2﴾ गन्ने को रात शबनम में रख दीजिये और सुब्ह इस्ति'माल कर लीजिये ।

बद ज़बानी का इलाज

जो बे तुकी बातें कर के, गुस्से से झाड़ कर लोगों के दिल दुखा बैठता हो वोह रोज़ाना اَسْتَغْفِرُ اللّٰه सो मरतबा (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़े । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ बद ज़बानी की आदत निकल जाएगी । मुसलमानों की नाहक़ दिल आज़ारियां कर बैठने की सूरत में اَللّٰهُمَّ تَوَّابٌ عَزَّوَجَلَّ की जनाब में तौबा के साथ साथ जिन जिन का दिल दुखाया हो उन से मुआफ़ी मांगना ज़रूरी है ।

हज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने बारगाहे रिसालत में ज़बान की तेज़ी की शिकायत की तो फ़रमाया, तुम इस्तिग़फ़ार को लाज़िम क्यूं नहीं कर लेते ? बेशक मैं दिन में सो बार इस्तिग़फ़ार करता हूं ।

(مُسْنَدُ اِمَامِ اَحْمَدَ بْنِ حَنْبَلٍ ج ٩ ص ٩٥ حديث ٢٣٤٠٠)

“बबी का क़रुम” के आठ हुरफ़ की

निश्बत से शूअर के 8 इलाज

رَبِّ اَدْخِلْنِيْ مَدْخَلَ صِدِّقٍ وَّاَخْرِجْنِيْ مَخْرَجَ صِدِّقٍ وَاَجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿1﴾

(प १० بنی اسرائیل ८०) रोज़ाना सुब्ह व शाम ऊपर दी हुई आयते मुबा-रका तीन बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर

फरमाने मुस्तफा ﷺ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफिफरत है। (बायस्मि)

दम कर के पी लीजिये । **﴿2﴾** एक कप कलोंजी, एक कप राई, आधा कप अनार का सूखा छिलका और आधा कप पित (पापड़ी) मिला कर पीस लीजिये । इस पर सात बार सू-रतुल फ़ातिहा (अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये और 30 रोज़ तक बिला नागा रोज़ाना नहार मुंह (या'नी नाश्ते से क़ब्ल या रोज़ा हो तो इफ़्तार के वक़्त ख़ाली पेट) आधा चम्मच इस्ति'माल कीजिये । परहेज़ भी जारी रखिये एक हफ़्ते के बा'द शूगर टेस्ट करवा लीजिये **﴿3﴾** इफ़ाका (कमी) पाएंगे खुश्क सोंफ़ और खुश्क आमला हम वज़न पीस कर बारीक छान कर इस पर 313 बार दुरूदे पाक पढ़ कर दम कर के रख लीजिये और अन्दाज़न छ छ माशा (6 ग्राम) ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना सुब्ह व शाम ताज़ा या मटके के पानी से इस्ति'माल कीजिये । **﴿4﴾** इसे शूगर कम करने का बेहतरीन इलाज पाएंगे रोज़ाना एक अदद सदा बहार फूल (सफ़ेद) नहार मुंह खा लीजिये **﴿5﴾** एक किलो सूखे करेले पीस कर रख लीजिये । रोज़ाना सुब्ह नहार मुंह चौथाई चम्मच, पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये और **﴿6﴾** करेले के पावडर फ़रमाइये (मुद्दते इलाज कम अज़ कम 92 दिन) करेले के पावडर के बजाए अगर रोज़ाना सुब्ह व शाम करेले का रस एक एक चम्मच पी लें तब भी शूगर की बीमारी में हैरत अंगेज़ तौर पर फ़ाएदा होगा । इस के साथ अगर खाना कम खाएंगे तो

फ़रमान मुस्तफ़ा ﷺ : جَلَى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عز وجل उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

शूगर के मरज़ के साथ साथ जिम्न मोटापे का इलाज भी होता चला जाएगा ﴿7﴾ पिसे हुए काले चने और जव शरीफ़ की रोटी रोज़ाना खाइये या भुने हुए चने खा लीजिये, ब्राउन खुब्ज़ (या'नी ब्राउन रोटी) या ब्राउन ब्रेड (येह दोनों बेकरी से मिल सकते हैं) इस्ति'माल कीजिये। मगर कोई सी भी गिज़ा ज़ियादा मिक्दार में मत खाइये कि शूगर बढ़ने का ख़तरा रहेगा ﴿8﴾ बड़ी इलाएची के अन्दर से दाने निकाल कर (ता हुसूले शिफ़ा) रोज़ाना सुब्ह व शाम पांच पांच दाने चबा कर निगल लीजिये إِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ बहुत फ़ाएदा होगा।

दांतों की मजबूती का राज़ - हिफ़ायत

एक साहिब जिन की उम्र 100 बरस से कुछ कम थी अपने दांतों से गन्ना खा लेते थे और फ़रमाते थे कि जब गन्ना खाता हूं तो मेरे दांतों पर जवान आदमी रश्क करते हैं। किसी ने उन से दांतों की महफूज़ी और मजबूती का सबब दरयाफ़्त किया तो फ़रमाया : “आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِ ने मुझे बचपन में येह अमल बताया था कि इशा के बिना जब पढ़े जाएं तो पहली रक्अत में बा'दे अल हम्द सूरए اذا جاء दूसरी में تَبَّتْ يَدَا और तीसरी में सू-रतुल इक्लास पढ़ने से दांत उम्र भर हर तकलीफ़ से महफूज़ रहते हैं। जब से मैं इसी तरह पढ़ता हूं और इसी अमल की येह ब-र-कत है।”

दांतों और कानों की हिफ़ायत का आशान अमल

जब छींक आए तो الْحَمْدُ لِلّٰهِ कहे और अगर رَبِّ الْعَالَمِينَ भी

फरमाने मुस्तफा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुझ पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफार करते रहेंगे। (भरान)

बढ़ा दे या'नी **الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ** कहे तो बेहतर है जब कि **الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ** कहना बहुत ही बेहतर है। हज़रते मौला मुश्किल कुशा, अलिय्युल मुर्तज़ा, शेरे खुदा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم** फ़रमाते हैं : जो शख्स छींक आने पर ⁽¹⁾ **الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ** कहेगा उसे कभी दाढ़ और कान का दर्द न होगा। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**। (मरफ़ा ज ८, व ९९, تحت الحديث ४७३९) मुफ़सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَان** फ़रमाते हैं : जो कोई शख्स छींक पर कहे : **الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ** और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फ़ैर लिया करे तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दांतों की बीमारियों से महफूज़ रहेगा, मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा अमल) है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 396) बहारे शरीअत जिल्द 3 सफ़हा 477 पर है : छींकने वाले से पहले ही सुनने वाले ने **الْحَمْدُ لِلَّهِ** कहा तो एक हदीस में आया है कि येह शख्स दांतों और कानों के दर्द और तुख़्मा⁽²⁾ से महफूज़ रहेगा। और एक हदीस में है कि कमर के दर्द से महफूज़ रहेगा।

(رَدُّ الْمُحْتَرَج ९, ص १८४)

दांत कमजोर होने की एक वजह

खाने के बा'द ख़िलाल कीजिये न करने से दांत कमजोर हो जाते हैं।

दांतों के दर्द के दो इलाज

﴿1﴾ “हींग” को पानी में जोश दे कर कुल्लियां करने से दांतों का لَدِينَهُ

(1) तरजमा या'नी हर हाल में सब खूबियां अल्लाह **عَزَّوَجَلَّ** के लिये हैं जो तमाम जहान वालों का मालिक है। (2) तुख़्मा या'नी बद हज़्मी।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالسَّلَامُ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عزوجل उस पर दस रहमते भेजता है। (स्ल)

दर्द दूर होता है ﴿2﴾ हिलते हुए दांतों में दर्द हो तो “हींग” या “अकर करहा” दांत में दबाने से आराम आ जाता है। मसूड़ों की सूजन दूर होती है।

“बरेली” के पांच हुरफ की निश्बत से दांतों का खून बन्द करने के लिये पांच इलाज

﴿1﴾ (गर्म तवे वगैरा के जरीए) फुलाई हुई फिटकरी का पावडर मसूड़ों में लगाइये ﴿2﴾ लीमूं का रस मसूड़ों पर मलिये ﴿3﴾ सेब के रस में खाने का सोडा मिला कर मसूड़ों में लगाइये ﴿4﴾ दिन में तीन मरतबा लाल टमाटर का रस थोड़ा थोड़ा पी लीजिये ﴿5﴾ अनार के फूल छाउं में सुखा कर खूब बारीक पीस कर बोतल में भर लीजिये सुबह व शाम मन्जन के तरीके पर दांतों पर मलिये **ان شاء الله عزوجل** खून बन्द हो जाएगा और हिलते दांत भी मजबूत होंगे।

“मक्का” के तीन हुरफ की निश्बत से दांतों का पीलापन दूर करने के 3 इलाज

﴿1﴾ तिल का तेल, लीमूं का रस और नमक मिला कर दांतों पर मलने से दांतों का पीलापन दूर होता, खून बन्द और दर्द भी दूर होता है ﴿2﴾ लीमूं के छिलके सुखा कर, पीस कर उस में नमक मिला कर दांत मांझिये **ان شاء الله عزوجل** चमकदार हो जाएंगे ﴿3﴾ तीन हिस्से नमक और एक हिस्सा खाने का सोडा मिला कर डिबिया में रख लीजिये, रोजाना दांतों पर लगा कर दो तीन मिनट रहने दीजिये फिर दांत मांझ लीजिये **ان شاء الله عزوجل** दांत साफ हो जाएंगे।

فرمانے مستفاد: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : جَوَّ شَخْصٍ مُذْجٍ پَر دُرُودِ پَاک پَدْنَا بھُل گَیَا وَہ جَنَنَتِ کَا رَسْتَا بھُل گَیَا ! (طَرِیْق)

“बक्रीअ” के चार हुरफ़ की निश्चत से पाएरिया (दांतों से पीप आने) के 4 इलाज

﴿1﴾ गन्दुम की चपाती सालन के साथ ख़ूब अच्छी तरह चबा कर खाइये इस तरह मसूड़ों की वर्जिश भी होगी और गन्दुम पाएरिया के लिये मुफ़ीद भी है। नीज़ अच्छी तरह ख़ूब चबा कर खाने से बहुत सारी बीमारियों से तहफ़फ़ुज़ भी हासिल होता है (अगर चबाने के दौरान खून या पीप आता हो तो येह इलाज मत कीजिये वरना खून या पीप पेट में जाएगा) ﴿2﴾ पालक का रस पीना भी मुफ़ीद है, बेहतर है कि इस में गाजर का रस भी शामिल कर लीजिये ﴿3﴾ अमरूद के दरख़्त की कूंपलें (नए नर्म पत्ते) मुनासिब मिक्दार में खाइये ﴿4﴾ हड़, नमक और काली मिर्च हम वज़्न बारीक पीस लीजिये और इस से दिन में दोबार मन्जन कीजिये إِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ मसूड़ों की सूजन और पाएरिया का बेहतरीन इलाज है।

दांतों के तमाम अमराज का इलाज

मिस्वाक दांतों के तमाम अमराज का इलाज है जब कि इस को उसूल के मुताबिक़ किया जाए। आजकल अक्सर लोग शायद मिस्वाक नहीं, फ़क़त “रस्मे मिस्वाक” अदा करते हैं।

फरमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढ़ा तहकीक़ वोह बद बख्त हो गया । (ابن ماجة)

“मिस्वाक करना सुन्नत है” के चौदह हुरफ़ की निश्बत से मिस्वाक के 14 म-दनी फूल

﴿1﴾ मिस्वाक की मोटाई छुंगलिया या'नी छोटी उंगली के बराबर हो ﴿2﴾ मिस्वाक एक बालिशत से ज़ियादा लम्बी न हो वरना उस पर शैतान बैठता है ﴿3﴾ मिस्वाक के रेशे नर्म हों कि सख़्त रेशे दांतों और मसूड़ों के दरमियान ख़लाअ (GAP) का बाइस बनते हैं ﴿4﴾ मिस्वाक ताज़ा हो तो ख़ूब वरना कुछ देर पानी के गिलास में भिगो कर नर्म कर लीजिये ﴿5﴾ मिस्वाक के रेशे रोज़ाना काटते रहिये कि रेशे उस वक़्त तक कार आमद रहते हैं जब तक इन में तलख़ी बाकी रहे ﴿6﴾ दांतों की चौड़ाई में मिस्वाक कीजिये ﴿7﴾ जब भी मिस्वाक करना हो कम अज़ कम तीन बार कीजिये ﴿8﴾ हर बार धो लीजिये ﴿9﴾ मिस्वाक सीधे हाथ में इस तरह लीजिये कि छुंगलिया इस के नीचे और बीच की तीन उंगलियां ऊपर और अंगूठा सिरे पर हो ﴿10﴾ पहले सीधी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर उल्टी तरफ़ के ऊपर के दांतों पर फिर सीधी तरफ़ नीचे फिर उल्टी तरफ़ नीचे मिस्वाक कीजिये ﴿11﴾ चित लैट कर मिस्वाक करने से तिल्ली बढ़ जाने और ﴿12﴾ मुठ्ठी बांध कर करने से बवासीर हो जाने का अन्देशा है ﴿13﴾ मिस्वाक वुजू की सुन्नते क़ब्लिया है अलबत्ता सुन्नते मुअक्कदा उसी वक़्त है जब कि मुंह में बदबू हो । (माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 1, स. 623) ﴿14﴾ मिस्वाक ना क़ाबिले इस्ति'माल हो जाए तो फेंक मत

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोने जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा। (क़ुरआन)

दीजिये कि येह आलए अदाए सुन्नत है, किसी जगह एहति यात से रख दीजिये या दफ़न कर दीजिये या पथ्थर वग़ैरा वज़न बांध कर समुन्दर में डबो दीजिये। **मिस्वाक** या मुक़द्दस अवराक़ वग़ैरा किनारे पर डाल देने से बह कर वापस आ जाने का इम्कान रहता है। गहरे समुन्दर में डालते वक़्त भी मुक़द्दस अवराक़ के थेले या बोरी में दो एक जगह शिगाफ़ या 'नी चीरे वग़ैरा ज़रूर डालिये ताकि पानी अन्दर आ जाए और तह में बिठा दे। (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये बहारे शरीअत जिल्द अव्वल स. 294 ता 295 का मुता-लआ फ़रमा लीजिये)

“गौस” के तीन हुस्फ़ की निश्चत से दांतों की हिफ़ज़त के 3 म-दनी फूल

﴿1﴾ हमेशा चाय या कोफ़ी पीने के बा'द थोड़ा थोड़ा पानी पियाले में डाल कर ख़ूब हिला कर कुल्ली भर लीजिये और चन्द बार मुंह में फिरा कर ख़ूब जुम्बिशें दे कर पी लीजिये या निकाल दीजिये, ऐसा ही तीन बार कीजिये। इसी तरह हर ग़िज़ा खाने के बा'द भी येह अमल कीजिये। **﴿2﴾** जब भी मौक़अ मिले मुंह में **कुल्ली** भर लीजिये और चन्द मिनट तक हिलाते रहिये फिर उगल दीजिये। येह अमल रोज़ाना मुख़लिफ़ अवक़ात में चन्द बार कीजिये **﴿3﴾** अगर मज़क़ूरा अन्दाज़ पर **कुल्लियों** के लिये सादा पानी के बजाए नमक वाला नीम गर्म पानी इस्ति'माल किया

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी। (مُعْتَبَرَات)

जाए तो मजीद मुफीद है। अगर पाबन्दी से येह इलाज जारी रखेंगे तो **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** दांतों के दरमियान अटके हुए गिज़ा के अज्ज़ा धुल धुल कर निकलते रहेंगे, न वोह मसूड़ों में ठहरेंगे कि सड़ें, **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** इस तरह करने से मसूड़ों में खून की शिकायत भी न होगी और दांतों की बे शुमार बीमारियों से बचे रहेंगे।

“का'बा” के चार हुरफ़ की निश्बत से मुंह की बदबू के 4 इलाज

﴿1﴾ **اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلَى النَّبِيِّ الطَّاهِرِ** येह दुरूद शरीफ़ मौक़अ ब मौक़अ एक ही सांस में ग्यारह मरतबा पढ़ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मुंह की बदबू जाइल हो जाएगी ﴿2﴾ अगर मुंह में बदबू आती हो तो हरा धनिया चबा कर खाइये नीज़ ﴿3﴾ गुलाब के ताज़ा या सूखे हुए फूलों से दांत मांझने से भी **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** बदबू दूर हो जाएगी ﴿4﴾ हां अगर पेट की ख़राबी की वजह से बदबू आती हो तो “कम खोरी” (या'नी हमेशा खाना कम खाने) की सआदत हासिल कर के भूक की ब-र-कतें लूटने से **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** टांगों और बदन के मुख़लिफ़ हिस्सों के दर्द, कब्ज़, सीने की जलन “मुंह के छाले, बार बार होने वाले नज़्ले खांसी और गले के दर्द मसूड़ों में खून आना वगैरा बहुत सारे अमराज़ के साथ साथ मुंह की बदबू से भी जान छूट जाएगी। भूक से कम खाने की ब-र-कत से 80 फ़ी सद अमराज़ से बचत हो सकती है। (तफ़सीली मा'लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अब्वल के बाब “पेट का कुप्ले

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (معاذ/زبان)

मदीना” का मुता-लआ फ़रमाइये) अगर नफ़्स की हिंस का इलाज हो जाए तो कई ज़ाहिरी व बातिनी अमराज़ खुद ही ख़त्म हो जाएं।

रज़ा नफ़्स दुश्मन है दम में न आना

कहां तुम ने देखे हैं चंदराने वाले

दांतों को बीमारी से बचाने का बेहतरीन नुस्खा

याद रहे ! डट कर खाने से हाज़िमा ख़राब होता, तरह तरह की बीमारियां पैदा होतीं और अक्सर मसूड़ों से खून भी आता है। पेट का कुफ़ले मदीना लगाने या’नी भूक से कम खाने की आदत बनाइये। पिज़्ज़ों, पराठों, होटल की नहारियों, कबाब समोसों, मिठाइयों, पकोड़ों, पूरियों, कचोरियों और अन्वाअ व अक्साम की तली हुई चीज़ों, तरह तरह की मीठी डिशों और इसी तरह की दीगर देर से हज़म होने वाली ग़िज़ाओं नीज़ आइस्क्रीमों, कोला मशरूबों और ठन्डे ठन्डे शरबतों वगैरा के इस्ति’माल से परहेज़ कीजिये। **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मोटापे समेत बहुत सारी बीमारियों के साथ साथ मसूड़ों से आने वाला खून भी बन्द हो जाएगा। इस की तफ़सीली मा’लूमात के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत ज़िल्द अव्वल के बाब पेट का कुफ़ले मदीना का मुता-लआ कीजिये।

पेशाब में जलन के 4 इलाज

﴿1﴾ पेशाब में जलन हो या रुक कर बार बार आता हो

फरमाने मुस्तफ़ा ﷺ : على الله تعالى عليه و اله وسلم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

इस के लिये तिल के लड्डू मुफ़ीद हैं बाज़ार में आम तौर पर पोलिश वाले तिल मिलते हैं, पोलिश करने से तिल, चावल, दालों वगैरा के हयातीन (VITAMINS) को शदीद नुक़सान पहुंचता है, तेल के कारख़ाने से बिगैर पोलिशी के तिल मिल सकते हैं, हो सके तो घर ही पर गुड़ की चाशनी बना कर लड्डू तय्यार कर लीजिये ﴿2﴾ गर्म दूध में शकर और अस्ली घी डाल कर पीने से पेशाब की जलन, रुकावट और दर्द में फ़ाएदा होता है ﴿3﴾ सो ग्राम दूध में सिर्फ़ एक ग्राम खाने का सोडा डाल कर दिन में दो मरतबा पीने से पेशाब खुल कर आता और जलन दूर होती है ﴿4﴾ “जव शरीफ़” उबाल कर उस का पानी पीने से पेशाब साफ़ आता और जलन दूर होती है।

पेशाब का इलाज

बार बार और वोह भी ज़ियादा मिक्दार में पेशाब आना और ख़ूब प्यास लगना ज़ियाबीतुस (DIABETIC) की अलामात हैं। इस के लिये ख़ालिस हल्दी बारीक पिसी हुई सुब्ह व शाम चार चार माशा (या'नी तक़रीबन चार चार ग्राम) ताज़ा पानी से इस्ति'माल कीजिये और अल्लाह عزّوجلّ के फ़ज़लो करम से इस ब ज़ाहिर मा'मूली नज़र आने वाली दवा की ब-र-कतों का नज़्ज़ारा कीजिये।

बार बार पेशाब आने के 5 इलाज

﴿1﴾ “ज़ियाबीतुस” न होने के बा वुजूद अगर बार बार

पेशाब आ रहा हो तो “उड़द की दाल” चन्द घन्टे भिगो कर नर्म

फरमाने मुस्तफा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरूदे पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी । (अरवाक)

कर के पीस कर हस्बे ज़रूरत शक्कर डाल कर अस्ली घी में भून लीजिये । येह हल्वा मुनासिब मिक्दार में सात दिन तक रोज़ाना तीन बार खाइये । साथ में रोटी और दही खाना ज़ियादा मुफ़ीद है ﴿2﴾ रोज़ाना सुब्ह व शाम एक चम्मच तिल और एक चम्मच शहद मिला कर ख़ूब चबा कर खाइये । اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ पेशाब मा'मूल पर आ जाएगा ﴿3﴾ रोज़ाना रात को तीन बादाम पानी में भिगो दीजिये और सुब्ह छिल्के उतार कर नहार मुंह खा लीजिये ﴿4﴾ सर्दी की वजह से बार बार पेशाब आता हो तो बारीक पीसी हुई दारचीनी दो माशा (या'नी तकरीबन दो ग्राम) दूध से इस्ति'माल कीजिये, اِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ मुफ़ीद पाएंगे ﴿5﴾ “मा'जूने फ़लासफ़ा” बार बार पेशाब आने बल्कि पेशाब की मुख़्तलिफ़ बीमारियों के लिये मुफ़ीद है । (हकीम के मश्वरे से इस्ति'माल कीजिये) पानी और चाय एक साथ न पियें । चाय बहुत ही कम पियें कि चाय पीने से पेशाब भी ज़ियादा आता है और येह गुर्दे के लिये भी मुज़िर है । (दूध वाली चाय का ज़ियादा इस्ति'माल मोटापा लाता और चीनी वाली चाय का इस्ति'माल शूगर को बढ़ाता है)

पेशाब रुक रुक कर आने के 4 इलाज

﴿1﴾ मुनासिब मिक्दार में मूली का रस पीने से पेशाब खुल कर आता है ﴿2﴾ ताज़ा छाछ में गुड़ डाल कर पीने से पेशाब की

फरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (अबुसल)

रुकावट दूर होती है बल्कि अगर पेशाब बन्द हो गया हो तो येह पीने से **﴿3﴾** आ जाएगा रात को गेहूं भिगो कर रख दीजिये और सुब्ह पीस कर **शकर** मिला कर **हल्वा** बना लीजिये इस का इस्ति'माल भी पेशाब की रुकावट को दूर करता है **﴿4﴾** **इलाएची और सूंठ** (या'नी खुश्क अदरक) थोड़ी सी हम वज़न पीस लीजिये फिर नमक मिले हुए पानी में डाल कर पीने से **﴿5﴾** पेशाब खुल कर आ जाएगा ।

पेशाब में खून

अगर शूगर न हो तो ख़ूब गन्ने का रस पियें, पेशाब की रुकावट और खून आना सब ख़त्म **﴿6﴾** । दौलत कमाने के शौक में आजकल उमूमन गन्ने के रस में बर्फ़ का पिघला हुवा पानी काफ़ी मिक्दार में मिलाया जाता और सेकरीन⁽¹⁾ के ज़रीए इस को मीठा किया जाता है । लिहाज़ा आप ज़ियादा पैसे दे कर बिगैर बर्फ़ के गन्ने का ख़ालिस रस निकलवाइये ।

पेशाब में धात

सूंठ (या'नी सूखी अदरक) को पानी में जोश दे कर **पिसी हुई हल्दी** और गुड़ डाल कर पीने से पेशाब के साथ अगर धात आती है तो **﴿7﴾** बन्द हो जाएगी ।

لَدِينِهِ

(1) सेकरीन एक सफ़ेद रंग का सफूफ़ होता है जो कि मसनूई तौर पर बनाया जाता है और चीनी से तक्रीबन पांच सो गुना मीठा होता है

फरमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहाँ भी हो मुझ पर दुरुद पढ़ो कि तुम्हारा दुरुद मुझ तक पहुँचता है। (ग़ुरान)

नींद में पेशाब निकल जाना, जिरयान, उहतिलाम

गूंद एक माशा, कतीरा एक माशा, सबूस अस्पगौल तीन माशा आपस में मिला कर सुब्ह व शाम पी लें।

औरत के बार बार पेशाब आने का इलाज

आमला और शकर पक्के केले के साथ मिला कर इस्ति'माल करने से औरत को कस्रते पेशाब से नजात मिलती है।

अगर मर्द को शह्वत तंग करती हो तो.....

﴿1﴾ कसरत से रोज़े रखे ﴿2﴾ गोश्त कम और सब्जियां और फल ज़ियादा इस्ति'माल करे ﴿3﴾ मुलहट्टी तीन माशा, धनिया ख़ुश्क़ तीन माशा पीस कर पानी के साथ इस्ति'माल कीजिये 15 दिन तक।

मे'दा बीमार होने की पहचान

कूतुल कुलूब जिल्द 2 सफ़हा 316 पर नक़ल है कि खाने के बा'द (अलिफ़) “6 घन्टे से क़ब्ल अगर खाना निकल जाए तब भी मे'दा बीमार और अगर 24 घन्टे से ज़ियादा वक़्त तक ख़ारिज न हो तब भी समझ लीजिये कि मे'दा बीमार है।” (बा) जोड़ों का दर्द पेट की हवा रोकने का नतीजा है (जीम) जिस तरह नहर का चलता पानी अगर रोक दिया जाए तो नहर के कनारों को नुक़सान होता और कनारे टूट कर पानी बहने लगता है इसी तरह पेशाब रोकने से जिस्म को नुक़सान होता है।”

फ़रमाने मुस्तफ़ा عَلَيْهِ السَّلَام : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عزّ وجلّ उस पर सो रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

हाज़िमा कैसे दुरुस्त हो ?

वक़्त बे वक़्त खाते पीते रहने से मे'दा तबाह और हाज़िमा बरबाद हो जाता है। जब तक भूक न लगे उस वक़्त तक खाना सुन्नत नहीं। जब भी खाए तो भूक के तीन हिस्से कर ले, एक हिस्सा खाना, एक हिस्सा पानी और एक हिस्सा हवा। खाने के बा'द डेढ़ दो घन्टे तक न सोए, गोश्त कम और सब्ज़ी और फलों का इस्ति'माल ज़ियादा करे। हत्तल इम्कान रोज़ाना पौन घन्टा पैदल चले। चलने का बेहतर तरीक़ा येह है कि पहले 15 मिनट तेज़ तेज़ क़दम, फिर 15 मिनट दरमियाना, आख़िर में फिर 15 मिनट तेज़ क़दम चले। रात का खाना खा कर कम अज़ कम 150 क़दम चले। बद हज़्मी की वोह बीमारियां जो किसी दवा को जवाब नहीं देती **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दुरुस्त हो जाएंगी। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आप को 80% अमराज़ से तहफ़फ़ुज़ हासिल होगा जिन में हार्ट अटेक, फ़ालिज, लक्वा, दिमागी अमराज़, हाथ पाउं और बदन का दर्द, ज़बान और गले की बीमारियां, मुंह के छाले, सीने और फेफड़े के अमराज़, सीने की जलन, शूगर, हाई ब्लड प्रेशर, जिगर और पित्ते के अमराज़ वगैरा शामिल हैं।

(माखूज़ अज़ फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 608)

“भूक न लगती हो तो” दो इलाज

﴿1﴾ भूक बहुत कम लगती हो, खाना जल्द हज़्म न होता हो, खाने को जी न चाहता हो तो संगतरे की काशों पर बारीक पिसी हुई

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَيَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (त्रिभारिब)

सूठ या'नी सूखी हुई अदरक और काला नमक छिड़क कर खाइये।

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ सात दिन तक येह खाने से भूक पहले के मुक़ाबले में बढ़

जाएगी ﴿2﴾ अदरक काट कर छोटी छोटी टुकड़ियां बना लीजिये और

उस पर नमक छिड़क कर एक या दो ग्राम खा लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

चमक कर भूक लगेगी, गेस ख़ारिज होगी और कब्ज़ दूर होगी।

बद हज़मी के दो म-दनी इलाज

﴿1﴾ जिस शख्स को बद हज़मी की शिकायत हो और वोह

नीचे दी हुई इन दो आयाते करीमा को पढ़ कर अपने हाथ पर दम

कर के उसे पेट पर फ़ैरे और खाने वगैरा पर दम कर के खाना खाया

करे إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ बद हज़मी की शिकायत दूर हो जाएगी। आयते

मुबा-रका येह है :

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنتُمْ

تَعْمَلُونَ ﴿٣٧﴾ إِنْ كُنَّا لَكُمْ بَعْزَى

الْمُحْسِنِينَ ﴿٣٨﴾ (प २९ المرسल ६३, ६४)

तर-ज-मए कन्जुल ईमान : खाओ

और पियो रचता हुवा अपने आ'माल

का सिला बेशक नेकों को हम ऐसा

ही बदला देते हैं।

﴿2﴾ इमाम कमालुद्दीन दमैरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي बा'ज उ-लमाए किराम से

नक़ल करते हैं : जिस ने खाना ज़ियादा खा लिया और बद हज़मी का

ख़ौफ़ हो वोह अपने पेट पर हाथ फ़ैरता हुवा तीन मरतबा येह कहे :

फरमाने मुस्तफा ﷺ : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (हाम)

اَللّٰیْلَةُ لَیْلَةُ عِیْدِیْ یَا کَرِشِیْ

तरजमा : ऐ मेरे मे'दे आज की रात मेरी

وَرَخِیَ اللّٰهُ عَنْ سَیِّدِیْ اَبِیْ

عَزَّ وَجَلَّ ईद की रात है और अल्लाह

राजी हो हमारे सरदार हज़रते अबू

عَبْدُ اللّٰهِ الْقَرِشِیْ -

अब्दुल्लाह क-रशी⁽¹⁾ से।

और अगर दिन का वक़्त हो तो اَللّٰیْلَةُ لَیْلَةُ عِیْدِیْ की जगह
कहे। اَلْیَوْمُ یَوْمُ عِیْدِیْ

(حیاء الحیوان الکبریٰ ج ۱ ص ۶۰, 609, जि. 1, स. 609, ६१०)

गेस और बद हज़मी का देशी इलाज

अगर पेट में हवा भर जाती हो, अफारा या'नी हवा के सबब पेट फूल जाता हो तो पिसी हुई ख़ालिस हल्दी 10 रती (या'नी एक ग्राम से मा'मूली ज़ाइद) और नमक 10 रती (या'नी एक ग्राम से मा'मूली ज़ाइद) गर्म पानी से इस्ति'माल कीजिये। हवा ख़ारिज हो कर اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ पेट हल्का हो जाएगा। कई रोज़ तक इस्ति'माल करने से बद हज़मी भी اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ दूर हो जाएगी।

हाजिमे का मन भाता इलाज

काली मिर्च, काला जीरा और नमक बारीक पीस कर एक बोटल में महफूज़ कर लीजिये, तरबूज़ पर छिड़क कर इस्ति'माल

لَا یَنْهَ (1) सय्यिदी अबू अब्दुल्लाह क-रशी हाशिमि عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِیْ अकाबिर औलियाए मिस्र से हैं, सय्यिदुना गौसुल आ'ज़म رَحِمَیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के ज़माने में सोलह सत्तरह साल के थे 6 जुल हिज्जा 599 सि.हि. को बैतुल मुक़द्दस में इत्तिकाल फ़रमाया।

(फ़तावा अफ़रीक़ा, स.173)

फरमाने मुस्तफा عَلَيْهِ السَّلَامُ : जिस ने मुझ पर रोज़े जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (तर्माज़)

कीजिये। इस तरह तरबूज की लज़्ज़त में भी इज़ाफ़ा हो जाएगा और वोह हाज़िमे की बेहतरीन दवा साबित होगा और भूक भी चमक उठेगी। मेरे आका आ'ला हज़रत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ रिवायत नक़ल करते हैं : “खाने से पहले तरबूज खाना पेट को ख़ूब धो देता है और बीमारी को जड़ से ख़त्म कर देता है।” (फ़तावा र-जविय्या, जि.5, स.442) तरबूज के मुकम्मल छिल्लके का या धारियां या गोल धब्बे हों तो उन का सब्ज़ रंग जितना गहरा होगा उतना ही إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ अन्दर से लाल और मीठा निकलेगा। कहते हैं : तरबूज पर हल्का सा हाथ मारने पर मध्धम सी आवाज़ आना उस के उम्दा और पक्के होने की अ़लामत है।

हाज़िमा दाश् चटनी बनाने का तरीक़ा

रोज़ाना खाने के साथ इस चटनी का हाज़िमा वगैरा के लिये इस्ति'माल मुफ़ीद है ﴿1﴾ सुर्ख़ टमाटर 50 ग्राम ﴿2﴾ अदरक 50 ग्राम ﴿3﴾ लहसन 50 ग्राम ﴿4﴾ एक अ़दद लीमूं का रस ﴿5﴾ हरी मिर्च 25 ग्राम ﴿6﴾ जीरा सफ़ेद 25 ग्राम ﴿7﴾ पोदीना एक गड्डी ﴿8﴾ हल्दी 25 ग्राम ﴿9﴾ नमक हस्बे ज़ाएक़ा

क़ब्ज़ के तीन अ़स्बाब

﴿1﴾ क़ुरसी की पुश्त या दीवार वगैरा से टेक लगा कर या ﴿2﴾ खड़े खड़े या ﴿3﴾ सुवारी पर बैठ कर खाना खाने से बद हज़्मी होती है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْهَيْ وَتَسْلَم : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह عز وجل तुम पर रहमत भेजेगा
(अबुल मन्सूर)

“ढिल मढ़ीना बना लिया हम ने” के सत्तरह हुस्फ़ की निश्बत से कब्ज़ के 17 इलाज

अगर कब्ज़ रहती हो तो ﴿1﴾ अपना हाज़िमा दुरुस्त रखिये ।

मुनासिब मिक्दार में बीज समेत पक्के अमरूद (कच्चे अमरूद कब्ज़

बढ़ाते हैं) या ﴿2﴾ मुनासिब मिक्दार में पपीता खा लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

पेट साफ़ हो जाएगा ﴿3﴾ अगर दाइमी कब्ज़ हो तो आप का डॉक्टर

इजाज़त दे तो हर दो या तीन माह बा'द पांच दिन तक सुब्ह व शाम

एक एक टिकिया ग्रामेक्स 400 मिली ग्राम GRAMEX400mg

(Metronidazole) इस्ति'माल कीजिये । इसे कब्ज़, बद हज़्मी वगैरा

अमराज़ और पेट की इस्लाह के लिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ बेहतरीन दवा

पाएंगे । मगर जब भी येह टिकिया लेना शुरू करें तो मुसल्सल पांच दिन

पूरे करना ज़रूरी है । ख़ाली पेट में भी ले सकते हैं ﴿4﴾ जिस वक़्त

कब्ज़ हो उस दिन दो एक वक़्त खाने का फ़ाका कीजिये ﴿5﴾

नहार मुंह एक गिलास नीम गर्म या चार गिलास पानी पी लीजिये

﴿6﴾ सोते वक़्त एक गिलास नीम गर्म पानी में थोड़ा सा नमक

घोल कर पी लीजिये ﴿7﴾ सोते वक़्त एक या दो संगतरे खा

लीजिये ﴿8﴾ थोड़ी सी सोंफ़ दूध या हल्के गर्म पानी से ले

लीजिये ﴿9﴾ सादा या नीम गर्म पानी में लीमूं निचोड़ कर सुब्ह

व शाम इस्ति'माल कीजिये ﴿10﴾ एक गिलास नीम गर्म पानी में दो

चम्मच ख़ालिस शहद, एक चम्मच लीमूं और एक चम्मच अदरक

का रस हल कर के पी लीजिये ﴿11﴾ “अमलतास” के थोड़े से फूल

फरमाने मुस्तफा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللهُ وَسَلَّمَ : मुझ पर कसरत से दुरुद पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरुद पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़िफ़रत है। (बुख़ारी)

गोश्त में पका कर कुछ दिन तक खाने से **दाइमी कब्ज़** में इफ़ाका (कमी) हो जाएगा ﴿12﴾ रात को **तीन खजूरें** पहले धो लीजिये फिर भिगो कर रखिये और सुब्ह उसी पानी में मसल कर छान कर पी लीजिये (खजूरें और हर तरह के फल और सब्जियां धो कर ही इस्ति'माल करने चाहिएं ता कि मैल कुचैल, मखिख्यों की बीट और खुसूसन जरासीम कुश दवा के अ-सरात धुल जाएं) ﴿13﴾ पक्के **टमाटर का रस** एक कप पी लीजिये ﴿14﴾ अस्पगोल की भूसी एक या तीन चम्मच (जरूरतन कमी बेशी कर सकते हैं) सादा पानी के साथ फांक लीजिये। **अस्पगोल** रोज़ रोज़ लें तो फ़ाएदा नहीं होता लिहाज़ा अगर अक्सर कब्ज़ रहती हो तो हफ़्ते में एक बार ले लीजिये। काम न चले वक्फ़ा मज़ीद बढ़ा दीजिये ﴿15﴾ **कच्चा केला** उबाल कर खाना कब्ज़ के लिये बेहद मुफ़ीद है ﴿16﴾ मा'मूल के ख़िलाफ़ "सिहहत कुश" ग़िज़ाएं या किसी सरमाया दार की दा'वत में हिर्स के मारे बहुत ज़ियादा मुरग़न और सकील (या'नी वज़्नी) या'नी "बीमार कुन" ग़िज़ाएं खाने की भूल कर बैठें तो घर आ कर तीन चार चम्मच "अस्पगोल पानी के साथ फांक लीजिये। शायद नुक्सान में थोड़ी सी कमी आए। मगर येह ज़ेहन तो बना लीजिये कि इस तरह की **दा'वतों के खाने** उमूमन सिहहत के दुश्मन होते हैं ﴿17﴾ हाज़िमा दार चूरन घर में रखा कीजिये। अगर कभी कब्ज़ हो जाए, ज़ियादा घी तेल वाली ग़िज़ा, देग की मसा-लहा दार बिरयानी, बिल खुसूस र-मज़ानुल मुबारक या बक़र ईद में अगर लालच में

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ पढ़ता है अल्लाह عَزَّوَجَلَّ उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उहुद पहाड़ जितना है । (مہارزان)

पढ़ कर ज़ियादा कबाब समोसे वगैरा खा डालें तो पेट में गड़बड़ का इन्तिज़ार किये बिगैर चूरन फांक लीजिये । (मक-त-बतुल मदीना का मत्बूआ मुख्तसर रिसाला “कबाब समोसे के नुक्सानात” हदिय्यतन हासिल कर के ज़रूर पढ़ लीजिये हैरत अंगेज़ मा'लूमात हासिल होंगी । اِنْ شَاءَ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ)

“रुज़ा” के तीन हुस्नफ़ की निश्चत से बेहोशी के 3 इलाज

﴿1﴾ आ-यतुल कुर्सी का येह हिस्सा, لَا تَأْخُذْہٗ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ¹, पढ़ कर पानी पर दम कर के मुंह पर छींटे मारिये और रोज़ा न हो तो हल्क में भी चन्द क़तरे टपकाइये । फिर कोई रुकावट न हो तो हिलाने जुलाने, बिठाने और ज़रूरतन अपने हाथ से मरीज़ की आंखें खोलने से اِنْ شَاءَ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ होश आ जाएगा ﴿2﴾ पीसी हुई सियाह मिर्च के चन्द ज़र्रे बेहोश आदमी के नाक के नथनों में डाल कर फूंक मारिये । अगर छींकें शुरूअ हो गईं तो اِنْ شَاءَ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ होश आ जाएगा ﴿3﴾ पियाज़ के चार टुकड़े कर के सुंघाने से भी اِنْ شَاءَ اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ होश आ जाएगा । (इलाज नम्बर 2 और 3 मस्जिद के अन्दर न कीजिये)

“आबे कौअर” के छ हुस्नफ़ की निश्चत से जोड़ों के दर्द के 6 इलाज

﴿1﴾ يَا غِبِّی रीढ़ की हड्डी, घुटनों, जोड़ों वगैरा जिस्म में

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : جس نے کتاب میں मुझ पर दुरुदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिस्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे। (عمران)

कहीं भी दर्द हो, चलते फिरते उठते बैठते पढ़ते रहिए **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दर्द जाता रहेगा ﴿2﴾ रोज़ाना दो भुने हुए **आलू** (छिलके समेत) और थोड़ी सी **अदरक** मिला कर खा लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** **जोड़ों के दर्द** में फ़ाएदा होगा ﴿3﴾ **मौसम्बी** के आधे गिलास ख़ालिस रस में एक चम्मच **मछली का तेल** (मेडीकल स्टोर से मिल सकता है) मिला कर पहली बार मुसल्सल चार दिन तक रोज़ाना दिन के ग्यारह बजे पियें। इस के बा'द चार माह तक हर 15 दिन के बा'द मुसल्सल दो दिन उसी वक़्त में पियें। येह इलाज सर्दियों में ज़ियादा मुनासिब है। इस इलाज के दौरान ठन्डी तासीर वाले फल म-सलन मीठे, मौसम्बी, अनन्नास और अनार वगैरा ज़ियादा इस्ति'माल कीजिये ﴿4﴾ सुब्ह नहार मुंह **घी कवार का हल्वा** खाइये। (येह बाज़ार में मिल सकता है) ﴿5﴾ पियाज़ का रस और राई का तेल मिला कर जोड़ों पर मालिश करें। इस से सुस्त जोड़ खुल जाएंगे और **بِفَضْلِهِ تَعَالَى** आप राहत महसूस फ़रमाएंगे। ﴿6﴾ अगर डॉक्टर इजाज़त दे तो रोज़ाना एक गोली नियोरोमेट (NEUROMET) खाने के बा'द पानी से इस्ति'माल कीजिये जोड़ों के दर्द के लिये मुजर्रब⁽¹⁾ है। डॉक्टर के मश्वरे से रोज़ाना एक से ज़ियादा भी ले सकते हैं और अगर दर्द की शिद्दत कम हो तो नागा से भी ली जा सकती है। इस तरह की दवाएं बिला नागा मुसल्सल न खाई जाएं बीच में कुछ दिन **لَا يَنْهَى**

(1) पट्टों के लिये कुव्वत बख़्श है और ज़िम्न इस से जोड़ों के दर्द को भी फ़ाएदा पहुंचता है।

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुद पाक पढ़ा अल्लाह रज़ू उर उस पर दस रहमते भेजता है। (مسلم)

वक्फ़ा कर लेना चाहिये म-सलन अगर मुसलसल 12 दिन इस्ति'माल कर ली तो 7 या 12 दिन तक वक्फ़ा कर लिया फिर ज़रूरत महसूस हुई तो शुरू कर दे।

हड्डी जोड़ने के लिये

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ ﴿١٢٩﴾
(پ 11 توبه 129) तीन दिन तक अव्वल आखिर दुरुद शरीफ़ के साथ एक एक बार पढ़ कर बार बार दम कीजिये। **تूटी** या **फटी** हुई **हड्डी** जुड़ जाएगी।

नक्सीर फूटने का इलाज

अगर किसी की नक्सीर फूट जाए और खून बहने लगे तो शहादत की उंगली से पेशानी पर से بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ लिखना शुरू कर के नाक के आखिर पर ख़त्म करे **خُون** **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बन्द हो जाएगा।

नाक की हड्डी बढी हुई हो तो...

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِي خُسْرٍ ﴿٢٠﴾ (العصر 20) नाक या बदन में कोई सी भी हड्डी बढी हुई हो तो 92 दिन तक रोज़ाना रात को सोने से पहले अव्वल आखिर दुरुद शरीफ़ के साथ उपर दी हुई आयते करीमा 100 मरतबा पढ़ कर पानी पर दम कर के पी लीजिये।

कान के दर्द के दो इलाज

﴿1﴾ ख़ालिस शहद या तुलसी के तेल के चन्द क़तरे कान में

फ़रमाने मुस्फ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

टपकाने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** कान के दर्द में राहत मिलेगी ﴿2﴾ अदरक के रस का एक क़तरा कान में टपकाने से दर्द व कसक **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** दूर होंगे।

कान में कीड़ा घुस जाए तो.....

कान में अगर कोई कीड़ा चला जाए तो सरसों का तेल डालने से **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** मर जाएगा।

बुख़ार के इलाज की हिक्कायत

मन्कूल है, एक शख्स को बुख़ार आ गया, उस के उस्ताज़े मोहतरम हज़रते सय्यिदुना शैख़ उमर बिन सईद **رَحْمَةُ اللهِ الْمُعِيد** इयादत के लिये तशरीफ़ लाए, जाते हुए एक ता'वीज़ इनायत कर के फ़रमाया : इस को खोल कर मत देखना। उन के जाने के बा'द उस ने ता'वीज़ बांध लिया, फ़ौरन बुख़ार जाता रहा। उस से रहा न गया, खोल कर जो देखा तो **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** लिखा था। दिल में वस्वसा आया, येह तो कोई भी लिख सकता है ! अक्कीदत में कमी आते ही फ़ौरन बुख़ार लौट आया। घबरा कर शैख़ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर ग़-लती की मुआफ़ी चाही। उन्होंने ने ता'वीज़ बना कर अपने दस्ते मुबारक से बांध दिया, बुख़ार फ़ौरन चला गया। अब की बार देखने की मुमा-न-अत न फ़रमाई थी मगर डर के मारे खोल कर न देखा। बिल आख़िर साल भर के बा'द जब खोल कर

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पड़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (ابن ن)।

देखा तो वोही بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ तहरीर थी । **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی** की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! वाक़ेई بِसْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ की बड़ी ब-र-कतें हैं और इस में बीमारियों का इलाज भी । इस हिकायत से दर्स मिला कि बुजुर्गाने दीन رَحْمَتُ اللّٰهِ الْبَیِّنَاتِ अगर किसी मुबाह बात से भी मन्अ कर दें तो समझ में न आने के बा वुजूद भी उस से बाज़ रहना चाहिये । येह भी दर्स मिला कि ता'वीज़ खोल कर नहीं देखना चाहिये कि इस से ए'तिकाद मु-त-ज़लज़िल होने का अन्देशा रहता है । फिर इस की तह करने के मख्सूस तरीक़े के साथ साथ लपेटने के दौरान बा'ज़ अवकात कुछ पढ़ा हुवा भी होता है । लिहाज़ा खोल कर देखने से उस के फ़वाइद में कमी आ सकती है ।

“**या मुखफ़ा**” के सात हुरूफ़ की निश्बत से

बुख़ार के 7 म-दनी इलाज

﴿١﴾ لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَيْسًا وَلَا مُمْهِرًا ﴿٢﴾ (तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उस में धूप देखेंगे न ठिठर(1)) (پ۱۹۹ التذکرہ ۱۳) येह आयते करीमा सात बार

(1) या'नी सर्दी

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरूद पाक पढ़ा उसे क़ियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी । (مُنْذِرُونَ)

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कीजिये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** बुख़ार की शिदत में नुमायां कमी महसूस होगी और मरीज़ सुकून महसूस करेगा ﴿2﴾ हज़रते सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाते हैं, सू-रतुल फ़ातिहा 40 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर पानी पर दम कर के बुख़ार वाले के मुंह पर छींटे मारिये **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** बुख़ार चला जाएगा ﴿3﴾ सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बुख़ार था तो हज़रते सय्यिदुना जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने येह दुआ पढ़ कर दम किया था :

بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ يُؤْذِيْكَ مِنْ شَرِّ كُلِّ نَفْسٍ
اَوْ عَيْنٍ حَاسِدٍ ط اللّٰهُ يَشْفِيْكَ بِسْمِ اللّٰهِ اَرْقِيْكَ

(तरजमा : **اَللّٰهُ** के नाम से आप पर दम करता हूं हर उस चीज़ से जो आप को अज़ियत पहुंचाए हर नफ़्स की बुराई से या हर हसद वाली आंख से । **اَللّٰهُ** आप को शिफ़ा अता फ़रमाए । मैं आप पर **اَلलّٰहु** बुख़ार के मरीज़ को अ-रबी में दुआ (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़) पढ़ कर दम कर दीजिये ﴿4﴾ बुख़ार में मुब्तला शख्स येह दुआ पढ़े :

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ كُلِّ عَرَقٍ نَعَّارٍ وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ

(तरजमा : क़िब्रियाई वाले **اَلलّٰहु** के नाम से मैं हर जोश मारने वाली रग की बुराई से और आग की तपिश के शर से, अ-जमत वाले रब

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

﴿5﴾ हदीसे (ترمذی ج ٤ ص ٢٠ حديث ٢٠٨٢) की पनाह चाहता हूँ) (عَزَّ وَجَلَّ) पाक में है : जब तुम में से किसी को बुख़ार आ जाए तो उस पर तीन दिन तक सुब्ह के वक़्त ठण्डे पानी के छींटे मारे जाएं ।

﴿6﴾ हदीसे मुबारक में है : बुख़ार जहन्म के जोश से है, इस को पानी के ज़रीए ठण्डा करो ।

((بخاری ج ٢ ص ٣٩٦ حديث ٣٢٦٣))

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلِيهِ رَحْمَةُ الْحَنَان के फ़रमाने वाला शान का खुलासा है : अहले अरब को अक्सर “सफ़ावी बुख़ार” आते थे जिन में गुस्ल मुफ़ीद होता है । हम लोगों को जो कि अ-जमी या’नी ग़ैरे अरब हैं । तबीबे हाज़िक (या’नी माहिरे तबीब) के मश्वरे के बिग़ैर गुस्ल के ज़रीए बुख़ार का इलाज नहीं करना चाहिये क्यूं कि हमें अक्सर वोह बुख़ार होते हैं जिन में गुस्ल नुक्सान देह है, इस से नुमूनिया का ख़तरा होता है । हज़रते सय्यिदुना अल्लामा अली क़ारी عَلِيهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْبَارِي “मिरकात” में फ़रमाते हैं : एक शख़्स ने हदीसे पाक का तरजमा पढ़ कर बुख़ार में गुस्ल के ज़रीए इलाज किया तो उस को नुमूनिया हो गया और बड़ी मुश्किल से उस की जान बची तो वोह हदीसे पाक ही का मुन्किर हो गया, हालां कि उस की अपनी जहालत थी । (मुलख़्ख़स अज़ मिरआत, जि. 2, स. 429, 430) इस से येह भी सीखने को मिला कि अवामुन्नास को तरजमे के साथ साथ तफ़्सीरे कुरआन व शुरूहे अह्मदीस भी पढ़नी चाहिएं ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोने जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा । (अल-असाल)

हड्डियों से इलाज के म-दनी फूल

हड्डियां भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मत हैं और इन में भी गिज़ाइयत रखी गई है। जो लोग घर में पकाने के लिये बिगैर हड्डी का गोश्त ही ख़रीदते हैं वोह अपने साथ साथ अहले ख़ाना को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक ने'मत से महरूम करते हैं। यकीनन **अल्लाह** गफ़फ़ार عَزَّوَجَلَّ ने कोई चीज़ बेकार नहीं बनाई। हड्डियां गिज़ा के साथ साथ दवा का काम भी देती हैं। अतिब्बा बा'ज़ मरीज़ों को **हड्डियों की यख़नी** पीने का मशवरा देते हैं। बल्कि आप ने भी बारहा हड्डियों की यख़नी पी होगी। अलबत्ता ख़ालिस बोटी का सूप कभी नहीं पिया होगा ! हड्डियां बहुत अहम हैं, तिब्बी तरीक़े पर हड्डियों से हासिल शुदा अरक के इन्जेक्शन भी मरीज़ों को लगाए जाते हैं। **गाय के सींग** पीस कर खाने में मिला कर चौथिया वाले (या'नी जिस को हर चौथे दिन बुख़ार आता हो) को खिलाने से बि इज़्जिल्लाह عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा हासिल हो जाती है। **गाय के बाल** जला कर पानी में घोल कर पी लेने से **दांतों का दर्द** जाता रहता है। **कबूतर** जो कि हलाल परिन्दा है उस की हड्डी जला कर ज़ख़म पर लगाने से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के फज़ल से ज़ख़म ठीक हो जाता है।

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हा रत है। (ابو یس)۔

“रुहीम” के चार हुरफ़ की निश्बत से पेट के दर्द के 4 इलाज

﴿1﴾ हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि एक बार मैं नमाज़ पढ़ कर सरकारे नामदार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास बैठ गया, आप ने फ़रमाया : क्या तुझे पेट में दर्द है। अर्ज़ की : जी हां। फ़रमाया : “उठो और नमाज़ पढ़ो क्यूं कि नमाज़ में शिफ़ा है।”

(ابن ماجہ، ج ۴، ص ۹۸ حدیث ۳۴۵۸)

﴿2﴾ एक لَافِیْہَا عَزْلٌ وَلَا تُہْمُ عَنْہَا یُزْفُونُ¹ (پارہ ۲۳ سورۃ الصُّفّت آیت ۴۷) (2) बार, और अव्वल आख़िर एक मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ कर पानी या किसी खाने की चीज़ पर दम कर के इस्ति'माल कीजिये। اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ। पेट के दर्द में फ़ाएदा होगा। दूसरा कोई भी पढ़ कर दम कर के दे सकता है ﴿3﴾ अच्छी तरह पके हुए अनार के दानों पर नमक और काली मिर्च छिड़क कर ख़ूब चबा कर खा लीजिये اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ। पेट का दर्द काफ़ूर (रुख़्सत) होगा (ख़ूब चबा कर खाना ज़रूरी है) ﴿4﴾ रोज़ाना सुब्ह व शाम एक एक अन्डे की सिर्फ़ कच्ची सफ़ेदी निगल लिया करें اِنْ شَاءَ اللہُ عَزَّوَجَلَّ। पेट का दर्द और इस की अक्सर बीमारियां दूर होंगी।

لَا یُنہ

(1) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : न उस में खुमार है और न उस से उन का सर फिरे।

फ़रमाने मुस्फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (भरान)

“हबीब” के चार हुरफ़ की निश्चत से बच्चों के पेट के दर्द के 4 इलाज

बच्चों के पेट के दर्द की अलामत यह है कि वोह बार बार तांगों को सुकेड़ते और चीखते हैं। जब ऐसा हो तो ﴿1﴾ पियाज़ को आग में सेंक कर पानी निचोड़ लीजिये और 3 ग्राम पिला दीजिये। **पेट के दर्द में आराम आ जाएगा या** ﴿2﴾ पेट की सेंकाई कीजिये ﴿3﴾ शहद चटाइये या ﴿4﴾ अन्डे की सिर्फ़ कच्ची सफ़ेदी थोड़ी थोड़ी वक्फ़े से पिलाइये, मे'दे की गर्मी से पक जाएगी और जरासीम वगैरा का खातिमा कर देगी। और **पेट** **की तक्लीफ़ दूर हो जाएगी।**

पेट की जलन के दो इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना पांच खजूरें (धो कर) रात को पानी में भिगो लीजिये, सुब्ह कुचल कर शहद में मिला कर नहार मुंह पी लीजिये। (येह इलाज सात दिन तक जारी रखिये) **ठन्डक हो जाएगी** ﴿2﴾ मुनासिब मिक्दार में ग्लूकोज़ पानी में घोल कर दिन में दो या तीन बार पी लीजिये। **पेट में ठन्डक हो जाएगी।**

पेचिश का इलाज

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ اِنَّ اللّٰهَ کَانَ بِکُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمًا ﴿٣٢﴾ (پ ۵ النساء ۳۲)

तुलूए आप्ताब से कब्ल अव्वल आखिर दुरूद शरीफ़ के साथ एक मरतबा पढ़ कर एक गिलास पानी पर दम कर के नहार मुंह पी लीजिये

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

और आधे घन्टे तक कोई भी खाने पीने की चीज़ इस्ति'माल मत फ़रमाइये। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّ وَجَلَّ पुरानी पेचिश भी ख़त्म हो जाएगी। (इलाज की मुद्दत 21 दिन)

पेट में कीड़े

पेट में कीड़े हों तो शहद में अज्वाइन मिला कर चाट लीजिये या ज़ीरे का जोशांदा या'नी ज़ीरा उबाल कर उस का पानी पी लीजिये।

कै के फ़वाइद व नुक़शानात

﴿1﴾ कै से मे'दे की सफ़ाई होती है। मशहूर तबीब "बक़रात" का कहना है कि हर शख्स को महीने में दो बार कै करना चाहिये ताकि एक बार अगर कुछ रह जाए तो दूसरी बार में निकल आए ﴿2﴾ ज़ियादा कै आना नुक़सान देह है कि इस से सीने और मे'दे में दर्द पैदा होता है ﴿3﴾ जब कै आने लगे तो उस को ज़बर दस्ती न रोका जाए कि सख़्त अमराज़ पैदा होने का ख़तरा है, म-सलन इस से फ़ौते बढ जाते हैं।

मस्अला : खाना या पानी या सफ़रा (या'नी पीले रंग के कड़वे पानी) की मुंह भर कै (या'नी जो बिला तकल्लुफ़ न रोकी जा सके) इन्सान की पेशाब की तरह नापाक होती है, की छींटों उस से अपने कपड़े वगैरा को बचाना ज़रूरी है। ऐसी कै वुजू तोड़ देती है और रोज़ा याद होने की सूरत में क़स्दन करने से रोज़ा भी टूट जाता है जब कि मुंह भर कै हो और इस में खाना, पानी या सफ़रा आए। बल्ग़म की मुंह भर

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्नूस तरीन शख्स है। (त्रिभारिब)

कै से वुजू और रोज़ा नहीं टूटता। कै के तफ़सीली अहकाम सीखने के लिये फ़ैज़ाने सुन्नत जिल्द अव्वल सफ़हा 1047 ता 1050 का मुता-लआ बेहद ज़रूरी है।

“ग़रीबे बवाब” के झाठ हुरूप की निश्बत से कै बन्द करने के 8 इलाज

﴿1﴾ किसी खाने या पीने की चीज़ पर सू-रतुत्तारिक पढ़ कर दम कर के खा या पी लीजिये ﴿2﴾ وَقِيلَ يَا رَأْسُ الْبُلْعَى مَاءُكَ وَلَا يَسَاءُ أَقْلَعِي وَغِيصُ الْمَاءِ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوْتُ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا (پ ۱۲ هود ۴۴) यह आयत कागज़ पर लिख कर नहार मुंह सात रोज़ तक पिलाइये। (चाहे तो एक ही बार में सात ता'वीज़ात लिख लीजिये और रोज़ाना एक एक पानी में डाल कर पिला दीजिये) ﴿3﴾ आधे कप पानी में एक लीमूं निचोड़ लीजिये और थोड़ा सा नमक डाल कर पी लीजिये ﴿4﴾ एक छोटी इलाएची और अन्जीर चबा कर खा लीजिये ﴿5﴾ हरे धनिये का अरक़ निकाल कर दिन में चार मरतबा एक एक चम्मच पी लीजिये ﴿6﴾ बर्फ़ चूसिये ﴿7﴾ लीमूं काट कर पिसी हुई काली मिर्च और नमक छिड़क कर चूसिये ﴿8﴾ गर्म पानी में लोंग भिगो कर पीने से या मौसम्बी खाने से ज़च्चा⁽¹⁾ की कै **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** बन्द हो जाएगी।

पागल पन

यह मरज़ उमूमन नींद न आने या पेट की ख़राबियों के बाइस **لَدِينِهِ**
(1) जिस के पेट में बच्चा हो उस को “हामिला” कहते हैं जब कि बच्चा जनने के बा'द से खून बन्द होने तक औरत “ज़च्चा” कहलाती है।

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरूद पाक न पढ़े । (عام)

या कंवारों को शादी में रुकावट या مَعْدَالِلَه जलक़ (या'नी अपने हाथ के ज़रीए गुस्ल फ़र्ज करने की वजह) से हो जाता है। पागल पन के सबब आदमी अजीब अजीब ह-र-कतें करता, डरावनी आवाजें निकालता, बा'ज अवकात मार धाड़ करता और जो बातें पहले दिमाग़ से गुज़र चुकी होती हैं उन को दोहराता है। जब उस की आंखें सुख़् हो जाती हैं, गुराता है तो बसा अवकात तवह्हुमात (या'नी वहमों) के मारे लोग समझते हैं कि इस को जिन्नात के अ-सरात हो गए हैं ! अगर्चे शरीर जिन्नात भी परेशान करते हैं लेकिन इस की मख़्सूस अलामात होती हैं, हर मरीजे नफ़िसय्यात को ख़्वाह म ख़्वाह “आसेब ज़दा” क़रार नहीं दिया जा सकता।

पागल पन का इलाज

जुनून (पागल पन) के मरीज़ को काली हड़ का मोटा मोटा सुफूफ़ (चूरा) 6 ग्राम खिलाइये और एक पाव दूध में एक शहद का चम्मच हल कर के सू-रतुल फ़ातिहा सात बार अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ कर उस पर दम कर के पिला दीजिये, मरीज़ पर भी येही दम कीजिये और कोशिश कर के सुला दीजिये।

गन्ज के चार इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना जैत (या'नी जैतून शरीफ़ का तेल) सर में डाल कर गन्ज की ख़ूब मालिश कीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस तरह बन्द शुदा मसाम खुल जाएंगे और बाल उगने लगेंगे। मगर येह अमल बहुत दिनों

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَاسِعَةُ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमा दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे। (त्रिआल)

तक जारी रखना होगा ﴿2﴾ सर में पियाज़ का रस तेल की तरह डालने से जूओं का खातिमा हो जाता है नीज़ बीमारी से जो बाल झड़ चुके होते हैं दोबारा उग जाते हैं। (इस से सर में बदबू हो जाएगी, इस सूरत में मस्जिद का दाखिला हराम रहेगा। लिहाज़ा इस्लामी भाई सर अच्छी तरह धो कर बदबू ख़त्म कर के मस्जिद में हाज़िर हों) ﴿3﴾ दाढ़ी या सर के बाल झड़ते हों या गन्ज हो तो आठ चम्मच जैतून के गर्म किये हुए तेल में एक चम्चा अस्ली शहद और एक चम्चा बारीक पिसी हुई दारचीनी मिला लें फिर जहां के बाल झड़ते हो वहां ख़ूब मस्लें फिर अन्दाज़न पांच मिनट के बा'द धो लें या नहा लें। बचा हुआ तेल दोबारा भी इस्ति'माल कर सकते हैं। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** 12 दिन में फ़ाएदा नज़र आ जाएगा, मगर ता हुसूले शिफ़ा येह अमल जारी रखिये ﴿4﴾ कलौंजी पीस कर मेहंदी में मिला कर सर में लगाने से सर के बाल झड़ना बन्द होते हैं।

“रुब” के दो हुरफ़ की निस्बत से

कमजोरी के 2 इलाज

﴿1﴾ मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَانِ** के फ़रमाने आलीशान का खुलासा है : **तल्बीना** कमजोरी का बेहतरीन इलाज है इस को बनाने का तरीका येह है : दूध में (जव शरीफ़ या) गेहूं का आटा या भूसी डाल कर पतला पका लीजिये। और ज़रूरत के मुताबिक़ शहद डाल लीजिये। हस्बे ख़्वाहिश तनावुल फ़रमाइये। इस को अ-रबी में **तल्बीना** उर्दू में **लपटा** (राब)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा
(अबुनूर)।

और पंजाबी में सीरा कहते हैं खुसूसन बीमारी के बा'द हो जाने वाली कमज़ोरी के लिये बेहद मुफ़ीद है। येह बहुत हलकी ग़िज़ा है, ज़ूद हज़्म है, पेट में बोझ नहीं करता, दिल को कुव्वत बख़्शाता है, रन्जो ग़म और दिल की घबराहट को दूर करता है। (मिरआत, जि. 6, स. 17 मुलख़ब़सन)

﴿2﴾ भेंस के गर्म दूध में दो बड़े चम्मच शहद मिला कर रोज़ाना पीना जिस्मानी ताक़त बढ़ाने के लिये बेहद मुफ़ीद है।

रात का खाना खाने का फ़ाउदा

मीठे मीठे आक़ा मदीने वाले मुस्तफ़ा ﷺ का फ़रमाने सिद्दहत निशान है रात का खाना न छोड़ो चाहे एक मुठ्ठी खजूर ही क्यूं न हो क्यूं कि रात का खाना तर्क करना आदमी को ज़ईफ़ कर देता है। (अबुनूर ज ६, ५० हदीथ ३३५५)

मसाने की पथरी का इलाज

ख़रबूज़ा ख़ूब खाइये कि येह सर की खुश्की और ख़ारिश को दूर भगाता, जिस्म की गांठें गलाता, ख़ूब पेशाब लाता और मसाने की पथरी से नजात दिलाता है। ख़रबूज़ा और खजूर मिला कर खाना नबिय्ये करीम ﷺ से साबित है।

(श्माल त्रमज़ी स १२१ हदीथ १९०)

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है। (बाय़ुम्मी)

“ग़मै मद्धीबा” के सात हुरूफ़ की निश्बत से तेज़ाबिय्यत (सीने की जलन) के 7 इलाज

﴿1﴾ अगर मुवाफ़िक़ आए तो रोज़ाना दिन के वक़्त एक केला खा लीजिये। **﴿2﴾** हर तीसरे दिन तीन चम्मच अस्पगोल की भूसी पानी से फांक लीजिये। ख़ाली मुंह में अस्पगोल डालेंगे तो चिपकेगी लिहाज़ा पहले थोड़ा सा पानी मुंह में भर लीजिये इस के बा'द अस्पगोल डालिये **﴿3﴾** हफ़्ते में दो रोज़े रखिये, स-हरी में खाना कम खाइये। हो सके तो जुमुआ और हफ़्ता या जुमा'रात और जुमुआ रोज़ा रख लीजिये। मेरे आका आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान **ﷺ** फ़रमाते हैं : जुमुआ या'नी जब इस के साथ पन्जशम्बा (या'नी जुमा'रात) या शम्बा (या'नी हफ़्ता) भी शामिल हो मरवी हुवा कि दस हज़ार बरस के रोज़ों के बराबर है। (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 10, स. 653) **﴿4﴾** खीरा, ककड़ी, पत्तों समेत मूली, शल्जम, चुकन्दर, गाजर, और सेब खाइये। इन सब्जियों और सेब के न छिल्के उतारिये न ही उन को खुरचिये कि इस तरह अक्सर विटामिन्ज़ जाएअ हो सकते हैं, यूँ ही धो कर इस्ति'माल कीजिये **﴿5﴾** रोज़ाना कुल 12 गिलास पानी पिया कीजिये (गिज़ाओं के ज़रीए पेट में जाने वाला पानी भी 12 गिलास में शामिल है) **﴿6﴾** ठण्डे मशरूबात, अचार, मेदे की बनावटों, पिज़्ज़ों पराठों और मीठी डिशों वगैरा से हत्तल इम्कान परहेज़ कीजिये। नीज़ खाना कम खाइये, ख़्वाहिश बाक़ी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : صَلِّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दुरूद शरीफ़ पढ़ता है अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस के लिये एक कीरात अन्न लिखता और कीरात उहुद पहाड़ जितना है। (عیبارراق)

हो और हाथ रोक लीजिये। **﴿1﴾** **سِیْنَةِ** की जलन समेत कई बीमारियों से बचे रहेंगे **﴿7﴾** जिस वक़्त **سِیْنَةِ** में जलन मचे या तीखा पानी मे'दे से हल्क़ में आता महसूस हो। PEPTINIL नामी टिकिया पानी से ले लीजिये। **﴿2﴾** **سِیْنَةِ** बहुत मुफ़ीद पाएंगे। (डॉक्टर के मश्वरे से येह गोली इस्ति'माल फ़रमाइये)

“शिफ़ा” के तीन हुरूप की निश्बत से दमा के 3 इलाज

﴿1﴾ रोज़ाना तीन या पांच खजूरें (धो कर) खा कर ऊपर से गर्म पानी पी लीजिये **﴿1﴾** **سِیْنَةِ** बल्ग़म पतला हो कर निकल जाएगा और दमा में आराम मिलेगा **﴿2﴾** तीन खुश्क अन्जीर दूध में पका कर रोज़ाना सुबह और रात को इस्ति'माल करने से बल्ग़म और दमा से **﴿3﴾** **سِیْنَةِ** नजात मिलेगी **﴿3﴾** रोज़ाना गाजर का रस पीने से **﴿4﴾** **سِیْنَةِ** दमा में आराम मिलेगा।

“फ़ुहल” के तीन हुरूप की निश्बत से दमा के हम्ला करने के वक़्त के 3 इलाज

﴿1﴾ हल्दी और सूंठ (या'नी सूखी अदरक) का थोड़ा सा चूरन शहद के साथ ले लीजिये **﴿2﴾** **سِیْنَةِ** दमा में राहत मिल जाएगी **﴿2﴾** एक पका हुआ केला आग की लौ पर गर्म कीजिये फिर छील कर पिसी हुई काली मिर्च छिड़क कर खा लीजिये **﴿3﴾** दो चम्मच अदरक का रस शहद के साथ इस्ति'माल कीजिये।

फरमाने मुस्तफा ﷺ: جس نے کتاب میں مضمّن پر درود پاک لکھا تو جب تک میرا نام
 उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये इस्तिफ़ार करते रहेंगे। (طبرانی)

उंगली कट जाए तो

उंगली वगैरा कट जाए तो कपड़े पर ख़ालिस शहद लगा
 कर पट्टी बांध दीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** ख़ून बन्द और ज़ख़्म ठीक हो
 जाएगा।

कांटा निकालने का तरीका

अगर जिस्म में कहीं कांटा पैवस्त हो गया हो और न
 निकलता हो तो अन्डे की सफ़ेदी में थोड़ी सी फटकरी मिला
 कर उस जगह बांध दीजिये। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** थोड़ी देर में निकल
 आएगा।

“मुहम्मद” के चार हुरूफ़ की निश्चत से जल जाने के 4 इलाज

﴿1﴾ चूल्हे पर ख़ूब जोश दिया हुआ नारियल का तेल (काबिले
 बरदाश्त होने के बाद) जले हुए हिस्से पर मलने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**
 फ़ाएदा हो जाएगा ﴿2﴾ बहुत ज़ियादा पक्का केला अच्छी तरह
 मसल कर जली हुई जगह पर चिपका कर पट्टी बांध दीजिये
إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ौरन सुकून मिलेगा ﴿3﴾ गर्म पानी या भाप से जले
 हुए हिस्से पर चावल का आटा छिड़कना मुफ़ीद है ﴿4﴾ जली हुई
 जिल्द पर सफ़ेद दाग़ रह जाने की सूरत में ख़ालिस शहद में रूई
 डबो कर बांधने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** दाग़ निकल जाएगा।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह عز وجل उस पर दस रहमतें भेजता है। (स्)

“रुहमत्” के चार हुरूफ़ की निश्चत से थकन दूर करने के 4 इलाज

﴿1﴾ हज़रते ख़ातूने जन्नत सय्यि-दतुना फ़ाति-मतुज्ज़हरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को महबूबे रब्बे जुल मिनन, सुल्ताने ज़मीनो ज़मन, शहन्शाहे शीरी सुखन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने थकन का येह इलाज इर्शाद फ़रमाया : “सोते वक़्त 33 बार سُبْحَانَ اللَّهِ 33 बार الْحَمْدُ لِلَّهِ 34 बार اللَّهُ أَكْبَرُ पढ़ लिया करो। (مُسْلِم ص ١٤٦٠ حديث ٢٧٢٨) ﴿2﴾ يَاقُدُّوسُ का जो कोई (चलते फिरते उठते बैठते) विर्द करता रहेगा إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ थकन से महफूज़ रहेगा ﴿3﴾ लीमूं का शरबत शकर डाल कर पीने से भी थकन दूर हो जाती है ﴿4﴾ दो बड़े चमचे ख़ालिस शहद एक गिलास पानी में मिला कर पी लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ थकन दूर हो जाएगी।

बीमारियों से हिफ़ाज़त के लिये.....

पुरानी ज़नानी बीमारियों से नजात और आयन्दा इन से तहफ़फ़ुज़ात के लिये इस्लामी बहनें येह चीज़ें ब कसरत इस्ति'माल करें ﴿1﴾ चुकन्दर ﴿2﴾ पत्ते वाली सब्ज़ियां ﴿3﴾ साग ﴿4﴾ सोयाबीन ﴿5﴾ चोलाई का साग ﴿6﴾ सरसों का साग ﴿7﴾ कढ़ी पत्ता मरीज़ ग़ैर मरीज़ सभी इस को खा लें, इसे सालन से निकाल कर फेंक न दिया करें ﴿8﴾ हरा धनिया ﴿9﴾ पोदीना ﴿10﴾ काले और सफ़ेद चने ﴿11﴾ दालें ﴿12﴾ बिग़ैर छने आटे की रोटी। (ब्राऊन खुब्ज़ (रोटी) और ब्राऊन ब्रेड (डबल रोटी) के नाम से बिग़ैर छने आटे की रोटियां बेकरी से मिल सकती हैं)

फरमाने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख्स मुझ पर दुरुदे पाक पढ़ना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया। (طبرانی)

हैज़ की ख़राबी के नुक्सानात

हैज़ खुल कर न आने, या तकलीफ़ से आने या बन्द हो जाने से कई किस्म के अमराज़ जनम लेते हैं। म-सलन चक्कर आना, सर का दर्द और खून की ख़राबी के अमराज़ जैसे ख़ारिश, फोड़े फुन्सियां वगैरा।

हैज़ की ख़राबी और डरावने ख़्वाब

हैज़ की ख़राबियों की वजह से मरीज़ा को दूसरी परेशानियों के इलावा डरावने ख़्वाब भी तंग करते हैं, यहां तक कि बा'ज अवकात आमिल “अ-सरात” कह कर मज़ीद ख़ौफ़ ज़दा कर देते हैं ! हालां कि वोह आसेब ज़दा नहीं होती। इस्लामी बहन या इस्लामी भाई को जिस वजह से भी डरावने ख़्वाब आते हो तो रोज़ाना सोते वक़्त **يَا مُتَكَبِّرُ** 21 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़) पढ़ लिया करे। इस अमल की पाबन्दी करने से **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ख़्वाब में नहीं डरेंगे।

क़स्सते हैज़ के दो² इलाज

﴿1﴾ बहुत ज़ियादा खून गिरता हो और चक्कर आते हों तो थोड़े से तुलसी के रस में एक चम्मच शहद मिला कर पीना मुफ़ीद है ﴿2﴾ छ ग्राम धनिया (बीज) आध किलो पानी में ख़ूब पकाइये यहां तक कि पानी आधा रह जाए अब उतार कर एक चम्मच शहद मिला कर नीम गर्म पी लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** जल्द फ़ाएदा हो जाएगा। (मुद्दत 20 दिन)

फरमाने मुस्तफा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِسْلَامُ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरुद पाक न पढ़ा तहकीक वोह बद बख्त हो गया । (अनन)

माहवारी की ख़राबियों के तीन³ इलाज

﴿1﴾ हींग खाने से रेहूम (बच्चादान) सुकड़ता और हैज़ साफ़ आता है ﴿2﴾ 12 ग्राम काले तिल, पाव किलो पानी में ख़ूब जोश दीजिये जब तीन³ हिस्से पानी जल जाए तो उस में कुछ गुड़ डाल कर दोबारा जोश दीजिये (पीने के काबिल हो जाने के बा'द) येह पानी पीने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** माहवारी की तकलीफ़ कम और अय्याम दुरुस्त हो जाएंगे ﴿3﴾ कच्ची पियाज़ खाने से माहवारी साफ़ आती है और दर्द नहीं होता ।

हैज़ बन्द होने के 6 इलाज

﴿1﴾ अगर गर्मी या खुशकी के बाइस हैज़ बन्द हो जाए तो एक कप सोंफ़ के अरक में एक छोटा चम्मच तरबूज के बीज का मर्ज़ और एक चम्मच शहद मिला कर सुब्ह व शाम पियें **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** फ़ाएदा हो जाएगा । पानी ख़ूब कसरत से पियें, हो सके तो रोज़ाना 12 गिलास पी लें ﴿2﴾ 25 ग्राम गुड़ और 25 ग्राम सोंफ़ एक किलो पानी में जोश दीजिये, अन्दाज़न जब एक पियाली रह जाए तो छान कर गर्म गर्म पी लीजिये । ता हुसूले शिफ़ा रोज़ाना सुब्ह व शाम येह इलाज कीजिये ﴿3﴾ हर खाने के साथ लहसन का एक जवा (या'नी लहसन की पोथी की काश, कली) बारीक काट कर निगल लीजिये और बेहतर है कि उबाल कर पी लीजिये । (नमाज़ और ज़िक्रो दुरुद के लिये मुंह ख़ूब साफ़ कीजिये हत्ता कि बदबू ख़त्म हो जाए) ﴿4﴾ तीन अदद छुहारे, मर्ज़े बादाम 10 ग्राम, नारियल 10

फरमाने मुस्तफा ﷺ : جس نے मुझ पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुरुद पाक पढ़ा उसे कियामत के दिन मेरी शफाअत मिलेगी । (بخاری)

ग्राम और किशमिश या'नी खुश्क छोटे अंगूर 20 ग्राम हैज़ के दिनों में रोज़ाना गर्म दूध के साथ इस्ति'माल कीजिये ﴿5﴾ अय्यामे हैज़ से एक हफ़्ता क़ब्ल रोज़ाना दूध के साथ 25 ग्राम सोंफ़ इस्ति'माल कीजिये ﴿6﴾ आलू, मसूर और खुश्क गिज़ाएं माहवारी में रुकावट बनती हैं लिहाज़ा इन अय्याम में इन से परहेज़ कीजिये ।

हैज़ के दर्द का इलाज

25 ग्राम गुड़ और गाजर के बीज 15 ग्राम दो गिलास पानी में उबालिये जब आधा गिलास रह जाए तो छान कर पी लीजिये । अगर हैज़ दर्द से आता हो तो उस के अय्याम में बिगैर दर्द के आने लगेगा । اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

“खा खूढा” के पांच हुरफ़ की निश्चत से बांझ पन के 5 इलाज

﴿1﴾ हर नमाज़ के बा'द दोनों मियां बीवी (अव्वल आख़िर एक बार दुरुद शरीफ़ के साथ) कुरआने करीम में वारिद येह दुआए इब्राहीम रबِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿١﴾ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٢﴾ (پ ۱۳ ابراهيم ۴۰-۴۱) دینہ

(1) तर-ज-मए कन्जुल ईमान : ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का काइम करने वाला रख और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब ! और हमारी दुआ सुन ले ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसल्मानों को जिस दिन हिसाब काइम होगा ।

फरमाने मुस्ताफा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद शरीफ न पढ़ा उस ने जफ़ा की। (عبدالرزاق)

﴿2﴾ दोनों हर नमाज़ के बा'द (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़)

दुआए ज-करिय्या भी तीन मर्तबा पढ़ लिया करें :

(1) رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ (پ ۱۳ عمران ۳۸)

﴿3﴾ एक अदद जाएफल बारीक पीस कर सात हिस्से कर लीजिये ।

तीन माह तक औरत एक एक हिस्सा रोज़ाना सुब्ह पानी से इस्ति'माल करे । मगर हैज़ के दौरान न ले ﴿4﴾ 12 ग्राम सोंफ़ और 50 ग्राम गुलकन्द रोज़ाना रात को गर्म दूध से खाइये ﴿5﴾ आधा किलो शकर, आधा किलो सोंफ़, 250 ग्राम मग़जे बादाम, आधा किलो देसी घी । सोंफ़ को बारीक पीस कर गर्म घी में मिला दीजिये नीज़ शकर डाल दीजिये फिर चूल्हे से उतार कर कूटे हुए बादाम ऊपर डाल दीजिये ।

तरकीबे इस्ति'माल : जिस दिन माहवारी शुरूअ हो उस दिन से मियां बीवी दोनों तीस तीस ग्राम सुब्ह व शाम दूध के साथ इस्ति'माल करना शुरूअ कर दें । (मुद्दे इलाज कम अज़ कम 92 दिन)

हामिला की तक्वालीफ़ के 6 इलाज

﴿1﴾ देसी घी में भुनी हुई हींग देसी घी के साथ खाने से ददे जिह और चक्कर में फ़ाएदा होता है ﴿2﴾ अगर हामिला को भूक न लगती हो तो दो चम्मच अदरक के रस में सुपारी जितना गुड़ और पाव चम्मच अजमा का चूरन मिला कर सुब्ह व शाम इस्ति'माल करने से भूक ख़ूब लगती है ﴿3﴾ दौराने हम्ल बुख़ार और विलादत के

لَدِينَهُ

(1) तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी औलाद, बेशक तू ही दुआ सुनने वाला ।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुझ पर रोने जुमुआ दुरुद शरीफ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शफाअत करूंगा। (क़ुरआन)

बा'द दर्दे कमर हो तो आधा चम्मच पिसी हुई सूंठ, आधा चम्मच अजमा और आधा चम्मच देसी घी मिला कर सुब् व शाम खिलाइये।
 4 आराम आ जाएगा 4 हामिला रोज़ाना माल्टा और सिर्फ़ एक अदद छोटा सेब खाए, अगर मजबूरी हो तो तब भी आयरन की गोलियां कम से कम इस्ति'माल करे। 5 हर किस्म की बीमारी से हिफ़ाज़त होगी और बच्चा ख़ूब सूरत होगा। सेब और आयरन की गोलियां ज़ियादा खाने से बच्चा काला पैदा हो सकता है 5 कै, मतली, बद हज़्मी, गेस से पेट फूलना, बलग़म, पेट का दर्द और हामिला की दीगर तकालीफ़ में अजमा का चूरन आधा चम्मच नीम गर्म पानी के साथ सुब् व शाम इस्ति'माल करना बहुत मुफ़ीद है 6 तीन ग्राम पिसा हुवा धनिया और 12 ग्राम शकर को चावल के धोवन (या'नी चावल का धोया हुवा पानी) के साथ हामिला इस्ति'माल करे तो कै में इफ़ाका (कमी, फ़ाएदा) होता है।

हसीन व अक्ल मन्द औलाद के लिये

हामिला अगर ब कसरत ख़रबूज़ा खाए तो औलाद हसीन और सिद्दहत मन्द पैदा होगी 1 और अगर हामिला "लौबिया" (जो कि एक मशहूर सब्ज़ी है) कसरत से खाए तो औलाद अक्ल मन्द पैदा हो। 2

अय्यामे हम्ल के लिये बेहतरीन अमल

हम्ल में किसी किस्म की भी तकलीफ़ हो उस के लिये नीज़ वज़ू हम्ल (या'नी विलादत) में आसानी की खातिर सूरए मरयम

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुझ पर दुरुदे पाक की कसरत करो बेशक यह तुम्हारे लिये त्हास्त (बिस्मिल) है।

(पारह : 15) का विर्द बेहद मुफीद है। हामिला रोज़ पढ़ कर अपने ऊपर दम कर लिया करे या कोई दूसरा पढ़ कर दम कर दे। रोज़ाना न पढ़ सके तो जब दर्द की शिद्दत हो या बच्चा पेट में टेढ़ा हो जाए तो पढ़ कर दम कर लिया करे। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** इस की ब-र-कतें ख़ूब ज़ाहिर होंगी।

हम्ल में ताखीर

अगर हम्ल में मल्लूबा दर्द शुरू होने में ताखीर हो जाए तो बहुत पुराना गुड़ 30 या 40 ग्राम ले कर 100 ग्राम पानी में गर्म कीजिये, जब गुड़ पिघल जाए तो “सुहागा” और “फूली हुई फिटकरी” दो ग्राम मिला कर पिलाने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** आसानी से विलादत हो जाएगी।

अगर पेट में बच्चा टेढ़ा हो गया तो.....

सू-रतुल इन्शिकाक की इब्तिदाई पांच आयात तीन बार पढ़े। (अव्वल व आखिर तीन मरतबा दुरुद शरीफ़ पढ़े) आयतों के शुरू में हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ़ ले। पढ़ कर पानी पर दम कर के पी ले। रोज़ाना येह अमल करती रहे। वक़्तन फ़ वक़्तन इन आयात का विर्द करती रहे। दूसरा कोई भी दम कर के दे सकता है। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बच्चा सीधा हो जाएगा। दर्दे ज़िह के लिये भी येह अमल मुफीद है।

सफ़ेद पानी

﴿1﴾ तीन तीन ग्राम जीरा और शकर को पीस कर मिला लीजिये। इस चूरन को मुनासिब मिक्दार में चावल के धोवन में मिला

फरमाने मुस्ताफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुझ पर दुरूद पढ़ो कि तुम्हारा दुरूद मुझ तक पहुंचता है। (طبرانی)

कर पीने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सफ़ेद पानी गिरना बन्द हो जाएगा (2)

6 ग्राम ख़ालिस घी और एक पक्का केला साथ खाने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** पानी गिरना बन्द होगा।

**“या फ़ातिमा” के शात हुस्नफ़ की निश्चत से
हमल की हिफ़ाज़त के 7 इलाज**

﴿1﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ (ए'राब लगाने की हाज़त नहीं अलबत्ता दोनों जगह

● के दाएरे खुले रखिये) किसी कागज़ पर 55 बार लिख कर (या लिखवा कर) हस्बे ज़रूरत ता'वीज़ की तरह तह कर के मोमजामा या प्लास्टिक कोटिंग करवा कर कपड़े या रेग़ज़ीन या चमड़े में सी कर **हमिला** गले में पहन या बाजू में बांध ले। **इन् श़ा'अल्लाह** की भी हिफ़ाज़त होगी और **बच्चा** भी बला व आफ़त से सलामत रहेगा।

अगर 55 बार (अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़ के साथ) पढ़ कर पानी पर दम कर के रख लें और पैदा होते ही **बच्चे के मुंह** पर लगा दें तो **इन् श़ा'अल्लाह** बच्चा ज़िहीन होगा और बच्चों को होने वाली बीमारियों से भी महफूज़ रहेगा। अगर येही पढ़ कर ज़ैत (या'नी ज़ैतून शरीफ़ के तेल) पर दम कर के **बच्चे के जिस्म** पर नर्मी के साथ मल दिया जाए तो बेहद मुफ़ीद है। **इन् श़ा'अल्लाह** कीड़े मकोड़े और दीगर मूज़ी जानवर बच्चे से दूर रहेंगे। इस तरह का पढ़ा हुवा ज़ैत बड़ों के **जिस्मानी दर्दों** में मालिश के लिये भी निहायत कारआमद है (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अव्वल, स. 995) ﴿2﴾ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ (बिग़ैर ए'राब मगर दोनों जगह ● के दाएरे खुले हों) किसी रिक्वाबी

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दुरुदे पाक पढ़ा अल्लाह ﷻ उस पर सो रहमते नाज़िल फ़रमाता है। (टिप्पणी)

(या कागज़) पर 11 बार लिख कर धो कर औरत को पिला दीजिये।

हम्ल की हिफ़ाज़त होगी। जिस औरत को दूध न आता

हो या कम आता हो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** उस के लिये भी येह अमल मुफ़ीद

है। चाहें तो एक ही दिन पिलाएं या कई रोज़ तक रोज़ाना ही लिख

कर पिलाएं हर तरह से इख़्तियार है **﴿3﴾ يَا حَتَّىٰ يَا قَيُّوْمُ** 111 बार

किसी कागज़ पर लिख कर **हामिला** के पेट पर बांध दीजिये और

विलादत के वक़्त तक बांधे रहिये (ज़रूरतन कुछ देर के लिये खोलने

में हरज नहीं) **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** हम्ल भी महफूज़ रहेगा और **बच्चा** भी

सिद्दहत मन्द पैदा होगा। (फ़ैज़ाने सुन्नत, जिल्द अब्बल, स. 1296) **﴿4﴾**

हिफ़ाज़ते **हम्ल** के लिये शुरूए हम्ल से ले कर बच्चे का दूध छुड़ाने

तक रोज़ाना एक बार **सूरए वशम्मस** (पारह : 30) पढ़े **﴿5﴾ हम्ल**

जाएअ होने के ख़तरे की सूरत में रोज़ाना बा'दे नमाज़े फ़ज़्र शोहर

हामिला ज़ौजा के पेट पर शहादत की उंगली रख कर दस बार दाएरा

बनाए और हर बार उंगली घुमाते हुए **يَا مُبْدِئُ** पढ़े **﴿6﴾ يَا رَقِيبُ**

सात बार रोज़ाना पांचों नमाज़ों के बा'द अपने पेट पर हाथ रख कर

हामिला पढ़े **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बच्चा जाएअ न होगा **﴿7﴾** जिस औरत का

हम्ल गिर जाता हो उसे चाहिये कि आगाज़ से ले कर आख़िरी दिन तक

रोज़ाना सुब्ह खुश्क धनिया 21 दाने और शाम को काला ज़ीरा दो

चुटकियां ठण्डे पानी के साथ निगल लिया करे। **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ**

मुक़र्ररा वक़्त पर तन्दुरुस्त बच्चे की विलादत हो जाएगी।

फरमाने मुस्तफा ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْإِسْلَامُ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पड़े तो वोह लोगों में से कन्जूस तरीन शख्स है। (रज़िज़)

लीकोरिया का इलाज

﴿1﴾ नाश्ते के बा'द तीन ख़ुश्क अन्जीर खाइये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ फ़ाएदा होगा ।

इर्कुन्निशा के दो² इलाज

﴿2﴾ रोज़ाना दर्द के मक़ाम पर हाथ रख कर अव्वल आख़िर दुरुद शरीफ़ सू-रतुल फ़ातिहा एक बार और सात मर्तबा येह दुआ पढ़ कर दम कर दीजिये : اَللّٰهُمَّ اَذْهَبْ عَنِّيْ سُوْءَ مَا اَجِدُ (ऐ अब्बाह मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा कोई पढ़ कर दम करे तो मुझ से मरज़ दूर फ़रमा दे) अगर दूसरा कोई पढ़ कर दम करे तो عَنِّي की जगह मर्द के लिये (1) عَنُّهُ और औरत के लिये (2) عَنِّهَا कहे । (मुदत : ता हुसूले शिफ़ा) ﴿3﴾ يَامُحْيِي सात बार पढ़ कर गेस हो या पीठ या पेट में तक्लीफ़ या इर्कुन्निशा या किसी भी जगह दर्द हो या किसी उज़्ब के ज़ाएअ हो जाने का ख़ौफ़ हो, अपने ऊपर दम कर दीजिये । (मुदत : ता हुसूले शिफ़ा)

देसी मुर्गी के फ़वाइद

देसी मुर्गी का गोश्त पेट के दर्द के लिये मुफ़ीद है, इस से कुव्वते हाफ़िज़ा भी बढ़ती है । आज कल मुजरिमाना ज़ेह्न के लोग छोटी छोटी फ़ार्मी मुर्ग़ियों और फ़ार्मी मुर्गी के अन्डों को रंग लगा कर देसी की तरह बना देते हैं । देसी मुर्गी की एक पहचान येह भी है कि उस का पेट क़दरे पतला होता है और वज़न भी बहुत ज़ियादा नहीं होता ।

وَاللّٰهُ وَرَسُولُهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

لَدَيْنَه

(1), (2) या'नी इस से

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : उस शख्स की नाक खाक आलूद हो जिस के पास मेरा ज़िक्र हो और वोह मुझ पर दुरूदे पाक न पड़े। (१८)

घरेलू झगड़ों का इलाज

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ फ़रमाते हैं : घर में दाख़िल होते वक़्त

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ़ कर पहले सीधा क़दम दरवाज़े में दाख़िल करना चाहिये फिर घर वालों को सलाम करते हुए घर के अन्दर आएँ।

अगर घर में कोई न हो तो اَلْسَلَامُ عَلَیْكَ اَیُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَکَاتُہُ कहें। बा'ज़ बुजुर्गों को देखा गया है कि दिन की इब्तिदा में घर में दाख़िल होते वक़्त بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ और هُوَ اللّٰهُ قُل शरीफ़ पढ़ लेते हैं कि इस से घर में इत्तिफ़ाक़ भी रहता है (या'नी झगड़ा नहीं होता) और रोज़ी में ब-र-कत भी। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 9)

या इलाही हर घड़ी शैतान से महफूज़ रख

दे जगह फिरदौस में नीरान¹ से महफूज़ रख

क्लॉंजी के 19 म-दनी फूल

﴿1﴾ फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : काला दाना

(क्लॉंजी) में मौत के सिवा हर बीमारी की शिफ़ा है।

(بخاری ج ۴ ص ۱۹ حدیث ۵۶۸۷)

मुफ़स्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ फ़रमाते हैं : हर मरज़

से मुराद हर बल्ग़मी और रुतूबत के अमराज़ हैं क्यूं कि क्लॉंजी

لَدَیْنِہ

(1) नीरान या'नी दोज़ख़

फरमाने मुस्तफा عَلَيْهِ السَّلَام : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढ़ा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ होंगे। (ترمذی)

गर्म और खुश्क होती है लिहाजा मरतूब और सर्दी की बीमारियों में मुफीद होगी। (मिरआत शहें मिश्कात, जि. 6, स. 216) ﴿2﴾ रोज़ाना नहार मुंह चुटकी भर कलोजी तक़रीबन 12 क़तरे अस्ली शहद में मिला कर

إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ पढ़ कर शहादत की उंगली से चाटिये

बहुत सी बीमारियां ख़त्म हो जाएंगी ﴿3﴾ कलोजी को जला कर खाना बवासीर को दूर करता है ﴿4﴾ कलोजी खाने से पेट के कीड़े मर जाते हैं ﴿5﴾ कलोजी को तेल में जोश दे कर सर में वोह तेल लगाने से दर्दे सर, नज़ला और जुकाम में फ़ाएदा होता है ﴿6﴾ अगर खुश्की की वजह से सर पर पपड़ियां सी बन गई हों तो कलोजी खाने से ख़त्म हो जाती हैं ﴿7﴾ कलोजी को पानी में जोश दे कर गरारे करने से दांतों का दर्द दूर होता है ﴿8﴾ पेशाब न आने की सूरत में कलोजी के खाने से पेशाब खुल कर आ जाता है ﴿9﴾ कलोजी में सिक़ा मिला कर खाने से बल्ग़मी वरम दूर होता है ﴿10﴾ जैतून के तेल में कलोजी डाल कर सूंघने से आंखों का दर्द जाता रहता है ﴿11﴾ कलोजी बल्ग़मी बुख़ार के लिये मुफीद है ﴿12﴾ कलोजी हैज़ की रुकावट को दूर करती है ﴿13﴾ कलोजी सिक़े में मिला कर बरस (कोढ़) पर लगाने से फ़ाएदा होता है ﴿14﴾ फ़ौते की सूजन में कलोजी पीस कर सिक़े में मिला कर लगाएं तो फ़ाएदा होता है ﴿15﴾ कलोजी पीस कर मेहंदी में मिला कर सर में लगाने से सर के बाल झड़ना बन्द होते हैं ﴿16﴾ कलोजी का इस्ति'माल सीने के दर्द और खांसी में मुफीद है

फरमाने मुस्तफा ﷺ : मुझ पर दुरुद शरीफ पढ़ो अल्लाह عز وجل तुम पर रहमत भेजेगा। (अबुनूरन)

﴿17﴾ घर में कलोजी की धूनी देने से खटमल और मच्छर का खातिमा होता है ﴿18﴾ दिमाग की बीमारी हो तो कलोजी के इक्कीस दाने कपड़े की पोटली में बांध कर पानी में उबालिये। पहले दिन सीधे नथने में दो क़तरे और उल्टे नथने में एक क़तरा। दूसरे दिन उल्टे नथने में दो क़तरे और सीधे नथने में एक क़तरा डालिये। **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** तीन दिन में शिफा हासिल हो जाएगी ﴿19﴾ कलोजी शहद के साथ खाने से (गुर्दे मसाने की) पथरी निकल जाती है।

अन्जीर के 33 म-दनी फूल

﴿1﴾ अन्जीर में दीगर तमाम फलों के मुकाबले में बेहतर ग़िज़ाइयत है। ﴿2﴾ अन्जीर बवासीर को ख़त्म कर देता और जोड़ों के दर्द के लिये मुफीद है ﴿3﴾ अन्जीर नहार मुंह खाने के अजीबो ग़रीब फ़वाइद हैं ﴿4﴾ खुश्क अन्जीर सख़्त हों तो उन को कमो बेश 25 मिनट पानी में भिगो दीजिये और धो कर छाउं में सुखा दीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** नर्म हो जाएंगे। सब्ज़ियां, फल, खुश्क मेवे वगैरा मुम्किना सूरत में धो कर ही इस्ति'माल किये जाएं ताकि जरासीम कुश अदविय्या का असर धुल जाए ﴿5﴾ अगर ख़ूनी बवासीर हो तो पांच अदद अन्जीर टुकड़े कर के पाव भर दूध में उबाल कर ठन्डा कर के रोज़ाना सोने से पहले खा लीजिये। **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** थोड़े ही दिनों में खून बन्द हो जाएगा। येह अमल मुस्तक़िल जारी रखें तो बहुत अच्छा है ﴿6﴾ खुश्क बवासीर के सबब बहुत दर्द हो तो पानी में एक चम्मच शहद मिला कर उस के साथ नहार मुंह या'नी नाश्ते से क़ब्ल और अगर रोज़ा हो तो इफ़्तार में ख़ाली पेट पांच अदद अन्जीर रोज़ाना खाइये ﴿7﴾ ताज़ा

फरमाने मुस्तफा ﷺ : मुझ पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे गुनाहों के लिये मग़फ़रत है। (जातिम्)

अन्जीर का रस निचोड़ कर मस्सों को लगाया जाए तो मस्से झड़ जाने की उम्मीद है ﴿8﴾ जिन को बवासीर की तकलीफ़ कम मगर बद हज़्मी ज़ियादा हो वोह हर खाने से क़बल तीन अदद अन्जीर खा लें ﴿9﴾ जिन के पेट में बोझ हो जाता हो वोह हर बार खाना खाने के बाद तीन अदद अन्जीर खा लें ﴿10﴾ अन्जीर मोटे पेट को छोटा करता और मोटापा दूर करता है ﴿11﴾ कमर के दर्द वाले रोज़ाना सात अदद अन्जीर खा लिया करें ﴿12﴾ जिस को कब्ज़ रहता हो वोह रोज़ाना नहार मुंह 5 अदद अन्जीर खा ले ﴿13﴾ अन्जीर खाने से हैज़ के खून में इज़ाफ़ा और दूध में ज़ियादती होती है ﴿14﴾ अन्जीर में खांसी और दमे का इलाज है ﴿15﴾ अन्जीर चेहरे का रंग निखारने के लिये मुफ़ीद है ﴿16﴾ अन्जीर पुरानी बल्ग़मी खांसी के लिये नफ़अ बख़्श है ﴿17﴾ अन्जीर बल्ग़म को पतला कर के निकाल देता है ﴿18﴾ अन्जीर प्यास बुझाता है ﴿19﴾ अन्जीर का गूदा बुख़ार के दौरान मरीज़ के मुंह को खुशक नहीं होने देता ﴿20﴾ मेथी के बीज और अन्जीर पानी में पका कर ख़ूब गाढ़ा कर के उस में शहद मिला कर खाने से खांसी की शिद्दत में राहत होती है ﴿21﴾ अन्जीर गुर्दा और मसाना (या'नी पेशाब की थेली) की सोज़िश के लिये मुफ़ीद है ﴿22﴾ सफ़ेद अन्जीर सब से बेहतरीन माना जाता है। येह गुर्दा, मसाना और पित्ते की पथरी को हल कर के निकाल देता है ﴿23﴾ अगर किसी के गुर्दे फ़ैल हों और वोह तवील मुद्दत तक अन्जीर इस्ति'माल करे तो بِفَضْلِهِ تَعَالَى उस को सिहहत मिल सकती है ﴿24﴾ अन्जीर पेट की रीह को बाहर निकालता है ﴿25﴾ अन्जीर और बादाम मिला कर खाएं तो पेट की अक्सर बीमारियां दूर भागती हैं ﴿26﴾ अन्जीर हल्क की सोज़िश, सीने के बोझ और फेफड़ों

फरमाने मुस्तफा ﷺ : जो मुझ पर एक दुरुद शरीफ पढ़ता है अल्लाह ﷻ उस के लिये एक कौरात अन्न लिखता और कौरात उहुद पहाड़ जितना है। (मैत्रा/रान)

की सूजन में फाएदा करता है ﴿27﴾ अन्जीर जिगर और तिल्ली को साफ करता है ﴿28﴾ अन्जीर जिगर और पित्ते के सुदे या'नी गन्दी गांठों को निकालता है ﴿29﴾ अन्जीर छाती की पुरानी सोजिश के लिये नफ़अ बख़्श है ﴿30﴾ अन्जीर को जोश दिये हुए पानी के गरारे करने से मसूड़ों और गले की सोजिश कम होती है ﴿31﴾ खुश्क अन्जीर को जला कर उस की राख से मन्जन करने से दांत का मैल और धब्बे दूर होते हैं ﴿32﴾ जब शरीफ की रोटी और अन्जीर मिला कर खाना मु-तअद्द दिमागी अमराज का इलाज है ﴿33﴾ अन्जीर ब्लड प्रेशर (B.P.) और कोलेस्ट्रॉल (CHOLESTROL) के मरीज के लिये मुफ़ेद है।

100 एक चुप सो सुख

तालिबे गुम मदीना व
बकीअ व मफ़्फ़त व
बे हिसाब जन्तुल फिरदौस
में आक़ का पड़ोस



29 रबीउन्नूर शरीफ 1433 हि.

22-2-2012

माخذ ومراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالفکر بیروت	مجمع الزوائد	مکتبۃ المدینۃ باب المدینۃ کراچی	قرآن پاک
دار احیاء التراث العربی بیروت	شکل ترمذی	دار احیاء التراث العربی بیروت	تفسیر کبیر
دارالفکر بیروت	مرقاۃ المفاتیح	مکتبۃ اسلامیہ مرکز الادبیاء لاہور	تفسیر نعیمی
فیضان القرآن پبلی کیشنز مرکز الادبیاء لاہور	مرآۃ المناجیح	دارالکتب العلمیۃ بیروت	صحیح بخاری
دار المعرفۃ بیروت	رد المحتار	دار ابن حزم بیروت	صحیح مسلم
رضا فاؤنڈیشن مرکز الادبیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	دار احیاء التراث العربی بیروت	سنن ابوداؤد
نوری کتب خانہ مرکز الادبیاء لاہور	فتاویٰ افریقہ	دارالفکر بیروت	سنن ترمذی
دارالکتب العلمیۃ بیروت	قوت القلوب	دار المعرفۃ بیروت	سنن ابن ماجہ
دار صادر بیروت	احیاء العلوم	دارالفکر بیروت	مشہد امام احمد
دارالکتب العلمیۃ بیروت	پنجۃ الاسرار	دارالفکر بیروت	معجم الاوسط
دارالکتب العلمیۃ بیروت	حیۃ النعمان الکبریٰ	دار المعرفۃ بیروت	مشہدک
مکتبۃ العصریۃ بیروت	حصن حصین	دارالکتب العلمیۃ بیروت	الترغیب والترہیب
مکتبۃ المدینۃ باب المدینۃ کراچی	الوظیفۃ الکبریٰ	بیروت	عمل الیوم والایۃ
مکتبۃ المدینۃ باب المدینۃ کراچی	فیضان سنت جلد اول	دارالکتب العلمیۃ بیروت	جامع صغیر

[illegible]